SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

58 वाँ संस्करण

कलिका

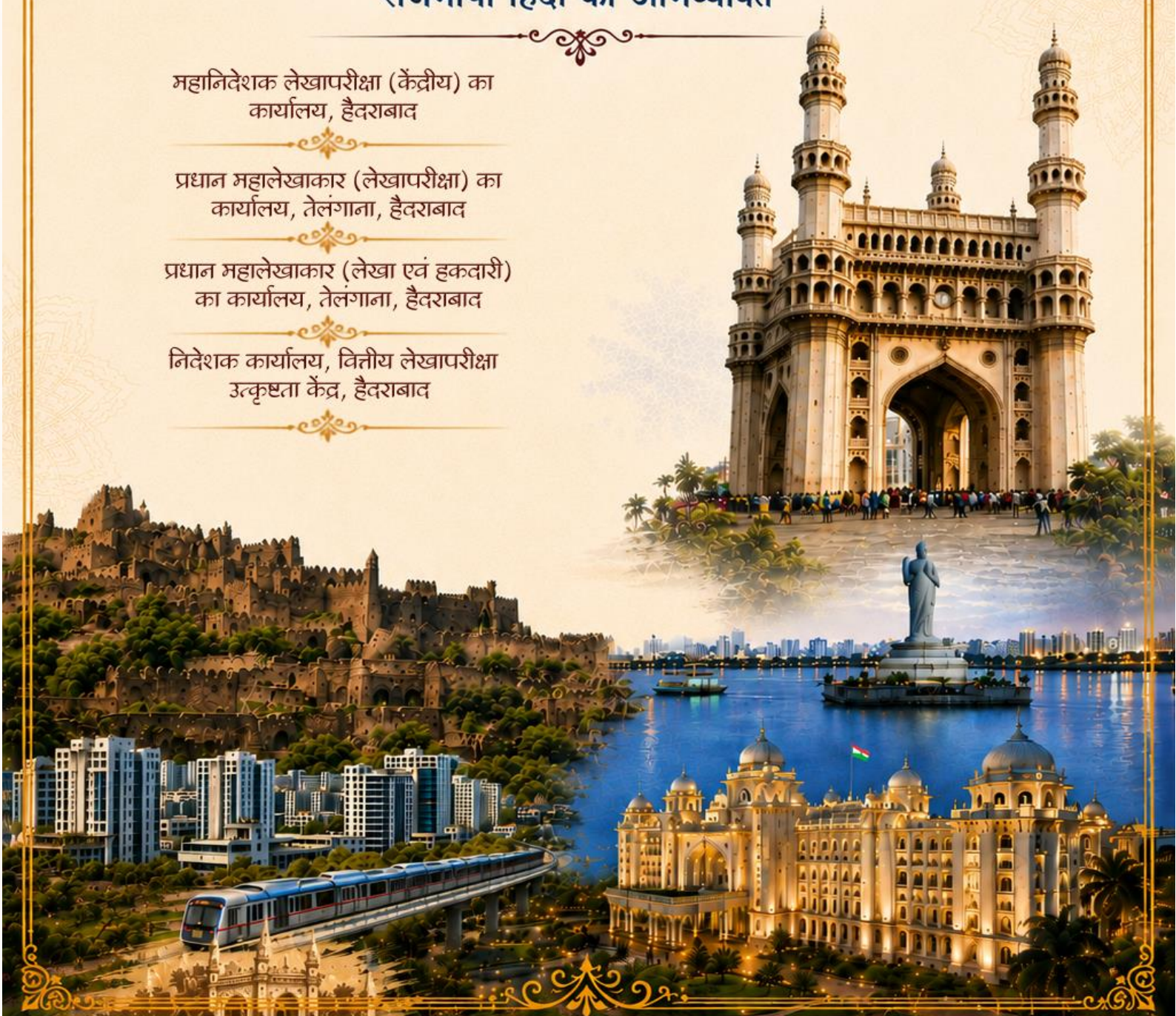
राजभाषा हिंदी की अभिव्यक्ति

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का
कार्यालय, हैदराबाद

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का
कार्यालय, तेलंगाना, हैदराबाद

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
का कार्यालय, तेलंगाना, हैदराबाद

निदेशक कार्यालय, वित्तीय लेखापरीक्षा
उत्कृष्टता केंद्र, हैदराबाद



कलिका परिवार

मुख्य संरक्षक

सुश्री हेमा मुनिवेंकटप्पा, महानिदेशक

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, (केंद्रीय), हैदराबाद

संरक्षक

सुश्री वी. अन्नपूर्णा, उप निदेशक (प्रशासन)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, (केंद्रीय), हैदराबाद

मार्गदर्शक

श्री एम. कोदंडाराम, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

संपादक

श्री लोकेश चंद्र लाल, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सह संपादक

सुश्री मैशर जहाँ, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री विशाल साव, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री रोहन कुमार, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सहयोग

डॉ. कल्पना वर्मा, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्रीमती किरणदीप कौर, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्रीमती पूजा कुमारी साव, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्रीमती शालिनी केशरी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्रीमती दीपशिखा सिंह, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सुश्री जागृति, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सुश्री नंदिनी साव, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

: अनुक्रमणिका :

1. मुख्य संरक्षक की कलम से....
2. प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तेलंगाना, हैदराबाद का संदेश
3. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), तेलंगाना, हैदराबाद का संदेश
4. निदेशक, निदेशक कार्यालय वित्तीय लेखापरीक्षा उत्कृष्टता केंद्र, हैदराबाद का संदेश
5. उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), तेलंगाना, हैदराबाद का संदेश
6. उप निदेशक (प्रशासन), कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद का संदेश
7. उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तेलंगाना, हैदराबाद का संदेश
8. संपादकीय

क्र. सं.	रचनाकार का नाम	पदनाम	रचना का नाम	पृष्ठ सं.
1.	श्री मुरारी लाल स्वामी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	योग: भीतर की यात्रा का विज्ञान	13-16
2.	श्री भारत शर्मा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	पाँच सितारों का सच	17-18
3.	श्री एम. कोदंडाराम	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	मैं क्या लिखूँ	19-20
4.	श्री एन. श्रीनिवास रेड्डी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	साइबर धोखाधड़ी और लेखापरीक्षा की भूमिका	21-22
5.	श्री गौस खान सुबेदार	लेखापरीक्षक	जब शाम ढले	23
6.	सुश्री मैशर जहां	कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	आख़िरी चाबी	24-27
7.	श्री विजय कुमार शुक्ल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	मुंबई : प्रशिक्षण, ज्ञान और अनुभव	28-29
8.	श्री रोहन कुमार	कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	कर्मभूमि से जन्मभूमि: एक अविस्मरणीय एकल सड़क यात्रा	30-33
9.	श्री के. वासु मित्रा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	सफल जीवन के आठ मूल मंत्र	34-36
10.	श्री लोकेश चंद्र लाल	वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी	कार्यालय और राजभाषा	37-39
11.	सुश्री मन्जू पन्थी	लेखापरीक्षक	तो बात कुछ ऐसी है	40-41
12.	श्री विशाल साव	कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	दोस्तों के साथ मेरी शिलांग यात्रा	42-44
13.	श्री अनिल कुमार-I	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	अपने लिए एक दिन	45-48
14.	श्रीमती अनीता	लेखाकार	मेरा हरियाणा	49-51
15.	श्री के. एन. दीपक राज	सहायक लेखा अधिकारी	मानवीय रिश्ते और व्यावसायिक जीवन	52
16.	श्रीमती पूजा कुमारी साव	कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	नटखट बच्चा	53
17.	श्री देबाशीष दत्ता	लेखाकार	आज की सच्चाई : वक्त नहीं	54
18.	श्रीमती डॉ कल्पना वर्मा	वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी	मेरी वरंगल यात्रा	55-57
19.	श्रीमती ए. एन. राधारमणी	पर्यवेक्षक	प्रार्थना की महिमा	58
20.	श्रीमती हीना अज़ीज़	लेखाकार	जमाई षष्ठी : एक दिन का राजा	59-60
21.	सुश्री हेज़ल वैष्णव, पुत्री श्री मिलिंद वैष्णव	सहायक लेखा अधिकारी	घुटना टूटा था, हौसला नहीं	61

22.	श्री विनय कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	कृषि उत्पादन में पर्यावरण का योगदान	**62-64**
23.	श्री मनीष कुमार गरजे	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	डेटा-आधारित ऑडिट	**65**
24.	सुश्री नंदिनी साव	कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	वो ज़रा-सा लाल रंग	**66**
25.	श्री महाराज गुप्ता	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	योग: मेरे जीवन का संबल	**67-70**
26.	श्री शुभम दीक्षित	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	सच्ची सफलता	**71-72**
27.	श्री अरुप विश्वास	सहायक पर्यवेक्षक	समय का चक्र	**73-74**
28.	श्री जानकी नंदन	लेखापरीक्षक	मायूसी का देवता (भाग-1)	**75-77**
29.	सुश्री श्री विद्या	डाटा एंट्री ऑपरेटर	माँ	**78**
30.	कार्यालयीन गतिविधियां			**79-89**
31.	सेवानिवृत्त अधिकारी/ कर्मचारी			**90-91**

: अस्वीकरण :

रचनाओं में अभिव्यक्त विचार व भावनाएँ रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। उनके विचारों से कलिका परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस प्रकाशन में उपयोग किए गए सभी चित्रों और जानकारियों के स्त्रोत का हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।



मुख्य संरक्षक की कलम से....



सुश्री हेमा मुनिवेंकटप्पा
महानिदेशक

प्रिय पाठकों,

मुझे अपने विभाग की राजभाषा पत्रिका 'कलिका' का यह 58वां अंक आप सभी के हाथों में सौंपते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। 'कलिका' मात्र एक प्रकाशन नहीं है, बल्कि यह हमारे कार्यालय की रचनात्मक ऊर्जा, विचारों की अभिव्यक्ति और हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का दर्पण है।

आज के प्रशासनिक परिवेश में हिंदी केवल कामकाज की एक भाषा नहीं, बल्कि जनसामान्य तक अपनी बात पहुँचाने और संवेदनशीलता से जुड़ने का सबसे सशक्त माध्यम है। जब हम अपनी दिनचर्या और कार्यालयीन कार्यों में सहजता के साथ हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करते हैं, तो प्रशासनिक दक्षता स्वतः बढ़ती है और संवाद अधिक प्रभावशाली बनता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम इसे एक औपचारिकता या दायित्व न मानकर अपनी कार्य-संस्कृति का स्वाभाविक हिस्सा बनाएं।

'कलिका' का यह अंक इस दिशा में एक सार्थक कदम है। इसमें विभागीय गतिविधियों के साथ-साथ समसामयिक विषयों पर लेख, प्रेरक आलेख और हमारे अधिकारियों व कर्मचारियों की मौलिक साहित्यिक रचनाओं को स्थान दिया गया है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह अंक न केवल आपका मार्गदर्शन करेगा, बल्कि आपको कुछ नया सोचने और रचने के लिए भी प्रेरित करेगा।

इस पत्रिका को मूर्त रूप देने में हमारे जिन अधिकारियों और रचनाकारों ने अपनी बहुमूल्य रचनाएँ और सुझाव दिए हैं, मैं उन सबका हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। साथ ही, संपादक मंडल के सभी सदस्यों के अथक परिश्रम और उत्कृष्ट टीम-वर्क की सराहना करती हूँ, जिनके बिना इस अंक का प्रकाशन संभव नहीं था।

आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हिंदी को केवल विशेष अवसरों पर नहीं, बल्कि अपने दैनिक कार्य-व्यवहार का मुख्य माध्यम बनाएंगे। इससे न केवल हमारी राजभाषा समृद्ध होगी, बल्कि हमारा कार्यालय भी प्रशासनिक उत्कृष्टता के एक नए मानक स्थापित करेगा।

पढ़िए, साझा कीजिए और अपने अमूल्य विचारों से हमें निरंतर अवगत कराते रहिए।

शुभकामनाओं सहित!

(हेमा मुनिवेंकटप्पा)
महानिदेशक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

संदेश



सुश्री चंदा पंडित
प्रधान महालेखाकार

"कलिका" का 58वाँ संस्करण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। किसी भी समाज की सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं बौद्धिक चेतना को सशक्त बनाने में पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। "कलिका" अपने नाम के अनुरूप ज्ञान, सृजनशीलता और नवचेतना का प्रसार करने का सराहनीय कार्य कर रही है। ज्ञान, साहित्य और संस्कृति किसी भी सभ्यता की आत्मा होते हैं। इनकी निरंतरता एवं विकास में साहित्यिक पत्रिकाएँ सेतु का कार्य करती हैं। "कलिका" का यह नवीन अंक उसी ज्ञान-परंपरा के संवहन और संवर्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

राजभाषा हिंदी भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था, सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय एकता की सशक्त अभिव्यक्ति है। यह केवल कार्यालयीन कार्यों के निष्पादन का माध्यम नहीं, बल्कि जनसामान्य और प्रशासन के मध्य प्रभावी संवाद का सेतु भी है। हिंदी का सहज, सरल एवं शुद्ध प्रयोग कार्यकुशलता के साथ-साथ प्रशासनिक पारदर्शिता को भी सुदृढ़ करता है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार, भाषा-संवर्धन तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने का एक सार्थक प्रयास है।

मुझे विश्वास है कि यह संस्करण पाठकों को नवीन दृष्टि प्रदान करेगा तथा लेखकों को सृजन एवं चिंतन के लिए प्रेरित करेगा। मैं "कलिका" पत्रिका के संपादक मंडल, लेखकों तथा सहयोगियों को इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। आशा है कि पत्रिका भविष्य में भी ज्ञान, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखेगी।

(चंदा पंडित)
प्रधान महालेखाकार
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तेलंगाना

संदेश



सुश्री पी. माधवी
प्रधान महालेखाकार

संयुक्त हिंदी पत्रिका 'कलिका' के 58वें अंक के प्रकाशन के शुभ अवसर पर, मैं इसमें योगदान देने वाली सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देती हूँ। पत्रिका की यह अनवरत और गौरवशाली यात्रा हमारे कार्यालय की सांस्कृतिक जीवंतता तथा राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता का जीवंत प्रतीक है।

एक सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था में रचनात्मकता और साहित्य का समावेश अनिवार्य है। 'कलिका' केवल एक पत्रिका नहीं है, बल्कि यह हमारे पूरे कार्यालय परिवार के वैचारिक समन्वय, बौद्धिक कौशल और मौलिक चिंतन को प्रतिबिंबित करने वाला एक दर्पण है। हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपने नियमित शासकीय दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करते हुए भी जिस प्रकार अपनी लेखनी के माध्यम से साहित्य और भाषा को समृद्ध किया है, वह वास्तव में अत्यंत प्रशंसनीय है।

राजभाषा हिंदी को सहजता और गौरव के साथ अपनाने की दिशा में यह पत्रिका सदैव एक उत्प्रेरक रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह 58वाँ अंक भी अपने विविध विषयों, ज्ञानवर्धक लेखों और उत्कृष्ट रचनाओं के माध्यम से पाठकों को प्रेरित करेगा और हमारे साहित्यिक मानकों को एक नई ऊँचाई प्रदान करेगा।

मैं इस सुरुचिपूर्ण प्रकाशन के लिए संपादक मंडल, सभी लेखक-कवियों और सहयोगी टीम को उनके अथक प्रयासों के लिए बधाई देती हूँ तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति और इस अंक की शानदार सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

माधवी

(पी. माधवी)
प्रधान महालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), तेलंगाना

संदेश



डॉ. संजय राव कामिनेनी
निदेशक

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह हमारी संस्कृति, विचारों और संवेदनाओं की आत्मा होती है। हिंदी भाषा इसी आत्मा का जीवंत स्वरूप है, जो हमें हमारी जड़ों से जोड़ते हुए नए विचारों के आकाश की ओर उड़ान भरने की प्रेरणा देती है।

'कलिका' जैसी पत्रिका न केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करती है, बल्कि यह साहित्यिक चेतना को जागृत करने का एक सशक्त माध्यम भी है। यह हमें सोचने, समझने और अपनी भावनाओं को शब्दों में ढालने का साहस देती है। हर एक लेख, कविता और विचार इस बात का प्रमाण है कि हिंदी साहित्य आज भी उतना ही जीवंत और प्रासंगिक है जितना कभी था।

आवश्यक है कि हम हिंदी भाषा के प्रति अपनी संवेदनशीलता को और गहरा करें तथा इसे केवल औपचारिकता तक सीमित न रखकर अपने दैनिक जीवन और कार्य में आत्मसात करें। आइए, हम सभी 'कलिका' के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य के इस सुंदर पुष्प को और अधिक विकसित करें तथा इसकी सुगंध को दूर-दूर तक फैलाएँ।

(संजय राव कामिनेनी)
निदेशक
कार्यालय वित्तीय लेखापरीक्षा उत्कृष्टता केंद्र, हैदराबाद

संदेश



सुश्री सलोनी जैन
उप महालेखाकार (प्रशासन)

संयुक्त हिंदी पत्रिका 'कलिका' के 58वें अंक के अवसर पर मैं कार्यालय परिवार के सभी सदस्यों को अपनी हार्दिक बधाई देती हूँ। प्रशासनिक अनुशासन और नियमों के बीच कार्य करते हुए भी अपने भीतर की रचनात्मक ऊर्जा को जीवंत रखना एक कुशल कार्य-संस्कृति की पहचान है।

यह पत्रिका केवल शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह हमारे प्रशासनिक परिवेश में एक ताज़गी भरे वैचारिक झोंके की तरह है, जो हमें फाइलों और आंकड़ों से परे जाकर सोचने और अपनी अनुभूतियों को साझा करने की प्रेरणा देती है। 'कलिका' ने राजभाषा हिंदी के अनुप्रयोग को एक सहज, व्यावहारिक और आत्मीय रूप देकर हमारे कार्यालयीन वातावरण को और अधिक सकारात्मक व जीवंत बनाया है।

मैं उन सभी सहकर्मियों की सराहना करती हूँ जिन्होंने अपने व्यस्ततम दैनिक दायित्वों के बावजूद इस अंक के लिए अपनी उत्कृष्ट रचनाएँ प्रदान की हैं। साथ ही, इस प्रकाशन को इतने व्यवस्थित और सुरुचिपूर्ण ढंग से आकार देने के लिए राजभाषा अनुभाग और पूरी संपादन टीम विशेष बधाई की पात्र है।

मुझे विश्वास है कि यह 58वाँ अंक भी अपने पाठकों को वैचारिक आनंद प्रदान करेगा। 'कलिका' की इस अनवरत यात्रा और इस अंक की शानदार सफलता के लिए मेरी अनंत शुभकामनाएँ।

(सलोनी जैन)
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), तेलंगाना

संदेश



सुश्री वी. अन्नपूर्णा
उप निदेशक (प्रशासन)

प्रिय पाठकों,

आप सभी को सादर नमस्कार,

हमारे कार्यालय की संयुक्त हिंदी पत्रिका "कलिका" के 58वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर आप सभी से अपने विचार साझा करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। वर्षों से **"कलिका"** हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के संवर्धन, साहित्यिक अभिरुचि के विकास तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने का एक सशक्त माध्यम रही है। यह पत्रिका केवल साहित्यिक रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता, सृजनशीलता और सामूहिक सहभागिता का सजीव प्रतिबिंब है।

हमारी इस पत्रिका का उद्देश्य केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना ही नहीं, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि, आत्मीयता एवं रचनात्मक सोच को निरंतर प्रोत्साहित करना भी है। यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि समय के साथ अनेक पाठक स्वयं लेखक के रूप में अपनी मौलिक रचनाओं के माध्यम से अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का परिचय दे रहे हैं तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसके प्रभावी क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान निभा रहे हैं।

"कलिका" के इस अंक में विविध विषयों पर आधारित मौलिक, ज्ञानवर्धक एवं विचारोत्तेजक रचनाओं को स्थान दिया गया है, ताकि पाठकों को साहित्य के साथ-साथ समसामयिक विषयों, अनुभवों एवं नवीन दृष्टिकोणों से भी परिचित होने का अवसर प्राप्त हो। मुझे विश्वास है कि यह अंक आपकी साहित्यिक अभिरुचि को समृद्ध करने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रति आपके जुड़ाव एवं सम्मान को और अधिक सुदृढ़ करेगा।

आइए, हम सभी मिलकर राजभाषा हिंदी के सम्मान, उसके प्रभावी प्रयोग तथा सतत विकास के लिए अपने प्रयासों को निरंतर आगे बढ़ाएँ। यही हमारी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के सशक्त उपयोग तथा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने की दिशा में हमारा सार्थक योगदान होगा।

आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि एवं उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(वी. अन्नपूर्णा)
उप निदेशक (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

संदेश



श्री अभय अनिल सोनारकर
उप महालेखाकार (प्रशासन)

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यालय की हिंदी पत्रिका "कलिका" के 58वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। पत्रिका में समाविष्ट लेख, कविताएं इत्यादि कार्यालय में हिन्दी के रुझान को दर्शाती है। पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के कार्मिकों को अपनी लेखन प्रतिभा दिखने का अवसर मिलता है। इसके अतिरिक्त, राजभाषा हिन्दी में कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। अपनी रचनाओं के माध्यम से पत्रिका में योगदान देकर कर्मचारियों ने राजभाषा हिंदी के प्रति अपने प्रेम एवं निष्ठा को दर्शाया है।

पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में रुचि को बढ़ाना है एवं कर्मचारियों को प्रोत्साहन देना है। 'कलिका' पत्रिका का हर नवीन अंक इस बात की पुष्टि करता है कि कर्मचारियों राजभाषा हिन्दी के कार्य में रुचि रखते हैं एवं अत्यंत प्रोत्साहित भी रहते हैं।

कलिका पत्रिका के नवीन अंक के प्रकाशन पर सभी रचनाकारों, पाठकों एवं इससे जुड़े सभी कार्मिकों को ढेरों शुभकामनाएं एवं बधाई।

अभय

(अभय अनिल सोनारकर)
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), तेलंगाना

संपादकीय ....



श्री लोकेश चंद्र लाल
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

हिंदी भाषा केवल संवाद का एक माध्यम मात्र नहीं है, बल्कि यह हमारी सभ्यता, संस्कृति और अस्मिता की जीवंत पहचान है। वैश्वीकरण और डिजिटल युग के इस तीव्र दौर में, जहाँ संपूर्ण विश्व एक वैश्विक ग्राम में तब्दील हो चुका है, मातृभाषा का महत्व और उसकी प्रासंगिकता एक बार फिर केंद्र में आ गई है।

'कलिका' पत्रिका के इस अंक के माध्यम से हम अपने पाठकों के समक्ष यह विचार रखने के लिए तत्पर हैं कि आधुनिकता और परंपरा के इस संगम में हिंदी ने अपनी उपयोगिता को कैसे सिद्ध किया है।

एक समय था जब ऐसा माना जाता था कि आधुनिक तकनीक, कंप्यूटर और इंटरनेट की दुनिया में अंग्रेजी का वर्चस्व अनिवार्य है। परंतु आज का परिदृश्य पूर्णतः बदल चुका है। डिजिटल मीडिया, सोशल प्लेटफॉर्म्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस युग में हिंदी ने तकनीक के साथ अभूतपूर्व तालमेल बिठाया है। इंटरनेट पर हिंदी सामग्री की मांग और उपलब्धता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। यह इस बात का प्रमाण है कि हिंदी केवल इतिहास के पन्नों में सिमटी भाषा नहीं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं से परिपूर्ण एक आधुनिक भाषा है।

आज की युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ने के लिए उत्सुक है, बशर्ते उन्हें सही मंच और प्रेरणा मिले। कार्यालय स्तर पर भी हमारा निरंतर यह प्रयास रहता है कि 'कलिका' के पृष्ठों पर ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला और सम-सामयिक विषयों का ऐसा संतुलित मिश्रण प्रस्तुत किया जाए, जो हर आयु वर्ग के पाठक को आकर्षित करे। भाषा का मानकीकरण और उसकी सरलता—यही हमारे संपादन की मूल धुरी है।

आइए, इस अंक के माध्यम से हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम अपने दैनिक जीवन में, अपने कार्यस्थलों पर और अपने विचार-विमर्श में हिंदी का गर्व के साथ प्रयोग करेंगे। भाषा तभी जीवंत रहती है जब उसके बोलने वाले उसे समृद्ध बनाते हैं।

'कलिका' परिवार अपने सभी सम्मानित पाठकों, लेखकों और सहयोगियों का आभारी है, जिनके स्नेह और प्रेरणा से यह पत्रिका निरंतर नए शिखरों को छू रही है। आपके अमूल्य सुझावों का हमें हमेशा स्वागत रहेगा।

"डिजिटल स्क्रीन पर तकनीकी विस्तार, राजभाषा हिंदी से जीवंत हर संचार।"

शुभकामनाओं सहित,

(लोकेश चंद्र लाल)
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

01

योगः भीतर की यात्रा का विज्ञान



श्री मुरारी लाल स्वामी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),

"यदि मनुष्य अपने भीतर व्यवस्था स्थापित कर ले, तो बाहर की दुनिया उसके लिए बोझ नहीं, बल्कि एक अवसर बन जाती है।"

आज का युग विज्ञान, तकनीक और अभूतपूर्व सुविधाओं का युग है। कुछ ही सेकंड में हम दुनिया के किसी भी व्यक्ति से जुड़ सकते हैं। हमारे हाथों में ऐसे स्मार्टफोन हैं जिनकी क्षमता कुछ दशक पहले सुपर कंप्यूटरों से भी अधिक मानी जाती थी। फिर भी एक प्रश्न बार-बार मन में उठता है—यदि जीवन इतना सुविधाजनक हो गया है, तो तनाव, चिंता, अवसाद और असंतोष क्यों बढ़ रहे हैं?

शायद इसका उत्तर इस बात में छिपा है कि हमने बाहर की दुनिया को बदलने में तो बहुत प्रगति की, लेकिन अपने भीतर की दुनिया को समझने के लिए उतना समय नहीं दिया। सद्गुरु की शिक्षाओं का सबसे बड़ा संदेश भी यही है कि जीवन का वास्तविक अनुभव बाहर नहीं, भीतर निर्मित होता है। यदि भीतर स्पष्टता, संतुलन और आनंद है, तो जीवन की चुनौतियाँ भी विकास का माध्यम बन जाती हैं। लेकिन यदि भीतर अव्यवस्था है, तो सफलता भी अधूरी लगती है।

इसी विचार ने मुझे योग, ध्यान, इनर इंजीनियरिंग और आगे चलकर Miracle of Mind जैसे प्रयासों को एक ही सूत्र में देखने के लिए प्रेरित किया। ये चारों अलग-अलग विषय नहीं हैं, बल्कि मनुष्य को स्वयं से जोड़ने वाली एक ही यात्रा के अलग-अलग पड़ाव हैं।

योग – केवल शरीर नहीं, जीवन का विज्ञान

जब भी योग की बात होती है, अधिकांश लोगों के मन में आसनों की तस्वीर उभरती है। पार्कों में योगाभ्यास करते लोग, टीवी पर दिखाई देने वाले कठिन आसन या अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम—यही हमारी सामान्य कल्पना बन गई है। लेकिन सद्गुरु योग को इससे कहीं व्यापक दृष्टि से देखते हैं।

योग का अर्थ है जुड़ना। यह अपने अस्तित्व के साथ ऐसा सामंजस्य स्थापित करना है जहाँ शरीर, मन, भावनाएँ और ऊर्जा एक-दूसरे के विरोध में नहीं, बल्कि सहयोग में कार्य करें। यदि शरीर कुछ चाहता है, मन कुछ और सोचता है तथा भावनाएँ किसी तीसरी दिशा में खींचती हैं, तो व्यक्ति के भीतर संघर्ष उत्पन्न होता है। यही संघर्ष तनाव का मूल कारण बन जाता है।

योग इस संघर्ष को समाप्त करने की दिशा में पहला कदम है। इसका उद्देश्य केवल शरीर को स्वस्थ बनाना नहीं, बल्कि मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में संतुलन स्थापित करना है। आज स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पहले से अधिक बढ़ी है। लोग जिम जाते हैं, दौड़ते हैं और खान-पान पर ध्यान देते हैं। यह अच्छी बात है, लेकिन यदि शरीर स्वस्थ हो और मन अशांत रहे, तो जीवन में संतुलन नहीं आ सकता। योग हमें याद दिलाता है कि स्वास्थ्य केवल मांसपेशियों की शक्ति नहीं, बल्कि शरीर, मन और चेतना का सामंजस्य है।

ध्यान – स्वयं से मिलने का अवसर

यदि योग शरीर और ऊर्जा को तैयार करता है, तो ध्यान हमें अपने भीतर उतरने का अवसर देता है। ध्यान को लेकर अनेक भ्रांतियाँ हैं। कुछ लोग इसे किसी विशेष धर्म से जोड़ते हैं, कुछ इसे कठिन साधना मानते हैं और कुछ सोचते हैं कि ध्यान का अर्थ है मन को पूरी तरह खाली कर देना। वास्तव में ध्यान इन सबसे अलग है।

मेरी समझ में ध्यान का अर्थ है—कुछ समय के लिए स्वयं को अपनी निरंतर चलती मानसिक गतिविधियों से अलग होकर देखना। हम दिनभर हजारों विचारों के बीच जीते हैं। अधिकांश विचार या तो अतीत से जुड़े होते हैं या भविष्य की कल्पनाओं से। वर्तमान क्षण में रहना हमारे लिए कठिन हो गया है। ध्यान हमें वर्तमान में लौटना सिखाता है।

जब व्यक्ति कुछ समय शांति से बैठकर अपने भीतर की गतिविधियों को देखता है, तो धीरे-धीरे उसे यह अनुभव होने लगता है कि वह केवल अपने विचार नहीं है। यही अनुभव मानसिक स्पष्टता का आधार बनता है। सद्गुरु का दृष्टिकोण यह है कि मन को दबाने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता केवल इतनी है कि हम उसके स्वामी बनें, दास नहीं। जब यह परिवर्तन आता है, तब जीवन की गुणवत्ता बदलने लगती है।

इनर इंजीनियरिंग – परिवर्तन भीतर से शुरू होता है

आज यदि कोई मशीन ठीक से काम नहीं करती, तो इंजीनियर उसे खोलकर उसके प्रत्येक भाग की जाँच करता है। यदि कोई सॉफ़्टवेयर ठीक से नहीं चलता, तो उसे अपडेट किया जाता है। लेकिन जब मनुष्य स्वयं तनाव, क्रोध, चिंता या भ्रम में होता है, तो वह प्रायः बाहर की परिस्थितियों को दोष देने लगता है। यहीं पर इनर इंजीनियरिंग का विचार अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

इसका अर्थ है—अपने भीतर की व्यवस्था को समझना और उसे इस प्रकार विकसित करना कि हमारा अनुभव बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर न रहे। यह विचार मुझे बहुत व्यावहारिक लगता है। यदि दो लोग एक जैसी परिस्थिति में रहते हुए अलग-अलग अनुभव करते हैं, तो इसका अर्थ है कि परिस्थिति से अधिक महत्वपूर्ण उनकी आंतरिक अवस्था है।

कोई व्यक्ति छोटी-सी समस्या में भी टूट जाता है, जबकि दूसरा बड़ी चुनौती का भी धैर्यपूर्वक सामना करता है। अंतर बाहरी स्थिति में नहीं, बल्कि भीतर की स्थिरता में होता है। इनर इंजीनियरिंग हमें यही सिखाती है कि जीवन की बागडोर अपने हाथ में कैसे ली जाए।

जिम्मेदारी – स्वतंत्रता का पहला कदम

सद्गुरु की शिक्षाओं में एक विचार बार-बार दिखाई देता है—**जिम्मेदारी**। हम अक्सर जिम्मेदारी को बोझ समझते हैं। लेकिन वास्तव में जिम्मेदारी का अर्थ है कि मैं अपनी प्रतिक्रिया का स्वामी हूँ। यदि मेरी खुशी किसी दूसरे व्यक्ति के व्यवहार पर निर्भर है, तो मैं अपनी खुशी का नियंत्रण उसके हाथ में दे रहा हूँ। यदि मेरा क्रोध परिस्थितियों पर निर्भर है, तो परिस्थितियाँ मेरे जीवन को नियंत्रित कर रही हैं। लेकिन यदि मैं यह स्वीकार करूँ कि मेरी प्रतिक्रिया मेरे हाथ में है, तो परिवर्तन की शुरुआत उसी क्षण हो जाती है। यही इनर इंजीनियरिंग का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

आनंद – जिसे बाहर नहीं खोजा जा सकता

आज लगभग हर व्यक्ति सुख की खोज में है। कोई धन के माध्यम से, कोई प्रसिद्धि के माध्यम से और कोई उपलब्धियों के माध्यम से। लेकिन इतिहास बताता है कि बाहरी उपलब्धियाँ स्थायी संतोष नहीं दे पातीं। सद्गुरु का दृष्टिकोण है कि आनंद किसी वस्तु का परिणाम नहीं, बल्कि हमारी आंतरिक अवस्था का गुण है। जब भीतर संतुलन होता है, तब साधारण क्षण भी सुंदर लगते हैं।

जब भीतर अशांति होती है, तब असाधारण उपलब्धियाँ भी अधूरी महसूस होती हैं। यही कारण है कि योग, ध्यान और इनर इंजीनियरिंग अंततः किसी बाहरी सफलता की नहीं, बल्कि भीतर के अनुभव की बात करते हैं।

आधुनिक जीवन और नई आवश्यकता

आज की सबसे बड़ी चुनौती समय की कमी नहीं, बल्कि ध्यान की कमी है। हमारा मन लगातार सूचनाओं से घिरा रहता है। सुबह आँख खुलने से लेकर रात को सोने तक मोबाइल स्क्रीन हमारे साथ रहती है। ऐसे समय में यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन कुछ मिनट भी स्वयं के लिए निकाल सके, तो यह उसके पूरे दिन की गुणवत्ता बदल सकता है।

यहीं से एक नया प्रश्न जन्म लेता है— यदि प्राचीन योग और ध्यान का ज्ञान इतना महत्वपूर्ण है, तो क्या आधुनिक तकनीक के माध्यम से इसे अधिक लोगों तक पहुँचाया जा सकता है?

यहीं पर Miracle of Mind एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर सामने आता है। मेरी समझ में यह केवल एक मोबाइल ऐप नहीं, बल्कि एक ऐसा प्रयास है जो आधुनिक तकनीक का उपयोग करके ध्यान की परंपरा को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने का कार्य करता है। यह उस व्यक्ति के लिए भी उपयोगी हो सकता है जिसने कभी ध्यान नहीं किया और उस व्यक्ति के लिए भी जो अपने अभ्यास में नियमितता लाना चाहता है।

तकनीक – समस्या भी, समाधान भी

आज तकनीक हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। हम दिन की शुरुआत मोबाइल से करते हैं और रात को सोने से पहले भी स्क्रीन देखते हैं। तकनीक ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है, लेकिन कई बार उसी ने हमारा ध्यान भी बिखेर दिया है।

यदि यही तकनीक हमें कुछ मिनट स्वयं के लिए निकालने की प्रेरणा दे, तो उसका उपयोग अधिक सार्थक हो सकता है। Miracle of Mind इसी विचार का एक उदाहरण है। यह हमें याद दिलाता है कि दिन के कुछ मिनट अपने मन और अपनी जागरूकता के लिए भी होने चाहिए।

मुझे लगता है कि यह समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। आज जानकारी की कमी नहीं है, लेकिन शांति की कमी अवश्य दिखाई देती है। ऐसे में ध्यान का सरल अभ्यास जीवन में संतुलन लाने का एक व्यावहारिक माध्यम बन सकता है।

नियमित अभ्यास का महत्व

किसी भी अच्छी आदत की तरह ध्यान का प्रभाव भी नियमित अभ्यास से दिखाई देता है। यदि कोई व्यक्ति एक दिन व्यायाम करके अगले दिन परिणाम की अपेक्षा करे, तो वह संभव नहीं है। उसी प्रकार ध्यान भी धैर्य और निरंतरता की माँग करता है। Miracle of Mind का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह अभ्यास को सरल और नियमित बनाने पर बल देता है। छोटे-छोटे कदम ही लंबे समय में बड़ा परिवर्तन लाते हैं।

मेरे विचार से ध्यान को किसी उपलब्धि की तरह नहीं, बल्कि दैनिक स्वच्छता की तरह अपनाना चाहिए। जिस प्रकार हम प्रतिदिन स्नान करते हैं और अपने शरीर की देखभाल करते हैं, उसी प्रकार मन को भी प्रतिदिन कुछ मिनट शांति देने की आवश्यकता होती है।

विद्यार्थियों के लिए एक नई दिशा

आज का विद्यार्थी अत्यधिक प्रतिस्पर्धा के वातावरण में पढ़ाई कर रहा है। अच्छे अंक, प्रतियोगी परीक्षाएँ, करियर की चिंता और डिजिटल विचलन उसके सामने बड़ी चुनौतियाँ हैं। ऐसी स्थिति में केवल अधिक पढ़ाई करना पर्याप्त नहीं है। मन का स्थिर और एकाग्र होना भी उतना ही आवश्यक है।

यदि विद्यार्थी प्रतिदिन कुछ मिनट सजगता और ध्यान का अभ्यास करें, तो वे अपनी पढ़ाई पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। परीक्षा के समय घबराहट कम हो सकती है और आत्मविश्वास बढ़ सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे सफलता और असफलता दोनों को अधिक संतुलित दृष्टि से देखना सीख सकते हैं।

व्यस्त पेशेवरों के लिए

आज कॉर्पोरेट जीवन में कार्य का दबाव लगातार बढ़ रहा है। समय-सीमा, लक्ष्य और प्रतिस्पर्धा के बीच व्यक्ति कई बार स्वयं को भूल जाता है। मेरा मानना है कि किसी भी संस्था की सबसे बड़ी पूँजी उसके लोग होते हैं। यदि कर्मचारी मानसिक रूप से स्वस्थ और संतुलित हों, तो उनकी कार्यक्षमता भी बेहतर होती है। ध्यान केवल व्यक्तिगत लाभ का साधन नहीं है। शांत मन बेहतर निर्णय लेता है, टीम के साथ बेहतर संवाद करता है और कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखता है।

परिवार और संबंध

सद्गुरु की शिक्षाओं में एक बात मुझे विशेष रूप से प्रभावित करती है कि यदि व्यक्ति स्वयं भीतर से शांत है, तो उसके संबंध भी अधिक सहज हो जाते हैं। अधिकांश विवाद परिस्थितियों से नहीं, बल्कि हमारी प्रतिक्रियाओं से उत्पन्न होते हैं। जब मन शांत होता है, तब हम सुनना सीखते हैं। जब भीतर संतुलन होता है, तब हम समझने का प्रयास करते हैं। यही गुण परिवार को मजबूत बनाते हैं। यदि घर का प्रत्येक सदस्य प्रतिदिन कुछ मिनट अपने मानसिक संतुलन के लिए निकाले, तो उसका सकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार के वातावरण पर पड़ सकता है।

छोटी शुरुआत, बड़ा परिवर्तन

अक्सर लोग सोचते हैं कि जीवन बदलने के लिए बहुत बड़े प्रयास करने होंगे। लेकिन अनुभव बताता है कि छोटे-छोटे सकारात्मक कदम ही समय के साथ गहरा परिवर्तन लाते हैं। यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन केवल कुछ मिनट स्वयं के लिए निकाले, अपने मन को शांत करने का प्रयास करे और दिनभर थोड़ा अधिक जागरूक रहने का अभ्यास करे, तो धीरे-धीरे उसका जीवन बदलने लगता है। यह परिवर्तन अचानक नहीं आता, बल्कि धीरे-धीरे हमारे व्यवहार, निर्णय, संबंधों और जीवन के प्रति दृष्टिकोण में दिखाई देने लगता है।

भविष्य की आवश्यकता

मेरा मानना है कि आने वाले समय में मानसिक स्वास्थ्य उतना ही महत्वपूर्ण विषय होगा जितना आज शारीरिक स्वास्थ्य है। विद्यालयों, महाविद्यालयों, कार्यालयों और परिवारों में यदि ध्यान और आत्म-जागरूकता जैसे विषयों को स्थान मिले, तो समाज अधिक संतुलित और संवेदनशील बन सकता है। तकनीक आगे भी विकसित होगी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी बढ़ेगी, लेकिन मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति उसका सजग मन ही रहेगा।

निष्कर्ष

जब मैं योग, ध्यान, इनर इंजीनियरिंग और Miracle of Mind को एक साथ देखता हूँ, तो मुझे इनमें कोई अलग-अलग विचार नहीं दिखाई देते। ये सभी एक ही दिशा की ओर संकेत करते हैं—**मनुष्य अपने भीतर की दुनिया को समझे और उसे संतुलित बनाए।**



मैं अपने 'इनर इंजीनियरिंग' अनुभव के बारे में बताना चाहता हूँ।

मैंने 2019 में यह प्रोग्राम किया था और तब से लोगों के साथ मेरे रिश्ते बहुत बेहतर हो गए हैं। मैं लोगों से ज़्यादा गहराई से जुड़ पाता हूँ। मैं परिवार की स्थितियों को आसानी से संभाल लेता हूँ। मैं हर तरह के लोगों के साथ सहज रहता हूँ। मेरा शर्मीलापन खत्म हो गया है। मैं पूरे दिन ऊर्जा से भरा और स्वस्थ रहता हूँ। इस एक प्रोग्राम ने मेरी ज़िंदगी को हमेशा के लिए बदल दिया है। अब मैं खुशी या आनंद की तलाश नहीं करता, मैं अपने स्वभाव से ही खुश रहता हूँ। मुझे लगता है कि हर किसी को कम से कम एक बार इसे आज़माना चाहिए।

अंततः जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि केवल अधिक धन, अधिक पद या अधिक प्रसिद्धि नहीं हो सकती। यदि इन सबके साथ मन में शांति, विचारों में स्पष्टता, संबंधों में संवेदनशीलता और जीवन के प्रति कृतज्ञता बनी रहे, तभी सफलता पूर्ण कही जा सकती है।

02

पाँच सितारों का सच



श्री भारत शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

सुबह के आठ बजे थे। हैदराबाद की सड़कें हमेशा की तरह जाग चुकी थी। कहीं ऑफिस जाने की जल्दी थी, कहीं स्कूल बसों का शोर, कहीं मेट्रो स्टेशन की ओर भागते कदम। ट्रैफिक सिग्नल पर खड़ी गाड़ियों के बीच एक समानता थी। लगभग हर व्यक्ति की नज़र अपने मोबाइल की स्क्रीन पर थी। मानो वास्तविक दुनिया से अधिक महत्वपूर्ण वह छोटी-सी स्क्रीन हो गई हो।

प्रभात भी उसी भीड़ का हिस्सा था। वह एक सरकारी कार्यालय में कार्यरत अधिकारी था। काम के प्रति ईमानदार, व्यवहार में सरल और अनावश्यक दिखावे से दूर। कार्यालय पहुँचने के लिए उसने एक कैब बुक की थी। मंज़िल पर पहुँचते ही चालक ने मुस्कुराते हुए कहा- “सर... अगर सेवा अच्छी लगी हो तो पाँच स्टार जरूर दे दीजिएगा।" प्रभात मुस्कुराया और पाँच सितारे दे दिए। यह उसके लिए कोई नई बात नहीं थी। पिछले कुछ वर्षों मे उसने अनगिनत बार ऐसा किया था। कैब, होटल, ऑनलाइन खरीदारी, डॉक्टर, बिजली मिस्त्री, प्लम्बर, यहाँ तक कि चाय तक की रेटिंग। उसे कभी लगा ही नहीं कि यह सब कितना सामान्य हो चुका है।

उस शाम तेज बारिश हो रही थी। कार्यालय से लौटते समय प्रभात ने मोबाइल से भोजन मंगाया। लगभग चालीस मिनट बाद डोर-बेल बजी। दरवाजा खुलते ही उसने देखा कि डिलीवरी बॉय पूरी तरह भींगा हुआ था। उसके घुटने पर खरोंच थी, कपड़ों पर कीचड़ लगा था और खाने का पैकेट एक ओर से फट चुका था। वह घबराया हुआ बोला- “सर... माफ़ कर दीजिए। आपकी सोसायटी के गेट पर बाइक फिसल गई। खाना थोड़ा खराब हो गया है। आप चाहें तो रिफंड ले लीजिए... लेकिन... अगर हो सके तो एक स्टार मत दीजिए।" उसकी आवाज़ काँप रही थी।

प्रभात ने पूछा- "तुम्हें चोट लगी है?" लड़के ने जैसे अपनी चोट को महत्व ही नहीं दिया। "सर... चोट तो ठीक हो जाएगी। लेकिन पिछले महीने लगातार कम रेटिंग मिलने से इंसेंटिव कट गया था। इस बार भी रेटिंग खराब हुई तो नौकरी चली जाएगी।" प्रभात कुछ क्षण उसे देखता रहा। प्रभात ने उसे अंदर बैठाया। पानी दिया। प्राथमिक उपचार का डिब्बा लाकर उसके घुटने पर दवा लगाई। फिर ग्राहक सेवा (Customer Support) पर कॉल करके स्पष्ट कहा- "राइडर की कोई गलती नहीं है। दुर्घटना हुई है। इसकी रेटिंग या भुगतान पर कोई कार्रवाई मत कीजिए।" डिलीवरी बॉय की आँखों में राहत उतर आई। जाते-जाते उसने धीमे स्वर में कहा- "सर... किसी ने पहली बार मेरी रेटिंग नहीं, मुझे देखा है।" दरवाज़ा बंद होने के बाद यह वाक्य देर तक प्रभात के मन में गूंजता रहा।

कुछ दिन बीत गए। एक रविवार को प्रभात अपने मित्र से मिलने एक कैफ़े गया। भीतर बैठा ही था कि अचानक तेज़ आवाज़ सुनाई दी। एक ग्राहक लगभग चिल्लाते हुए एक युवा वेटर से कह रहा था- "बीस मिनट से ऑर्डर नहीं आया! आज तुम्हें ऐसा एक स्टार दूँगा कि नौकरी याद आ जाएगी।" पूरे कैफ़े का ध्यान उधर चला गया। लेकिन सबसे पहले जो चीज़ बाहर आई, वह किसी की संवेदना नहीं, बल्कि मोबाइल था। किसी ने वीडियो रिकॉर्ड करना शुरू कर दिया। किसी ने कहा-"रिकॉर्ड करो... वायरल जाएगा।" दो-तीन लोग मुस्कुराते हुए तमाशा देखने लगे। वेटर बार-बार हाथ जोड़कर केवल इतना कह रहा था- "सर... बस दो मिनट और... ग्राहक और भड़क गया। "अब माफी नहीं चलेगी। इंटरनेट पर देखना तुम्हारा क्या हाल करता हूँ।"

प्रभात अपनी सीट से उठकर उनके पास पहुँचा। "भाई साहब, बात समझकर भी की जा सकती है।" ग्राहक ने गुस्से में कहा- 'आप बीच में मत पड़िए, ग्राहक हूँ, मेरा अधिकार है।" इतने में कैफ़े का प्रबंधक भी वहाँ आ गया। उसने बहुत शांत स्वर में कहा - "सर... देरी के लिए हम क्षमा चाहते हैं। लेकिन दस मिनट पहले इसे घर से फोन आया था। इसके पिताजी को अचानक हार्ट अटैक आया है। यह तुरंत जाना चाहता था, लेकिन आज स्टाफ कम होने की वजह से इसने कहा कि पहले ग्राहकों का काम पूरा कर देता हूँ।"

पूरा कैफे कुछ क्षण के लिए शांत हो गया। ग्राहक का चेहरा उतर गया। लेकिन एक अजीब दृश्य अभी भी बाकी था। लोग वीडियो बनाना बंद नहीं कर रहे थे। जिन्हें सच्चाई पता चल चुकी थी, वे भी कैमरा बंद करने के बजाय बेहतर एंगल खोज रहे थे। प्रभात ने पहली बार महसूस किया कि आज का समाज सच जानने से पहले फैसला सुना देता है, और इंसान को समझने से पहले उसे इंटरनेट पर परख देता है। उस दिन घर लौटते समय उसके मन में एक ही प्रश्न था- **क्या अब इंसान की कीमत उसके चरित्र से नहीं, उसकी रेटिंग से तय होगी?**

कुछ सप्ताह बाद कार्यालय के कार्य से उसे एक वृद्धाश्रम जाना पड़ा। सरकारी अभिलेखों का सत्यापन करना था। कार्य समाप्त होने के बाद उसकी नज़र एक वृद्ध महिला पर पड़ी। साधारण सूती साड़ी, सफेद बाल, चेहरे पर अद्भुत शांति। प्रबंधक ने परिचय कराया- ये सावित्री जी हैं। सरकारी विद्यालय में चालीस वर्ष तक अध्यापिका रहीं।" प्रभात ने सहज ही पूछा- इनसे मिलने कोई आता है?" प्रबंधक मुस्कुराया। "हर रविवार। कोई डॉक्टर, कोई इंजीनियर, कोई शिक्षक, कोई पुलिस अधिकारी। सब इनके पुराने विद्यार्थी है।"

इतने में लगभग चालीस वर्ष का एक व्यक्ति अपने छोटे बेटे के साथ आया। अंदर आते ही उसने झुककर सावित्री जी के चरण छुए। "मैडम... पहचानिए मुझे?" सावित्री जी ने ध्यान से देखा। फिर मुस्कुरा उठीं। "रोहित... आठवीं 'बी'।" रोहित की आँखें भर आईं। "मैडम... अगर उस दिन आपने मेरी फीस अपने वेतन से जमा न कराई होती, तो शायद में दसवीं भी पूरी नहीं कर पाता। आज मैं सरकारी अस्पताल में डॉक्टर हूँ।"

उसका छोटा बेटा उत्सुकता से बोला- 'पापा, ये आपकी टीचर हैं?" रोहित ने गर्व से उत्तर दिया "नहीं बेटा... ये मेरी ज़िंदगी बनाने वाली इंसान है।" प्रभात चुपचाप सब देखता रहा। न वहाँ कोई कैमरा था। न कोई सेल्फी। न कोई लाइव वीडियो। न किसी ने पूछा- "मैडम आपके कितने फॉलोअर्स है?" सम्मान का वह दृश्य किसी पुरस्कार समारोह से कहीं अधिक बड़ा था।

काम समाप्त होने के बाद प्रभात ने सावित्री जी से पूछा- "मैडम, आपने कभी सोशल मीडिया इस्तेमाल नहीं किया?" वे हल्का-सा हँसीं। "न बेटा... मेरे पास न फॉलोअर्स हैं, न रेटिंग, न कोई अवॉर्ड।" कुछ क्षण बाद उन्होंने खिड़की से बाहर खेलते बच्चों को देखा और बहुत शांत स्वर में कहा- **"आजकल लोग पाँच सितारे कमाते हैं... हमने पाँच इंसान कमाए थे।"** प्रभात निःशब्द रह गया। उसे लगा जैसे इस एक वाक्य ने पिछले कई महीनों के सारे अनुभवों को एक सूत्र में बाँध दिया हो। डिलीवरी बॉय... कैफ़े का वेटर... मोबाइल से बनते वीडियो... ऑनलाइन रेटिंग... सब उसकी आँखो के सामने घूम गया।

उस रात वह देर तक अपने मोबाइल की स्क्रीन देखता रहा। कितने ही ऐप थे। हर जगह सितारे। हर जगह लाइक। हर जगह समीक्षा। लेकिन कहीं भी इंसान नहीं था। अचानक उसे सावित्री जी के वाक्य याद आए। उसने मोबाइल एक ओर रख दिया।

कुछ दिनों बाद वह फिर एक रेस्तरां गया। भोजन समाप्त होते ही मोबाइल पर संदेश आया - "Rate Your Experience." इस बार उसने जल्दबाजी में पाँच सितारे नहीं दिए। उसने ईमानदारी से वही लिखा जो उसने अनुभव किया। न अनावश्यक प्रशंसा। न कठोर आलोचना। सिर्फ सत्य।

बाहर निकलते समय उसने देखा एक छोटा बच्चा सड़क किनारे बैठे अपने वृद्ध दादा को अपने हाथों से खाना खिला रहा था। कोई कैमरा नहीं था। कोई वीडियो नहीं। कोई रेटिंग नहीं। लेकिन उस दृश्य में जितनी मानवता थी, उतनी शायद लाखों लाइक में भी नहीं मिल सकती। प्रभात मुस्कुराया। अब उसे समझ आ चुका था कि तकनीक सुविधा दे सकती है, पहचान नहीं। प्रसिद्धि दिला सकती है, सम्मान नहीं। सम्मान उन लोगों के हृदय में मिलता है जिनके जीवन को हम अपने व्यवहार, संवेदना और कर्म से बेहतर बनाते हैं। क्योंकि स्क्रीन पर चमकते पाँच सितारे समय के साथ धुँधले पड़ जाते हैं, पर किसी के जीवन में जगाई गई रोशनी पीढ़ियों तक उजाला करती रहती हैं।

03

मैं क्या लिखूँ



श्री एम. कोदंडराम
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

मैं क्या लिखूँ?

जब कलम पकड़ता हूँ हाथ में,

तो बातें बंद हो जाती हैं।

जब बीच राह में होता हूँ,

तो सपनों का झरना बह जाता है।

साँसें चलती तो हैं,

पर आँखें खुलती नहीं।

दिल धड़कता है मगर,

खामोशी हटती नहीं।

— मैं क्या लिखूँ?

शब्दों को अक्षरों में बदलने के लिए

क्या इतनी पीड़ा होती है?

औरों का डर क्या इतना भारी होता है?

निर्भय होकर

श्वेत मोती की भाँति चमक न पाऊँ,

तो क्या होगा?

— मैं क्या लिखूँ?

मैं और मेरे सपने,
अंधड़ में भटकते रहे।
कमल मिला तो केवल कीचड़ में,
आँखों की नमी
भारी श्वास बनकर चली।
— मैं क्या लिखूँ?
दिल की आग
दर्द को पिघला देती है,
जीवन की खामोशी
सृजन को निगल जाती है।
आँसू जब सूख जाते हैं आँखों में,
कलम भी थक जाती है।
इस कोरे कागज़ पर
— अब क्या लिखूँ?

यादों की बारात पर
खुशी का दूल्हा सज रहा है,
जश्न में हिस्सा माँगते हुए
मेहमान भी आ रहे हैं।
मन के खाली आँगन में
अब रंग-बिरंगी रंगोली सजा रहा हूँ,
फिर भी टूटी हुई शहनाई पर
यह संगीत कैसा?
आँखों के रास्ते
अब कब तक यूँ ही बहता रहूँ?
और इस मौन के सागर में
आख़िर क्या लिखूँ?
— मैं क्या लिखूँ?

जीवन के बहाव में
अब थक गया राही
भाव कितने अभाव हुए
कि कलम में ही जम गया स्याही
उम्र के साथ सभी मौसम बन गए
पतझड़ सुनसान हस्ती के मस्तिष्क से
— अब मैं क्या लिखूँ?

उजियाला इतना जल गया
कि बन गया वह अंधेरा
उम्मीदें इतनी बढ़ गईं
कि ढल गया सवेरा
आधी रात में आसमां को देखकर
तारों की रोशनी में
— अब मैं क्या लिखूँ?

पुस्तकों के साथ लोगों को इतने पढ़ते गए
कि अंत में रह गए अनपढ़
इस दुनिया के बदलते तेवर के बारे में
— अब मैं क्या लिखूँ?

04 साइबर धोखाधड़ी और लेखापरीक्षा की भूमिका



श्री एन. श्रीनिवास रेड्डी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (बिल्स)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

सरकारी कार्यालय में सोमवार की सुबह सामान्य थी। कंप्यूटर जीवंत हो गए, डिजिटल भुगतान प्रणालियों ने हजारों लेनदेन को संसाधित किया, और अधिकारी अपने नियमित काम पर चले गए। ऐसा लग रहा था कि सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है। फिर भी, साइबरस्पेस की अदृश्य दुनिया में कहीं न कहीं, एक धोखेबाज, एक कमजोर पासवर्ड, एक फ़िशिंग ई-मेल, या एक अनपैच किए गए सॉफ़्टवेयर भेद्यता का फायदा उठाने का प्रयास कर रहा था। अतीत की धोखाधड़ी के विपरीत, कोई जाली हस्ताक्षर, गायब नकदी या टूटे हुए ताले नहीं थे। हमला शांत, तेज और लगभग अदृश्य था। डिजिटल क्रांति ने लोक प्रशासन को बदल दिया है। सरकारी सेवाएं अब ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रदान की जाती हैं, वित्तीय लेन-देन इलेक्ट्रॉनिक रूप से संसाधित किए जाते हैं, क्लाउड-आधारित प्रणालियों में रिकॉर्ड बनाए रखे जाते हैं और नागरिक सीधे अपने बैंक खातों में लाभ प्राप्त करते हैं।

इस परिवर्तन ने शासन को तेज, अधिक पारदर्शी और अधिक कुशल बना दिया है। साथ ही, इसने साइबर अपराधियों के लिए नए दरवाजे खोल दिए हैं जो व्यक्तिगत लाभ के लिए प्रौद्योगिकी का दोहन करना चाहते हैं। साइबर धोखाधड़ी अब बड़े वित्तीय संस्थानों या बहुराष्ट्रीय निगमों तक ही सीमित नहीं है। सरकारी विभाग, सार्वजनिक क्षेत्र के संगठन और कल्याणकारी कार्यक्रम भी आकर्षक लक्ष्य बन गए हैं। नकली पहचान, फ़िशिंग हमले, रैनसमवेयर, अनधिकृत धन हस्तांतरण, डिजिटल रिकॉर्ड में हेर-फेर और डेटा चोरी न केवल सार्वजनिक धन बल्कि सरकारी संस्थानों में नागरिकों के विश्वास से भी समझौता कर सकते हैं।

यही वह जगह है जहाँ लेखापरीक्षा की भूमिका एक नया और महत्वपूर्ण आयाम ग्रहण करती है। परंपरागत रूप से, लेखापरीक्षकों ने यह सुनिश्चित करने के लिए नकद पुस्तकों, वाउचरों, खाते और भौतिक रिकॉर्ड की जांच की कि सार्वजनिक धन का ठीक से उपयोग किया गया था। आज, उन्हें डिजिटल भुगतान प्रणालियों, सूचना प्रौद्योगिकी नियंत्रणों, साइबर सुरक्षा प्रथाओं, अभिगम प्रबंधन और डेटा अखंडता को भी समझना चाहिए। लेखापरीक्षा का सार अपरिवर्तित रहता है-सार्वजनिक संसाधनों की रक्षा करना-लेकिन तकनीक के साथ तरीके विकसित होते रहते हैं। आधुनिक लेखापरीक्षा वित्तीय लेन-देन के सत्यापन से परे है। यह महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर देना चाहता है। क्या उपयोगकर्ता खाते पर्याप्त रूप से सुरक्षित हैं? क्या पहुँच विशेषाधिकार केवल अधिकृत कर्मियों को ही दिए जाते हैं? सिस्टम लॉग की नियमित रूप से निगरानी की जाती है? क्या सॉफ्टवेयर अद्यतन समय पर स्थापित किए जाते हैं? क्या संवेदनशील सरकारी डेटा कूटबद्ध है? क्या कोई प्रभावी आपदा बहाली तंत्र है?

इन नियंत्रणों की जांच करके, लेखापरीक्षक कमजोरियों की पहचान करने में मदद करते हैं, इससे पहले कि उनका दोहन किया जाए। साइबर धोखाधड़ी का मुकाबला करने में प्रौद्योगिकी भी एक सहयोगी बन गई है। डेटा विश्लेषण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता मिनटों के भीतर लाखों डिजिटल लेन-देन का विश्लेषण कर सकते हैं, असामान्य पैटर्न का पता लगा सकते हैं, डुप्लिकेट भुगतान की पहचान कर सकते हैं और संदिग्ध गतिविधियों के लिए अलर्ट उत्पन्न कर सकते हैं। निरंतर निगरानी प्रणाली वास्तविक समय में विसंगतियों को उजागर कर सकती है, जिससे संगठनों को महत्वपूर्ण क्षति होने से पहले प्रतिक्रिया करने की अनुमति मिलती है।

ये प्रौद्योगिकी लेखापरीक्षकों को व्यापक निरीक्षण बनाए रखते हुए उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए सशक्त बनाती हैं। हालांकि, सबसे उन्नत सुरक्षा प्रणालियाँ भी मानव तत्व को समाप्त नहीं कर सकती हैं। कई साइबर घटनाएं एक साधारण गलती से शुरू होती हैं-एक कमजोर पासवर्ड, एक दुर्भावनापूर्ण ई-मेल पर क्लिक करने वाला एक अनजान कर्मचारी, या गोपनीय साख साझा करना। इसलिए साइबर सुरक्षा जागरूकता की संस्कृति का निर्माण उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि परिष्कृत

सॉफ्टवेयर को तैनात करना। नियमित प्रशिक्षण, स्पष्ट सुरक्षा नीतियां और जिम्मेदार डिजिटल व्यवहार साइबर खतरों के खिलाफ सबसे मजबूत बचाव में से हैं।

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग के लिए, डिजिटल युग अवसर और जिम्मेदारियाँ दोनों प्रस्तुत करता है। जैसे-जैसे सरकारें प्रौद्योगिकी पर तेजी से निर्भर हो रही हैं, लेखापरीक्षकों को सूचना प्रणालियों, साइबर सुरक्षा, डेटा विश्लेषण और उभरती प्रौद्योगिकियों में अपने कौशल को लगातार अद्यतन करना चाहिए। निरंतर सीखना अब वैकल्पिक नहीं है; सार्वजनिक लेखापरीक्षा की प्रभावशीलता और विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है।

हालांकि, लेखापरीक्षा की भूमिका भय पैदा करना नहीं है, बल्कि आत्मविश्वास पैदा करना है। साइबर सुरक्षा ढांचे का आकलन करके, आंतरिक नियंत्रणों का मूल्यांकन करके और व्यावहारिक सुधारों की सिफारिश करके, लेखा परीक्षक सार्वजनिक संस्थानों के लचीलेपन को मजबूत करते हैं। हर अनुशंसा को लागू किया जाता है, हर भेद्यता को संबोधित किया जाता है और हर नियंत्रण को मजबूत किया जाता है जो एक सुरक्षित डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में योगदान देता है। साइबर धोखाधड़ी मौन में काम कर सकती है, लेकिन जवाबदेही को कभी भी चुप नहीं रहना चाहिए। प्रत्येक सुरक्षित डिजिटल लेन-देन के पीछे शासन, मजबूत नियंत्रण और सतर्क निरीक्षण की एक रूपरेखा निहित होती है।

लेखापरीक्षा उस ढांचे का एक अभिन्न अंग है, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रौद्योगिकी सुरक्षा या विश्वास से समझौता किए बिना सार्वजनिक हित की सेवा करती है। जैसे-जैसे शासन अपने डिजिटल परिवर्तन को जारी रखेगा, लेखापरीक्षक की भूमिका वित्तीय जाँच से बहुत आगे बढ़ेगी। कल का लेखापरीक्षक न केवल लेखाओं का सत्यापन करेगा बल्कि डिजिटल लचीलेपन का भी आकलन करेगा, साइबर तैयारी का मूल्यांकन करेगा और सार्वजनिक प्रणालियों की अखंडता की रक्षा करने में मदद करेगा।

इस विकसित परिदृश्य में, प्रौद्योगिकी सरकार को शक्ति दे सकती है, लेकिन यह सतर्कता, सत्यनिष्ठा और पेशेवर निर्णय है जो जनता के विश्वास की रक्षा करना जारी रखेगा। भविष्य डिजिटल शासन का है। इसकी विश्वसनीयता बनाए रखने की जिम्मेदारी हम सभी की है। उस मिशन में, लेखापरीक्षा न केवल सार्वजनिक वित्त का एक प्रहरी है, बल्कि डिजिटल युग में विश्वास का संरक्षक भी है।

प्रत्येक क्लिक एक डिजिटल पदचिह्न छोड़ता है, प्रत्येक लेन-देन एक कहानी बताता है, और प्रत्येक लेखापरीक्षा जनता के विश्वास को मजबूत करती है। प्रौद्योगिकी मार्ग को रोशन कर सकती है, लेकिन यह अखंडता है जो यह सुनिश्चित करती है कि हम इसे सही दिशा में चलाएं। शासन का भविष्य न केवल उन लोगों का होगा जो नवाचार करते हैं, बल्कि उन लोगों का भी होगा जो साहस और विवेक के साथ जवाबदेही बनाए रखते हैं।

05

जब शाम ढ़ले



श्री गौस खान सुबेदार
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

जब शाम ढले, मन ख़ामोश हो जाए,
यादों का कारवाँ फिर लौट आए।

डूबते सूरज की लाली ये बताए,
हर अंत के बाद सवेरा मुस्काए।

हवा की सरगोशी कुछ गीत सुनाए,
दिल की हर धड़कन तेरा नाम गुनगुनाए।

चाँद की चाँदनी राह सजाए,
टूटा हुआ सपना फिर हौसला पाए।

तन्हाई भी अब दोस्त बन जाए,
ख़ामोशी भी जीवन का अर्थ बताए।

बीते हुए लम्हें ख़ुशबू बन जाएँ,
सूखे हुए आँसू मोती कहलाएँ।

बिछड़े हुए चेहरे दुआ बन जाएँ,
यादों के दीप हर रात जल जाएँ।

गिरकर उठना ही जीवन सिखाए,
हर ठोकर मंज़िल का पता बताए।

मुश्किल की राह भी फूल खिलाए,
विश्वास का सूरज फिर उग आए।

वक़्त की आँधी चाहे जो लाए,
उम्मीद का दीप कभी न बुझ पाए।

रात भले ही लंबी हो जाए,
सपनों का पंछी उड़ना न भूल पाए।

हर दर्द दिल को थोड़ा समझाए,
हर आँसू इंसाँ को मज़बूत बनाए।

जो खो गया, वह सबक बन जाए,
जो मिल गया, वह नेमत कहलाए।

चलते रहो, चाहे जहाँ थक जाओ,
मंज़िल तुम्हें एक दिन गले लगाए।

ज़िंदगी का बस इतना अफ़साना है—
हर शाम के बाद नया सवेरा आना है।

06

आख़िरी चाबी



सुश्री मैशर जहां
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

सर्दियों की हल्की धुंध ने दिल्ली के आसमान को सफेद चादर की तरह ढक रखा था। सुबह के छह बजे थे, लेकिन पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन हमेशा की तरह जाग चुकी थी। प्लेटफॉर्म पर यात्रियों की चहल-पहल, चायवालों की आवाज़ें, कुलियों की भागदौड़ और इंजन की तेज़ सीटी पूरे माहौल को जीवंत बना रही थी।

इन्हीं यात्रियों के बीच 27 वर्षीय आरव मल्होत्रा अपने कंधे पर कैमरा बैग और हाथ में एक डायरी लिए प्लेटफॉर्म नंबर पाँच पर खड़ा था। वह पेशे से ट्रैवल व्लॉगर था। उसके वीडियो और लेख लाखों लोग पढ़ते और देखते थे, क्योंकि वह केवल खूबसूरत जगहों की तस्वीरें नहीं दिखाता था, बल्कि उन जगहों से जुड़ी भूली-बिसरी कहानियाँ भी दुनिया के सामने लाता था।

इस बार उसकी मंज़िल थी उत्तराखंड का छोटा-सा पहाड़ी गाँव—देवकुंड। देवकुंड के बारे में उसने इंटरनेट पर बहुत कम जानकारी पाई थी, लेकिन एक बात लगभग हर जगह लिखी थी— "गाँव की पुरानी हवेली में रात होने के बाद कोई नहीं जाता।" यही रहस्य उसे वहाँ खींच लाया था।

कुछ देर बाद ट्रेन प्लेटफॉर्म पर आकर रुकी। आरव अपनी सीट पर बैठ गया। डिब्बे में अलग-अलग तरह के यात्री थे। कोई अखबार पढ़ रहा था, कोई मोबाइल पर फिल्म देख रहा था, तो कोई खिड़की से बाहर गुजरते नज़ारों को निहार रहा था।

आरव ने कैमरा निकाला और यात्रा रिकॉर्ड करने लगा। कुछ घंटों बाद उसके सामने वाली सीट पर बैठे लगभग सत्तर वर्ष के एक बुज़ुर्ग ने मुस्कुराते हुए पूछा, "लगता है बेटा, घूमने निकले हो?" "जी... मैं ट्रैवल ब्लॉगर हूँ। इस बार देवकुंड जा रहा हूँ।"

"देवकुंड?" बुज़ुर्ग के चेहरे की मुस्कान अचानक गायब हो गई। उन्होंने धीरे से पूछा, "क्या तुम उस हवेली के बारे में जानते हो?" "बस इतना कि लोग उसे भूतिया कहते हैं।"

बुज़ुर्ग कुछ क्षण चुप रहे। फिर जेब से एक पुरानी पीतल की चाबी निकालकर आरव की हथेली पर रख दी। चाबी पर समय की धूल जमी हुई थी और उसके ऊपरी हिस्से पर एक अजीब-सा निशान बना था। "इसे संभालकर रखना।" आरव हैरान रह गया। "लेकिन... यह क्यों?" बुज़ुर्ग मुस्कुराए। "कुछ सवालों के जवाब मंज़िल पर मिलते हैं, रास्ते में नहीं।" इतना कहकर वे खिड़की की ओर देखने लगे।

आरव कई बार उनसे कुछ पूछना चाहता था, लेकिन हर बार वे मुस्कुरा भर देते। अगले स्टेशन पर ट्रेन रुकी। आरव पानी लेने नीचे उतरा। जब वह वापस आया, तो बुज़ुर्ग अपनी सीट पर नहीं थे। उसने पूरे डिब्बे में देखा। वे कहीं दिखाई नहीं दिए। जैसे वे कभी वहाँ थे ही नहीं। आरव ने इसे संयोग समझा और चाबी अपने बैग में रख ली।

अगले दिन सुबह वह देवकुंड पहुँचा। पहाड़ों के बीच बसा छोटा-सा गाँव किसी चित्रकार की बनाई हुई पेंटिंग जैसा सुंदर था। चारों ओर देवदार के ऊँचे-ऊँचे पेड़, दूर तक फैली बर्फ से ढकी चोटियाँ, बहती हुई नदी और पक्षियों की मधुर आवाज़... लेकिन इस खूबसूरती के बीच लोगों के चेहरों पर एक अनकहा डर भी दिखाई देता था। आरव ने गाँव की छोटी-सी चाय की दुकान पर चाय पीते हुए पूछा, "यहाँ की पुरानी हवेली किस दिशा में है?"

चाय बेचने वाला युवक कुछ पल चुप रहा। फिर बोला, "साहब... दिन में चले जाइए, लेकिन सूरज ढलने से पहले वापस आ जाइए।" "ऐसा क्यों?" "क्योंकि जो लोग रात में वहाँ गए... वे दोबारा कभी पहले जैसे नहीं लौटे।"

दुकान पर बैठे बाकी लोग भी चुप हो गए। जैसे किसी ने कोई ऐसा नाम ले लिया हो, जिसके बारे में बोलना मना हो। आरव मुस्कुराया। "मैं भूत-प्रेत में विश्वास नहीं करता।"

एक बुज़ुर्ग किसान ने धीरे से कहा, "हम भी नहीं करते थे... जब तक हमने अपनी आँखों से अजीब चीज़ें नहीं देखीं।" आरव को लगा कि शायद यह सब गाँव की बनाई हुई कहानियाँ हैं। उसने चाय खत्म की और हवेली की ओर चल पड़ा।

करीब आधे घंटे की पैदल यात्रा के बाद वह एक ऊँची पहाड़ी पर पहुँचा। वहीं सामने वह विशाल हवेली खड़ी थी। टूटी हुई खिड़कियाँ। दीवारों पर उगी काई। लोहे का जंग लगा मुख्य दरवाज़ा। चारों ओर फैली खामोशी। ऐसा लग रहा था जैसे समय सौ साल पहले रुक गया हो।

जैसे ही उसने दरवाज़े को धक्का दिया, वह तेज़ आवाज़ के साथ खुल गया। अंदर धूल की मोटी परत जमी थी। दीवारों पर पुराने चित्र लगे थे। एक कोने में टूटा हुआ पियानो पड़ा था। छत से लटकता झूमर हवा के बिना भी धीरे-धीरे हिल रहा था। अचानक ऊपर की मंज़िल से किसी के चलने जैसी आवाज़ आई। ठक... ठक... ठक...

आरव ने टॉर्च जलाई। दिल की धड़कन थोड़ी तेज़ हो चुकी थी। लेकिन उसने कैमरा चालू किया और सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। ऊपर पहुँचते ही आवाज़ बंद हो गई। पूरा गलियारा सुनसान था। कमरों के दरवाज़े आधे खुले हुए थे। एक कमरे में उसे पुरानी अलमारी दिखाई दी। लेकिन उस पर भारी ताला लगा था। उसी समय उसकी नज़र ताले पर बने उसी निशान पर गई, जो उस पीतल की चाबी पर बना था। उसके शरीर में सिहरन दौड़ गई। "क्या यह सिर्फ संयोग है?" उसने धीरे से चाबी निकाली। जैसे ही चाबी ताले में डाली...टक...!

ताला एक ही कोशिश में खुल गया। अलमारी के अंदर धूल से ढकी एक मोटी डायरी रखी थी। उसके ऊपर लिखा था—"अगर यह डायरी तुम्हारे हाथ में है... तो समझ लो कि सच तुम्हें चुन चुका है।" आरव ने काँपते हाथों से पहला पन्ना खोला। उसी क्षण बाहर तेज़ हवा चलने लगी। खिड़कियाँ अपने आप खुल गईं। झूमर ज़ोर-ज़ोर से हिलने लगा। और हवेली के किसी कोने से एक धीमी-सी आवाज़ गूँजी..."देर... हो गई..."

आरव एक पल के लिए जड़ हो गया। उसने तुरंत टॉर्च घुमाई। लेकिन वहाँ कोई नहीं था। फिर उसने खुद को संभाला और डायरी पढ़ना शुरू किया। उसे अंदाज़ा भी नहीं था कि अगले कुछ घंटों में वह सिर्फ एक हवेली का नहीं, बल्कि सौ साल पुराने ऐसे रहस्य का हिस्सा बनने वाला है, जो पूरे देश के इतिहास को नई पहचान देने वाला था।

आरव ने गहरी साँस ली और डायरी का पहला पन्ना खोला। पीले पड़ चुके पन्नों पर स्याही अब हल्की हो चुकी थी, लेकिन हर शब्द साफ़ पढ़ा जा सकता था। ऊपर लिखा था—"मैं राजवीर सिंह, देवकुंड हवेली का अंतिम स्वामी। यदि यह डायरी किसी ईमानदार इंसान के हाथ लगे, तो समझ लेना कि मेरी आखिरी इच्छा पूरी होने वाली है।"

आरव की उत्सुकता और बढ़ गई। डायरी के अनुसार यह घटना 1925 की थी। उस समय अंग्रेज़ों का शासन था। राजवीर सिंह बाहर से एक साधारण ज़मींदार दिखाई देते थे, लेकिन भीतर ही भीतर वे क्रांतिकारियों की सहायता करते थे। उनकी हवेली आज़ादी के दीवानों का गुप्त अड्डा थी। हवेली के नीचे बनी सुरंग से क्रांतिकारी जंगलों के रास्ते सुरक्षित निकल जाते थे और अंग्रेज़ों को इसकी भनक तक नहीं लगती थी।

लेकिन हर कहानी में एक विश्वासघाती होता है। गाँव का ही एक लालची व्यक्ति, भैरव, कुछ सोने के सिक्कों के लालच में अंग्रेज़ अफसरों से मिल गया। उसने हवेली का पूरा राज उन्हें बता दिया।

एक रात अंग्रेज़ सैनिकों ने हवेली को चारों तरफ़ से घेर लिया। राजवीर सिंह ने अपने साथियों से कहा—"तुम लोग सुरंग से निकल जाओ। अगर मैं बच गया तो फिर मिलेंगे, और अगर नहीं बचा... तो भारत आज़ाद होने के बाद मेरा नाम किसी किताब में लिख देना।"

लेकिन इतिहास हमेशा न्याय नहीं करता। राजवीर सिंह पकड़े गए। उन्हें बिना मुकदमे के फाँसी दे दी गई। उनके साथियों ने देश के लिए लड़ाई जारी रखी, लेकिन राजवीर सिंह का नाम समय की धूल में दब गया।

डायरी के आख़िरी पन्ने पर लिखा था—"मेरी सबसे बड़ी दौलत सोना या चाँदी नहीं, बल्कि वे दस्तावेज़ हैं जो साबित करेंगे कि इस हवेली ने आज़ादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्हें सुरंग के अंतिम कक्ष में छिपाया गया है।"

आरव की आँखों में चमक आ गई। उसी समय उसे महसूस हुआ कि कमरे का फर्श हल्का-सा हिल रहा है। उसने टॉर्च नीचे डाली। लकड़ी का एक तख्ता बाकी हिस्से से अलग दिखाई दे रहा था। जैसे ही उसने उसे हटाया, नीचे पत्थर की सीढ़ियाँ नज़र आईं। वह धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। सीढ़ियाँ नम थीं। दीवारों से पानी टपक रहा था। हर कदम की आवाज़ सुरंग में कई गुना गूँज रही थी। कुछ दूर चलने पर उसे दीवारों पर उकेरे गए शब्द दिखाई दिए—

"वंदे मातरम्"

"इंकलाब ज़िंदाबाद"

आरव ने कैमरा चालू कर दिया। उसे महसूस हो रहा था कि वह किसी साधारण जगह पर नहीं, बल्कि इतिहास के एक जीवित पन्ने पर चल रहा है। अचानक सुरंग दो रास्तों में बँट गई। उसी समय उसे डायरी की एक बात याद आई—"सच्चाई का रास्ता हमेशा बाईं ओर होगा।" वह बाईं सुरंग में मुड़ गया।

कुछ देर बाद सामने एक विशाल लोहे का दरवाज़ा दिखाई दिया। उस पर भी वही निशान बना था जो चाबी पर था। आरव ने चाबी घुमाई। दरवाज़ा धीरे-धीरे खुला। कमरे के बीचो-बीच एक बड़ा संदूक रखा था। उसने काँपते हाथों से ढक्कन खोला। अंदर सोना नहीं था। बल्कि पुराने नक्शे, क्रांतिकारियों के पत्र, अंग्रेज़ अधिकारियों की गोपनीय रिपोर्टें, हथियारों की सूची और राजवीर सिंह की मुहर सुरक्षित रखी हुई थी। इतिहास का अनमोल खज़ाना उसके सामने था।

आरव खुशी से सब रिकॉर्ड करने लगा। लेकिन तभी...पीछे से किसी के कदमों की आवाज़ आई। "तो... खज़ाना मिल ही गया!" आरव ने पलटकर देखा। चार आदमी टॉर्च और हथियार लेकर खड़े थे। उनका सरदार हँसते हुए बोला— "हम कई महीनों से इस हवेली पर नज़र रखे हुए थे। हमें पता था कि कोई न कोई इस रहस्य तक ज़रूर पहुँचेगा।"

आरव समझ गया कि ये लोग खज़ाना चुराने आए हैं। उसने शांत स्वर में कहा—"यह देश की धरोहर है।" सरदार हँसा। "धरोहर नहीं... करोड़ों की कमाई।"

इतना कहकर वह संदूक की ओर बढ़ा। उसी पल आरव ने पास रखी लालटेन उसकी ओर फेंक दी। लालटेन ज़मीन पर गिरते ही बुझ गई और सुरंग में घना अंधेरा छा गया। आरव संदूक से ज़रूरी दस्तावेज़ उठाकर दूसरी ओर भागा। पीछे से आवाज़ आई—"भागने मत देना उसे!"

सुरंग में रोमांचक पीछा शुरू हो गया। कभी वह फिसलते-पत्थरों से बचता, कभी नीचे झुककर संकरी सुरंग पार करता। अचानक उसके सामने गहरी खाई आ गई, जिसके ऊपर लकड़ी का पुराना पुल बना था। उसने हिम्मत जुटाई और दौड़कर पुल पार कर गया। पीछे दौड़ रहे बदमाश भी उसी पुल पर चढ़ गए। लेकिन वर्षों पुरानी लकड़ियाँ उनका भार नहीं सह सकीं। चर्र... चर्र... धड़ाम! पुल टूट गया।

तीन लोग नीचे गहरे गड्ढे में गिर पड़े। सरदार किसी तरह दूसरी ओर पहुँच गया और फिर आरव के पीछे दौड़ पड़ा। आख़िरकार सुरंग का दूसरा दरवाज़ा दिखाई दिया। आरव बाहर निकला तो सामने तेज़ बहती नदी और घना जंगल था। वह दौड़ता हुआ गाँव की ओर भागा। लेकिन सरदार अब भी उसके पीछे था। तभी दूर से पुलिस की जीप का सायरन सुनाई दिया।

आरव को याद आया कि उसने हवेली में प्रवेश करने से पहले अपने दोस्त को लाइव लोकेशन भेजी थी और तय समय तक संपर्क न होने पर पुलिस को सूचना देने के लिए कहा था। कुछ ही मिनटों में पुलिस और गाँव वाले वहाँ पहुँच गए। सरदार भागने की कोशिश करने लगा, लेकिन पुलिस ने उसे पकड़ लिया। सुरंग से बाकी अपराधियों को भी बाहर निकाल लिया गया।

अगले दिन देवकुंड में पहली बार उत्सव जैसा माहौल था। पुरातत्व विभाग, इतिहासकार और मीडिया की टीमें वहाँ पहुँच गईं। दस्तावेज़ों की जाँच कई दिनों तक चली। फिर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में घोषणा की गई— "ये दस्तावेज़ पूरी तरह असली हैं। राजवीर सिंह स्वतंत्रता आंदोलन के महत्वपूर्ण सेनानी थे, लेकिन उनका नाम इतिहास में दर्ज नहीं हो पाया था।"

कुछ महीनों बाद देवकुंड की हवेली को राष्ट्रीय धरोहर घोषित कर दिया गया। वहाँ एक संग्रहालय बनाया गया। गाँव के युवाओं को गाइड की नौकरी मिली। छोटे-छोटे होटल और दुकानें खुल गईं। जो गाँव कभी डर के कारण खाली रहने लगा था, अब देश-विदेश के पर्यटकों से भरने लगा।

आरव फिर एक दिन उसी हवेली में लौटा। अब वहाँ रोशनी थी, बच्चों की हँसी थी और इतिहास को जानने की उत्सुकता थी। संग्रहालय में घूमते हुए उसकी नज़र एक तस्वीर पर पड़ी। उसके कदम वहीं रुक गए। तस्वीर उसी बुज़ुर्ग की थी, जो ट्रेन में उससे मिले थे। नीचे लिखा था— "प्रोफेसर श्यामलाल वर्मा (1945–2016) — इतिहासकार। इन्होंने जीवन भर राजवीर सिंह के अस्तित्व के प्रमाण खोजे, पर सफलता नहीं मिली।"

आरव के हाथ काँपने लगे। वह तुरंत संग्रहालय के प्रबंधक के पास गया। "ये... ये प्रोफेसर साहब... क्या सच में 2016 में...?" प्रबंधक ने गंभीरता से कहा— "जी हाँ। उनका सपना था कि एक दिन कोई इस रहस्य को दुनिया के सामने लाए।"

आरव की आँखों के सामने ट्रेन का वह दृश्य घूम गया। वह चाबी... वह मुस्कान... और वे शब्द—"कुछ जवाब मंज़िल पर मिलते हैं..." आरव ने जेब टटोली। वह पीतल की चाबी अब भी उसके पास थी। वह उसे वापस अलमारी में रखने के लिए उसी कमरे में गया। जैसे ही उसने चाबी रखी, खिड़की से ठंडी हवा का एक झोंका आया। दीवार पर टंगी राजवीर सिंह की तस्वीर हल्की-सी हिलने लगी।

आरव को ऐसा लगा जैसे किसी ने धीमे से कहा—"धन्यवाद..." उसने पलटकर देखा। कमरा खाली था। लेकिन इस बार उसे डर नहीं लगा। उसके चेहरे पर संतोष था। हवेली से बाहर निकलते समय सूरज पहाड़ों के पीछे ढल रहा था। आसमान सुनहरे रंग में रंग चुका था।

आरव ने अपनी डायरी निकाली और आख़िरी पंक्ति लिखी—"हर यात्रा सिर्फ़ मंज़िल तक नहीं ले जाती। कुछ यात्राएँ इतिहास से मिलवाती हैं, कुछ इंसानियत से, और कुछ ऐसी सच्चाइयों से, जो समय के अंधेरे में खो चुकी होती हैं। असली यात्री वही है, जो सिर्फ़ रास्ते नहीं, बल्कि कहानियाँ भी खोजकर दुनिया के सामने लाए।"

उसने डायरी बंद की, कैमरा कंधे पर टाँगा और मुस्कराते हुए पहाड़ों के बीच जाती उस पगडंडी पर आगे बढ़ गया... क्योंकि उसे पता था—हर मंज़िल के बाद एक नई यात्रा उसका इंतज़ार कर रही है।

07

मुंबई प्रशिक्षण : ज्ञान और अनुभव



श्री विजय कुमार शुक्ल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

14 **जून** 2026 की सुबह मेरे लिए एक नए अनुभव का संदेश लेकर आई। कार्यालय की ओर से मुंबई में आयोजित "All India Training Programme on Accounting Standards, Standards on Auditing and Analysis of Financial Statements" में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। यह प्रशिक्षण मेरे व्यावसायिक ज्ञान को समृद्ध करने और देशभर के अधिकारियों के साथ अनुभव साझा करने का एक महत्वपूर्ण अवसर था।

मैं हैदराबाद के राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से विमान द्वारा मुंबई के लिए रवाना हुआ। विमान ने जैसे ही उड़ान भरी, नीचे फैला शहर, बादलों की श्वेत चादर और दूर-दूर तक दिखाई देने वाला प्राकृतिक सौंदर्य मन को रोमांचित कर रहा था। लगभग डेढ़ घंटे की सुखद यात्रा के बाद विमान मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा। मुंबई की ऊर्जा, अनुशासन और गतिशीलता ने पहली ही झलक में अपनी विशेष पहचान का एहसास करा दिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों से आए भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के अधिकारियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान लेखांकन मानकों (Accounting Standards), लेखापरीक्षण मानकों (Standards on Auditing) तथा वित्तीय विवरणों के विश्लेषण (Analysis of Financial Statements) जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञों ने विस्तृत एवं व्यावहारिक व्याख्यान दिए। वास्तविक अध्ययन-प्रकरणों (Case Studies), समूह चर्चाओं तथा प्रश्नोत्तर सत्रों ने प्रशिक्षण को अत्यंत प्रभावी बना दिया। इन सत्रों से न केवल तकनीकी ज्ञान में वृद्धि हुई, बल्कि लेखापरीक्षा के बदलते परिदृश्य को समझने की नई दृष्टि भी प्राप्त हुई।

प्रशिक्षण का एक विशेष आकर्षण देश के विभिन्न कार्यालयों से आए अधिकारियों के साथ संवाद और अनुभवों का आदान-प्रदान रहा। विभिन्न राज्यों की कार्य-पद्धतियों, चुनौतियों और नवाचारों पर हुई चर्चाओं ने यह अनुभव कराया कि सीखने की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है और सामूहिक ज्ञान से कार्य की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार लाया जा सकता है।

प्रशिक्षण के उपरांत अवकाश के कुछ क्षणों का सदुपयोग करते हुए मुझे मुंबई के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों का भ्रमण करने का अवसर मिला। सबसे पहले मैंने गेटवे ऑफ इंडिया का अवलोकन किया, जो भारत के ऐतिहासिक गौरव और स्थापत्य कला का अनुपम प्रतीक है। इसके सामने फैला अरब सागर और वहाँ का शांत वातावरण मन को विशेष रूप से आकर्षित कर रहा था। इसके बाद मरीन ड्राइव पहुँचा, जहाँ समुद्र की उठती-गिरती लहरें, ठंडी समुद्री हवाएँ और सूर्यास्त का मनोहर दृश्य एक अविस्मरणीय अनुभव बन गया। सायंकाल मरीन ड्राइव पर टहलते हुए ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो पूरा शहर अपनी व्यस्त दिनचर्या के बाद कुछ पल प्रकृति की गोद में सुकून तलाश रहा हो।

इस यात्रा के दौरान मुझे श्री सिद्धि विनायक गणपति मंदिर में भगवान श्री गणेश तथा महालक्ष्मी मंदिर में माता महालक्ष्मी के दर्शन करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। मंदिरों का शांत, आध्यात्मिक एवं भक्तिमय वातावरण मन को गहरी शांति और नई ऊर्जा से भर गया। दर्शन के उपरांत आत्मिक संतोष की अनुभूति हुई, जिसने इस यात्रा को केवल ज्ञानवर्धक ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक दृष्टि से भी अविस्मरणीय बना दिया। अवसर मिलते ही मैंने मुंबई के प्रसिद्ध वड़ा पाव और अन्य स्थानीय व्यंजनों का स्वाद भी लिया, जिसने यात्रा को और अधिक यादगार बना दिया। इसके पश्चात जुहू चौपाटी जाने का अवसर मिला। वहाँ का जीवंत वातावरण, समुद्र तट पर उमड़ती लोगों की भीड़, बच्चों की चहल-पहल और स्थानीय व्यंजनों की सुगंध ने मुंबई की सांस्कृतिक विविधता और जीवन्तता का परिचय कराया। साथ ही, छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस की ऐतिहासिक एवं भव्य इमारत को देखकर भारतीय

वास्तुकला और विरासत के प्रति गर्व की अनुभूति हुई। यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल इस भवन की उत्कृष्ट शिल्पकला और भव्यता वास्तव में दर्शनीय है।

इन स्थलों के भ्रमण ने यह अनुभव कराया कि मुंबई केवल भारत की आर्थिक राजधानी ही नहीं, बल्कि इतिहास, संस्कृति, आधुनिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम भी है। प्रशिक्षण के साथ-साथ इस शहर को निकट से जानने और उसकी जीवंत संस्कृति का अनुभव करने का अवसर मेरी इस यात्रा को और भी अधिक यादगार एवं प्रेरणादायक बना गया।

20 जून 2026 को प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण कर मैं विमान द्वारा हैदराबाद लौट आया। यह यात्रा केवल एक प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं थी, बल्कि ज्ञान, अनुभव, आत्मविश्वास और नई प्रेरणा से भर देने वाली एक अविस्मरणीय सीख थी। इस प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान निश्चित रूप से भविष्य में लेखांकन, लेखापरीक्षण तथा वित्तीय विवरणों के विश्लेषण से संबंधित दायित्वों के निर्वहन में उपयोगी सिद्ध होगा। मुंबई की यह यात्रा मेरे सेवा काल की एक ऐसी अविस्मरणीय स्मृति बन गई है, जिसने यह सिखाया कि प्रत्येक प्रशिक्षण केवल ज्ञान प्राप्त करने का अवसर नहीं होता, बल्कि नए दृष्टिकोण विकसित करने, नए लोगों से जुड़ने और स्वयं को निरंतर बेहतर बनाने की एक प्रेरणादायक यात्रा भी होता है।

सरकारी कामकाज हिंदी में करना
कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है।

आप शुरू तो कीजिए धीरे-धीरे
आपको लगने लगेगा ये तो बहुत
ही आसान है।

08

कर्मभूमि से जन्मभूमि: एक अविस्मरणीय एकल सड़क यात्रा



श्री रोहन कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

"कभी-कभी मंज़िल से अधिक खूबसूरत वह रास्ता होता है, जो हमें वहाँ तक पहुँचाता है।"

कुछ यात्राएँ ऐसी होती हैं, जिनकी योजना तो हम कुछ दिनों पहले बनाते हैं, लेकिन उनकी यादें जीवनभर हमारे साथ रहती हैं। वर्ष 2025 में की गई मेरी हैदराबाद से सीतामढ़ी (बिहार) तक की सड़क यात्रा मेरे लिए ऐसी ही एक अविस्मरणीय यात्रा है। यह केवल लगभग 1700 किलोमीटर की दूरी तय करने का अनुभव नहीं था, बल्कि आत्मविश्वास, धैर्य, प्रकृति, आस्था और जीवन के पुराने पड़ावों से दोबारा मिलने का भी अवसर था। सबसे विशेष बात यह थी कि यह मेरी **पहली एकल (Solo) रोड ट्रिप** थी।

ड्राइविंग हमेशा से मेरी रुचि रही है। जब भी अवसर मिलता है, स्वयं वाहन चलाना मुझे अच्छा लगता है। शायद यही कारण था कि जब हैदराबाद से अपने गृह जिला सीतामढ़ी जाने का अवसर आया, तो मन में विचार आया कि इस बार रेल या विमान से नहीं, बल्कि अपनी कार से घर चला जाए। परिवार को स्वाभाविक रूप से थोड़ी चिंता थी, क्योंकि लगभग 1700 किलोमीटर की दूरी अकेले तय करना कोई छोटा निर्णय नहीं था। लेकिन मन में विश्वास था कि यदि तैयारी पूरी हो, वाहन अच्छी स्थिति में हो और पूरे सफर में संयम रखा जाए, तो यह यात्रा सुरक्षित और यादगार दोनों बन सकती है।

यात्रा शुरू करने से पहले कार की सर्विसिंग कराई, टायरों की जाँच कराई, सभी आवश्यक दस्तावेज व्यवस्थित किए और रास्ते के लिए आवश्यक सामान साथ रखा। मेरी योजना दो दिनों में यात्रा पूरी करने की थी। पहले दिन लगभग 752 किलोमीटर चलकर जबलपुर पहुँचना था और दूसरे दिन 948 किलोमीटर की दूरी तय करके सीतामढ़ी पहुँचना था। पूरी यात्रा में लगभग 26 घंटे ड्राइविंग हुई। कुल मिलाकर लगभग ₹10,680 का पेट्रोल, ₹2,500 का टोल लगा और मेरी कार ने लगभग 18 किलोमीटर प्रति लीटर का औसत दिया।

- **पहला दिन : हैदराबाद से जबलपुर**

सुबह-सुबह हैदराबाद से निकलते समय सड़कें अपेक्षाकृत खाली थीं। शहर धीरे-धीरे पीछे छूट रहा था और सामने लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग मेरा इंतज़ार कर रहा था। शुरू के कुछ किलोमीटर तक मन में हल्का-सा संकोच था, लेकिन जैसे-जैसे दूरी बढ़ती गई, आत्मविश्वास भी बढ़ता गया।

राष्ट्रीय राजमार्ग (NH-44) पर गाड़ी चलाने का अनुभव बेहद सुखद रहा। चौड़ी और बेहतरीन सड़कें, व्यवस्थित ट्रैफिक और रास्ते भर बदलते प्राकृतिक दृश्य यात्रा को आनंददायक बना रहे थे। कहीं दूर तक फैले खेत दिखाई देते, कहीं छोटे-छोटे गाँव और

कस्बे, तो कहीं सड़क के दोनों ओर हरियाली मन को ताज़गी से भर देती। अकेले सफर का अपना अलग आनंद होता है। कई लोग सोचते हैं कि अकेले इतनी लंबी दूरी तय करना कठिन होगा, लेकिन मुझे ऐसा बिल्कुल नहीं लगा। इसका एक बड़ा कारण मेरी ड्राइविंग में रुचि थी और दूसरा कारण था—संगीत।

पूरे सफर में कार का म्यूज़िक सिस्टम मेरा सबसे अच्छा साथी बना रहा। कभी पुराने हिंदी फिल्मी गीत, कभी किशोर कुमार और मोहम्मद रफ़ी की आवाज़, तो कभी नए दौर के मधुर गीत—सड़क के साथ-साथ संगीत भी चलता रहा। कई बार कोई गीत बीते दिनों की याद दिला देता तो कभी कोई उत्साहवर्धक धुन लंबी ड्राइव में नई ऊर्जा भर देती।

धीरे-धीरे महसूस हुआ कि एकल यात्रा का सबसे बड़ा आनंद यही है कि आप स्वयं के साथ समय बिताते हैं। रोज़मर्रा की भागदौड़ में जो बातें सोचने का समय नहीं मिलता, लंबी सड़कें आपको वही अवसर देती हैं। इस यात्रा में मैंने स्वयं से सबसे अधिक बातचीत की।

कुछ घंटों बाद महाराष्ट्र की सीमा में प्रवेश हुआ और रास्ते का भूगोल बदलने लगा। नागपुर की ओर बढ़ते हुए मेरी यात्रा का सबसे रोमांचक अनुभव सामने आया—**पेंच टाइगर रिजर्व**।

पेंच टाइगर रिजर्व देश के प्रमुख बाघ अभयारण्यों में से एक है। यह वही जंगल है, जिसे 'द जंगल बुक' की प्रेरणा माना जाता है। राष्ट्रीय राजमार्ग का एक हिस्सा इस संरक्षित वन क्षेत्र के ऊपर बने लंबे **एलिवेटेड कॉरिडोर** से होकर गुजरता है। इस व्यवस्था का उद्देश्य यह है कि वन्यजीवों का प्राकृतिक आवागमन बाधित न हो और सड़क भी सुचारु रूप से चलती रहे।

जब मेरी कार उस लंबे फ्लाईओवर पर दौड़ रही थी, तब नीचे दूर-दूर तक फैला घना जंगल दिखाई दे रहा था। मन में अनायास यह विचार आया कि शायद इन्हीं जंगलों में कहीं बाघ अपने प्राकृतिक आवास में विचरण कर रहे होंगे। यद्यपि मुझे कोई वन्यजीव दिखाई नहीं दिया, लेकिन उस जंगल के ऊपर से गुजरने का अनुभव अपने आप में रोमांच से भर देने वाला था। आधुनिक विकास और प्रकृति संरक्षण का ऐसा संतुलन देखकर अच्छा लगा।

नागपुर पार करते-करते शाम होने लगी। लगातार कई घंटे ड्राइव करने के बाद थकान भी महसूस होने लगी थी। मैंने पहले से तय योजना के अनुसार रात के विश्राम के लिए **जबलपुर** में रुकने का निर्णय लिया।

- **जबलपुर में महाकुंभ की कहानी**

होटल में चेक-इन करने के बाद सामान्य बातचीत के दौरान होटल संचालक को जब पता चला कि मैं हैदराबाद से अकेले कार चलाकर आ रहा हूँ, तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, *"आप तो सही समय पर आए हैं। महाकुंभ के दिनों में यहाँ की स्थिति बिल्कुल अलग थी।"*

उन्होंने बताया कि प्रयागराज में महाकुंभ के दौरान इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालु उत्तर भारत की ओर जा रहे थे कि जबलपुर जैसे शहरों के अधिकांश होटल पूरी तरह भर जाते थे। कई लोगों को कमरे नहीं मिलते थे। अनेक परिवार अपनी गाड़ियों में ही रात बिताते थे, तो कई लोग होटलों के बाहर, पार्किंग या खुले स्थानों में चादर बिछाकर विश्राम करते थे। उन्होंने कहा कि उन दिनों सड़कें और होटल यात्रियों से इतने भरे रहते थे कि सामान्य दिनों की कल्पना करना भी कठिन था।

उनकी बातें सुनकर मुझे महाकुंभ की विराटता का अनुमान हुआ और अगले दिन प्रयागराज पहुँचने की उत्सुकता और भी बढ़ गई।

- **दूसरा दिन : जबलपुर से प्रयागराज**

अगली सुबह जल्दी ही मैं फिर यात्रा पर निकल पड़ा। मध्य प्रदेश की शांत सड़कों को पार करते हुए उत्तर प्रदेश की ओर बढ़ रहा था। इस दिन मुझे लगभग 950 किलोमीटर की दूरी तय करनी थी, इसलिए समय का विशेष ध्यान रखना था। कुछ घंटों बाद मैं प्रयागराज पहुँचा। मेरी यह यात्रा महाकुंभ समाप्त होने के कुछ दिनों बाद की थी। मुख्य आयोजन समाप्त हो चुका था, लेकिन पूरे शहर में उसकी भव्यता की छाप अभी भी स्पष्ट दिखाई दे रही थी। कई स्थानों पर अस्थायी संरचनाएँ मौजूद थीं और श्रद्धालुओं का आना-जाना भी जारी था। ऐसा महसूस हो रहा था कि विशाल आयोजन की गूँज अभी भी शहर की हवा में तैर रही है।

सबसे पहले मैं त्रिवेणी संगम पहुँचा। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम भारतीय संस्कृति और आस्था का अद्भुत प्रतीक है। कुछ देर वहीं बैठकर मैंने उस वातावरण को महसूस किया। जल की शांत धारा, दूर चलती नावें और श्रद्धा से भरे लोगों

को देखकर मन स्वतः शांत हो गया। इसके बाद मैंने प्रसिद्ध **लेटे हुए हनुमान जी मंदिर** में दर्शन किए। मंदिर में कुछ समय बिताने के बाद मन को एक विशेष शांति का अनुभव हुआ।लेकिन प्रयागराज मेरे लिए केवल धार्मिक महत्व का शहर नहीं है। इस शहर से मेरी अपनी भी अनेक स्मृतियाँ जुड़ी हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के दौरान मैंने लगभग तीन वर्ष यहीं बिताए थे। यहीं से मैंने अपनी बी.एड. की पढ़ाई पूरी की। यही वह शहर है जहाँ सपने देखे, संघर्ष किया, असफलताओं से सीखा और आगे बढ़ने का साहस पाया।

समय निकालकर मैं अपने कुछ पुराने मित्रों से भी मिला। वर्षों बाद हुई मुलाकात में वही अपनापन था। बातचीत शुरू हुई तो तैयारी के दिन, पुस्तकालय, कोचिंग संस्थान, कमरा, नोट्स, परीक्षाएँ और भविष्य के सपने—सब कुछ एक-एक करके याद आने लगा। कुछ मुलाकातें छोटी होती हैं, लेकिन उनकी स्मृतियाँ बहुत गहरी होती हैं। यह मुलाकात भी वैसी ही रही।

- **वाराणसी : जहाँ से व्यक्तित्व को नई दिशा मिली**

प्रयागराज से आगे बढ़ते हुए मेरा मार्ग वाराणसी से होकर था। मेरे लिए वाराणसी केवल बाबा विश्वनाथ की नगरी नहीं है। यह मेरे जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय भी है। मैंने अपने जीवन के तीन वर्ष काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (Banaras Hindu University) में बिताए, जहाँ से मैंने स्नातक की पढ़ाई पूरी की।

शहर की सीमा में प्रवेश करते ही विश्वविद्यालय के वे दिन याद आने लगे। विशाल सिंहद्वार, हरा-भरा परिसर, विभाग, छात्रावास, मित्रों के साथ बिताए अनगिनत पल—सब कुछ स्मृतियों में फिर से जीवंत हो उठा। छात्र जीवन केवल डिग्री प्राप्त करने का समय नहीं होता, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण चरण होता है। BHU में बिताए गए उन वर्षों ने मुझे सोचने, सीखने और जीवन को व्यापक दृष्टि से देखने की प्रेरणा दी। समयाभाव के कारण इस बार विश्वविद्यालय परिसर या बाबा विश्वनाथ मंदिर जाना संभव नहीं था, लेकिन मन ही मन काशी को प्रणाम करते हुए मैं आगे अपने घर की ओर बढ़ गया।

- **घर वापसी**

वाराणसी से आगे का रास्ता अब परिचित लगने लगा था। बिहार की सीमा में प्रवेश करते ही मन में एक अलग ही अपनापन महसूस हुआ। खेत, गाँव, सड़कें—सब कुछ जैसे बचपन की यादें ताज़ा कर रहे थे।

लगभग 26 घंटे की कुल ड्राइविंग पूरी करने के बाद जब मैं अपने गृह जिला **सीतामढ़ी** पहुँचा, तो मन में जो संतोष था, उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। यह केवल घर पहुँचने की खुशी नहीं थी, बल्कि स्वयं पर किए गए विश्वास की सफलता का आनंद भी था।

- **इस यात्रा ने मुझे क्या दिया?**

आज जब उस यात्रा को याद करता हूँ, तो महसूस करता हूँ कि मैं केवल हैदराबाद से सीतामढ़ी नहीं लौटा था। मैं अपने जीवन के अलग-अलग पड़ावों से भी होकर गुज़रा था।

हैदराबाद ने वर्तमान कर्मभूमि की याद दिलाई।
पेंच के जंगलों ने प्रकृति और विकास के सुंदर संतुलन का संदेश दिया।
जबलपुर ने महाकुंभ की विराटता की एक सजीव झलक सुनाई।
प्रयागराज ने संघर्ष, सपनों और पुराने मित्रों से दोबारा मिलाया।
वाराणसी ने छात्र जीवन की मधुर स्मृतियों को फिर से जीवंत कर दिया।
और अंत में **सीतामढ़ी** ने घर लौटने का वह सुकून दिया, जिसकी तुलना किसी भी उपलब्धि से नहीं की जा सकती।

इस यात्रा ने मुझे यह भी सिखाया कि एकल (Solo) रोड ट्रिप केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने का माध्यम नहीं होती, बल्कि स्वयं को समझने और अपने साथ समय बिताने का एक अनमोल अवसर होता है। जब निर्णय स्वयं लेने हों, रास्ता स्वयं चुनना हो और हर परिस्थिति का सामना स्वयं करना हो, तब आत्मविश्वास स्वाभाविक रूप से मजबूत होता जाता है।

आज भी जब उस सफर को याद करता हूँ, तो किलोमीटर, पेट्रोल और टोल से अधिक वे दृश्य याद आते हैं—कार में बजते गीत, लंबी शांत सड़कें, पेंच का जंगल, जबलपुर की वह बातचीत, संगम का शांत वातावरण, मित्रों की मुस्कान, BHU की यादें और अंत में अपने घर का आँगन।

इस सुखद एवं सुरक्षित यात्रा के लिए ईश्वर का बहुत आभार प्रकट करता हूँ।

मेरी पहली एकल सड़क यात्रा ने मुझे यह विश्वास दिया कि भारत को समझने का सबसे सुंदर माध्यम उसकी सड़कें हैं और स्वयं को समझने का सबसे अच्छा माध्यम एक लंबी, शांत और उद्देश्यपूर्ण यात्रा।

शायद यही कारण है कि इस यात्रा की मंज़िल से अधिक, उसका सफर आज भी मेरी स्मृतियों में जीवंत है।

09

सफल जीवन के आठ मूल मंत्र



श्री के. वासु मित्रा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

1) प्रेम और सम्मान

प्रेम और सम्मान हर मजबूत रिश्ते की नींव हैं। प्रेम लोगों को एक-दूसरे के करीब लाता है, जबकि सम्मान, विश्वास, समझ और स्थायी खुशी पैदा करता है। जब हम दूसरों के साथ दया भाव से पेश आते हैं और उनकी भावनाओं का सम्मान करते हैं, तब हम स्वस्थ मित्रता और सुखी परिवार का निर्माण करते हैं।

सम्मान का अर्थ है ध्यानपूर्वक सुनना, विनम्रता से बोलना और बिना किसी भेदभाव या पूर्वाग्रह के दूसरों के विचारों को स्वीकार करना। प्रेम हमें क्षमा करना, सहयोग देना और सुख-दुःख दोनों में एक-दूसरे का साथ निभाना सिखाता है।

प्रेम और सम्मान मिलकर जीवन में सामंजस्य स्थापित करते हैं, रिश्तों को मजबूत बनाते हैं, आत्मविश्वास बढ़ाते हैं और जीवन को अधिक अर्थपूर्ण एवं आनंदमय बनाते हैं। इसलिए हमें हर व्यक्ति के साथ प्रेम और सम्मान का व्यवहार करना चाहिए।

2) कृतज्ञता

कृतज्ञता जीवन में मिलने वाली दया, सहायता और आशीर्वाद के प्रति आभार व्यक्त करने की आदत है। यह हमें अपने परिवार, मित्रों, शिक्षकों और उन सभी लोगों के प्रति धन्यवाद देना सिखाती है जो हमारा सहयोग करते हैं।

एक कृतज्ञ व्यक्ति खुशियाँ फैलाता है, मजबूत रिश्ते बनाता है और मानसिक शांति का अनुभव करता है। कृतज्ञता, दया भाव, उदारता और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को भी बढ़ावा देती है।

प्रतिदिन धन्यवाद व्यक्त करने से हम अधिक विनम्र, सम्मानपूर्ण और संतुष्ट बनते हैं। कृतज्ञता का अभ्यास हमें जीवन की अच्छी बातों पर ध्यान केंद्रित करना सिखाता है, दूसरों की सहायता करने के लिए प्रेरित करता है और हमारे चरित्र को मजबूत बनाते हुए स्थायी आनंद प्रदान करता है।

3) सकारात्मक सोच

सकारात्मक सोच आशावादी दृष्टिकोण रखने और यह विश्वास करने की आदत है। यह कठिन परिस्थितियों में भी लोगों को शांत रहने और हार मानने के बजाय समाधान खोजने के लिए प्रेरित करती है।

सकारात्मक सोच रखने वाले लोग अपनी गलतियों से सीखते हैं और आत्मविश्वास के साथ अपने लक्ष्यों की ओर लगातार आगे बढ़ते रहते हैं। वे अपनी आशा और दृढ़ संकल्प से दूसरों को भी प्रेरित करते हैं।

सकारात्मक सोच मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, रिश्तों को मजबूत करता है और सफलता की संभावनाओं को बढ़ाता है। प्रतिदिन सकारात्मक सोच रखने से व्यक्ति अधिक खुश, स्वस्थ और सफल बनता है।

4) अनुशासन

अनुशासन नियमों का पालन करने, समय का सदुपयोग करने और सही कार्यों को निरंतर करने की आदत है। यह व्यक्ति में आत्म-नियंत्रण, जिम्मेदारी और अच्छे चरित्र का विकास करता है।

अनुशासित व्यक्ति अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहता है, मेहनत करता है और आसानी से हार नहीं मानता। अनुशासन शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार लाता है, आत्मविश्वास बढ़ाता है और जीवन के हर क्षेत्र में सफलता की ओर ले जाता है।

यह दूसरों के प्रति सम्मान की भावना विकसित करता है और सकारात्मक व्यवहार को प्रोत्साहित करता है। इसलिए अनुशासन व्यक्तिगत विकास, उपलब्धियों और सफल भविष्य की आधारशिला है। प्रतिदिन अनुशासन का पालन करके हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं और जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं।

5) अनुशासन और सफलता

अनुशासन और सफलता एक-दूसरे के पूरक हैं। अनुशासन व्यक्ति को अपने लक्ष्यों पर केंद्रित रहने और समय का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने में सहायता करता है। यह आत्म-नियंत्रण, जिम्मेदारी और समर्पण की भावना विकसित करता है।

अनुशासित लोग कठिन परिश्रम करते हैं, अनावश्यक विचलनों से बचते हैं और अपने कार्यों के प्रति पूरी निष्ठा बनाए रखते हैं। अनुशासन कठिनाइयों का सामना करने और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने की शक्ति देता है।

सफलता आसानी से नहीं मिलती; इसके लिए निरंतर प्रयास और दृढ़ संकल्प आवश्यक है। इसलिए अनुशासन सफलता प्राप्त करने, व्यक्तिगत विकास करने और उज्ज्वल भविष्य बनाने का एक महत्वपूर्ण आधार है।

6) कड़ी मेहनत

कड़ी मेहनत से प्राप्त सफलता जीवन का एक महत्वपूर्ण पाठ है। कठिन परिश्रम व्यक्ति को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और चुनौतियों का सामना करने में सहायता करता है। यह अनुशासन, धैर्य और दृढ़ संकल्प सिखाता है।

सफल लोग केवल भाग्य पर निर्भर नहीं रहते; वे निरंतर मेहनत करते हैं और कभी हार नहीं मानते। हर प्रयास उन्हें उनके सपनों के और अधिक करीब ले जाता है।

कड़ी मेहनत आत्मविश्वास बढ़ाती है और कौशल में सुधार करती है। समर्पण और निरंतर प्रयास से कोई भी व्यक्ति सफलता प्राप्त कर सकता है। इसलिए कठिन परिश्रम उज्ज्वल भविष्य और सफल जीवन की कुंजी है। यह व्यक्ति को आगे बढ़ने और अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने में मदद करता है।

7) एक सकारात्मक सोच

सकारात्मक सोच आशावादी दृष्टिकोण रखने और समस्याओं के बजाय अवसरों पर ध्यान केंद्रित करने की आदत है। यह कठिन परिस्थितियों में भी व्यक्ति को प्रेरित, आत्मविश्वासी और आशावान बनाए रखती है।

सकारात्मक सोच मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करती है, तनाव कम करती है और बेहतर निर्णय लेने की क्षमता विकसित करती है। सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले लोग चुनौतियों का सामना करने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की अधिक संभावना रखते हैं।

यह मजबूत रिश्ते बनाने और जीवन के प्रति खुशहाल दृष्टिकोण विकसित करने में भी सहायता करती है। कृतज्ञता और आत्मविश्वास का अभ्यास करके कोई भी व्यक्ति सकारात्मक सोच विकसित कर सकता है तथा अधिक सफलता और व्यक्तिगत विकास का आनंद ले सकता है।

8) माता-पिता का सम्मान

माता-पिता का सम्मान जीवन के सबसे महत्वपूर्ण मूल्यों में से एक है। माता-पिता अपने बच्चों से प्रेम करते हैं, उनकी देखभाल करते हैं और जीवन के हर चरण में उनका साथ देते हैं। वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा, सही मार्गदर्शन और उज्ज्वल भविष्य के अवसर प्रदान करने के लिए अनगिनत त्याग करते हैं।

माता-पिता का सम्मान करने का अर्थ है उनकी बात ध्यान से सुनना, उनसे विनम्रता से बात करना, आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता करना और उनके द्वारा किए गए हर त्याग एवं उपकार के प्रति आभार व्यक्त करना। यदि कभी विचारों में मतभेद भी हो जाए, तब भी हमें उनके साथ धैर्य, कृतज्ञता और समझदारी से व्यवहार करना चाहिए।

उनका अनुभव और ज्ञान हमें बेहतर निर्णय लेने में सहायता करता है। सरल शब्दों में, माता-पिता का सम्मान करना अच्छे चरित्र और उच्च संस्कारों की पहचान है। उनका आदर और सेवा करके हम अपने परिवार को और अधिक मजबूत बनाते हैं तथा प्रेम, कृतज्ञता और स्थायी सुख से भरपूर जीवन का निर्माण करते हैं।

10 कार्यालय और राजभाषा



श्री लोकेश चंद्र लाल
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

भारत जैसे विशाल, बहुभाषी और विकासशील लोकतांत्रिक देश में शासन की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि नीतियाँ किस प्रकार बनाई जाती हैं, उनका क्रियान्वयन किस स्तर पर होता है, और वित्तीय संसाधनों का उपयोग कितनी पारदर्शिता के साथ किया जाता है। किसी भी राष्ट्र की आर्थिक रीढ़ उसकी वित्तीय सुदृढ़ता और लेखापरीक्षा प्रणाली पर टिकी होती है। भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग (IA&AD) देश के वित्तीय अनुशासन का प्रहरी है। इस बहुआयामी और वृहद प्रणाली में जब राजभाषा हिंदी का समावेश होता है, तो यह केवल एक संवैधानिक अनुपालन या औपचारिकता मात्र नहीं रह जाती, बल्कि यह लोकतंत्र की मूल भावना—'जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा शासन'—को चरितार्थ करने का सबसे सशक्त साधन बन जाती है।

हैदराबाद स्थित लेखापरीक्षा व लेखा कार्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में, जो दक्षिण भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और औद्योगिक पृष्ठभूमि में कार्य करते हैं, राजभाषा हिंदी का प्रयोग प्रशासनिक गतिशीलता, जन-सुलभता और अंतर्संबंधों को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कर रहा है। यह लेख इसी संदर्भ में लेखापरीक्षा और राजभाषा के गहन अंतर्संबंधों, कार्यालयीन चुनौतियों, डिजिटल युग की संभावनाओं और भविष्य के रोडमैप का एक विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

भारतीय संविधान निर्माताओं ने देश की विविधता को ध्यान में रखते हुए एक ऐसी भाषा नीति की परिकल्पना की जो राष्ट्रीय एकता को सूत्रबद्ध कर सके। संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार, संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। इसके साथ ही, राजभाषा अधिनियम, 1963 और राजभाषा संकल्प, 1968 के प्रावधानों ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को अनिवार्य और सुगम बनाने के लिए स्पष्ट निर्देश दिए हैं।

लेखापरीक्षा कार्यालयों में इन नियमों का पालन करना न केवल वैधानिक दायित्व है, बल्कि यह देश के नागरिकों के प्रति हमारी नैतिक प्रतिबद्धता भी है। जब सरकारी योजना के निधि के उपयोग की जाँच (ऑडिट) की जाती है, तो उस जाँच के निष्कर्षों और आपत्तियों का आधार देश की राजभाषा हिंदी/ संबंधित प्रांतीय भाषा होना चाहिए, ताकि आम जनमानस यह समझ सके कि उनके कर के धन का उपयोग किस प्रकार हो रहा है।

लेखापरीक्षा का मूल उद्देश्य सरकारी विभागों, स्वायत्त निकायों और सार्वजनिक उपक्रमों द्वारा किए जाने वाले व्यय की वैधता, औचित्य और वित्तीय अनियमितताओं को उजागर करना तथा उनमें सुधार के उपाय सुझाना है। इस संपूर्ण प्रक्रिया में भाषा की स्पष्टता सबसे महत्वपूर्ण घटक है।

ऑडिट रिपोर्टें तकनीकी और वित्तीय जटिलताओं से भरी होती हैं। यदि इन रिपोर्टों की भाषा अत्यधिक जटिल अंग्रेजी या दुर्बोध शब्दावली तक सीमित रहे, तो संबंधित विभाग के क्षेत्रीय कर्मचारियों और आम जनता के लिए इसे समझना कठिन हो जाता है। जब लेखापरीक्षा के संस्मरण, पैरा और रिपोर्ट हिंदी में तैयार किए जाते हैं, तो उनका अर्थ अधिक स्पष्ट होता है। सुबोध हिंदी में लिखी गई आपत्तियों का उत्तर देना और उनका समाधान खोजना भी आसान हो जाता है।

लोक लेखा समिति (Public Accounts Committees) और विधानमंडलों के समक्ष प्रस्तुत होने वाले प्रतिवेदन यदि राजभाषा में उपलब्ध हों, तो जन प्रतिनिधि भी वित्तीय मामलों की गहराई को अधिक सहजता से समझ सकते हैं। यह लोकतंत्र के

तीन प्रमुख स्तंभों—विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका—के साथ-साथ नागरिकों के बीच एक अटूट विश्वास का निर्माण करता है।

हैदराबाद, जिसे 'मोती और मूँगे का शहर' तथा आधुनिक भारत के प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी (IT) और अनुसंधान केंद्रों में गिना जाता है, अपनी अनूठी बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहाँ तेलुगु, उर्दू और अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी एक बहुत बड़ा और प्रभावी वर्ग मौजूद है।

लेखापरीक्षा कार्यालय, हैदराबाद में देश के विभिन्न प्रांतों से अधिकारी और कर्मचारी अपनी सेवाएँ देने आते हैं। भाषाई विविधता के इस परिवेश में हिंदी एक सर्वमान्य संपर्क भाषा (Link Language) के रूप में कार्य करती है। जब विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोग आपस में संवाद करते हैं, तो हिंदी भाषा किसी भी प्रकार की वैचारिक या संवाद संबंधी बाधा को समाप्त कर देती है।

अक्सर यह भ्रांति फैलाई जाती है कि दक्षिण भारत में हिंदी के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण है, परंतु प्रशासनिक और व्यावहारिक धरातल पर यह सत्य नहीं है। हैदराबाद जैसे महानगरीय और शैक्षणिक हब में यदि हिंदी का प्रयोग शालीनता, आत्मीयता और कार्य-सुगमता के दृष्टिकोण से किया जाए, तो लोग इसे खुले दिल से अपनाते हैं। लेखापरीक्षा कार्यालयों में जब आम नागरिकों या ऑडिट किए जाने वाले कार्यालयों के अधिकारियों के साथ हिंदी में शिष्ट संवाद किया जाता है, तो कार्य और भी अधिक सुगमता से संपन्न होते हैं।

पिछली शताब्दी के उत्तरार्ध तक सरकारी कार्यालयों में हिंदी टाइपिंग, फॉन्ट की समस्या और मैनुअल कार्य एक बड़ी चुनौती हुआ करती थी। परंतु इक्कीसवीं सदी के इस डिजिटल और तकनीकी युग में परिदृश्य पूरी तरह बदल चुका है।

आज लेखापरीक्षा कार्यालयों में 'ई-ऑफिस' प्रणाली का व्यापक प्रसार हो चुका है। फाइलों के नोटिंग, ड्राफ्टिंग और पत्राचार अब डिजिटल माध्यम से होते हैं। यूनिकोड आधारित फॉन्ट के आने से अब किसी भी कंप्यूटर या मोबाइल पर हिंदी में बिना किसी फॉन्ट करप्शन के कार्य करना बेहद आसान हो गया है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विकसित अनुवाद सारथी जैसे मेमोरी-आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर ने प्रशासनिक अनुवाद के कार्य को क्रांतिकारी रूप से सरल बना दिया है। इसके अलावा, गूगल ट्रांसलेशन, माइक्रोसॉफ्ट इंडिक इनपुट टूल्स और स्पीच-टू-टेक्स्ट तकनीक ने हिंदी में टाइपिंग की गति को कई गुना बढ़ा दिया है। अब यह बहाना नहीं बनाया जा सकता कि हिंदी में कार्य करना धीमा या जटिल है।

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा तैयार किए गए प्रशासनिक और लेखापरीक्षा से जुड़े शब्द (जैसे—लेखापरीक्षा के लिए Audit, अनुवीक्षण के लिए Monitoring, पारदर्शिता के लिए Transparency आदि) अब पूरी तरह मानकीकृत और सहज हो चुके हैं। इन शब्दों का निरंतर अभ्यास कार्यालयीन हिंदी को और अधिक समृद्ध बनाता है।

राजभाषा के संवैधानिक लक्ष्यों को केवल आदेशों या लक्ष्यों के माध्यम से प्राप्त नहीं किया जा सकता, इसके लिए आंतरिक प्रेरणा और सकारात्मक वातावरण की आवश्यकता होती है। लेखापरीक्षा कार्यालय, हैदराबाद में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उठाए गए निम्नलिखित कदम अत्यंत प्रभावी सिद्ध होते हैं:

- **प्रोत्साहन योजनाएँ और पुरस्कार:** मूल रूप से हिंदी में कामकाज करने, उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए नगद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र की व्यवस्था।
- **कार्यशालाओं का आयोजन:** नियमित अंतराल पर 'राजभाषा अधिनियम व नियम, प्रशासनिक हिंदी और लेखापरीक्षा शब्दावली, टिप्पण एवं प्रारूपण, अनुवाद आईटी टूल्स, आदि' पर व्यावहारिक कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए, जिसमें कर्मचारियों की झिझक को दूर किया जा सके।

- **हिंदी पखवाड़ा और प्रतियोगिताएं:** सितंबर माह में आयोजित होने वाले हिंदी पखवाड़े को केवल औपचारिकता न बनाकर, इसमें निबंध लेखन, टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता, और वाद-विवाद प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, राजभाषा प्रश्न मंच जैसी गतिविधियों को लेखापरीक्षा विषयों से जोड़ना।

- **पुस्तकालय और पठन सामग्री:** कार्यालय के पुस्तकालय में हिंदी की अच्छी पत्र-पत्रिकाओं, प्रशासनिक पत्रिकाओं और संदर्भ ग्रंथों व शब्दकोशों की उपलब्धता।

राजभाषा हिंदी का विकास किसी एक भाषा या क्षेत्र विशेष का विकास नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण राष्ट्र की वैचारिक स्वतंत्रता, आत्मीयता और प्रशासनिक सुदृढ़ता का प्रतीक है। लेखापरीक्षा व लेखा कार्यालय, हैदराबाद में कार्यरत प्रत्येक कार्मिक के रूप में हमारा यह दायित्व है कि हम अपने दैनिक पत्राचार, फ़ाइलों की टिप्पणियों, और लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों में हिंदी का अधिकाधिक, स्वाभाविक और सुंदर प्रयोग करें।

जब हम अपनी भाषा में कार्य करते हैं, तो हमारे भीतर कार्य के प्रति एक सहज अपनापन और उत्तरदायित्व की भावना जागृत होती है। आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि लेखापरीक्षा के उच्च आदर्शों—स्वच्छता, पारदर्शिता, और वित्तीय अनुशासन—को राजभाषा हिंदी के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाएंगे और कार्यालय प्रबंधन को एक नई दिशा प्रदान करेंगे।



11

तो बात कुछ ऐसी है...



सुश्री मन्जू पन्थी
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

तो बात कुछ ऐसी है कि,

कहानी वही है बस बातें नई हो गयी हैं,

लोग वही हैं बस मुलाकातें नई हो गई हैं।

परम्पराएँ वही हैं, बस तरीके बदल गए हैं,

ज़माने वही हैं, बस लोग अलग हो गए हैं।

हम उस दौर के आदमी हैं साहब... जिसमें,

बच्चे को सरसों के तेल में नहा के, काजल में लपेट के, धूप में सुखाया जाता था,

और ये सनस्क्रीन वाले बच्चे, विटामिन डी की बातें करते हैं।

हम कबड्डी, खो-खो, गिल्ली डंडा खेल के बड़े हुए,

और ये पब-जी वाले लोग, फ़िज़िकल फिटनेस का ज्ञान देते हैं।

तो बात कुछ ऐसी है साहब... कि नया दौर है और नई सी बातें हैं,

2025 की कुछ नई सी यादें हैं।

जहाँ सीता, सावित्री, द्रौपदी हमारी संस्कृति का आधार हैं,

वहीं अखबार की सुर्खियों में नीला ड्रम और मेघालय विहार है।

जहाँ पुरुष समाज में डर का माहौल है, वहीं स्त्रियों के मन में फिर एक सवाल है,

जहाँ तीन चार घटनाओं में पुरुषों का ये हाल है,

तो पूछ उस स्त्री से, वो तो सदियों से बेहाल है।

तो बात कुछ ऐसी है जनाब कि वक़्त बदलता है, जज़्बात बदलते हैं,

कहानी वही है सिर्फ किरदार बदलते हैं, इसलिए

गिले-शिकवे भूल के खुश रहने में ही भलाई है,

वरना क़सूर तो उन 242 यात्रियों का भी न था,

जिनके कागज़ की टिकट उनके कफ़न की रसीद लायी है।

तो बात बस इतनी सी है साहब कि,

सच्चा धर्म वही जिसमें मानवता शर्मसार न हो,

सच्चा कर्म वही जिसमें दुश्मन की भी हार न हो,

गर समस्याएँ है जीवन में तो हल भी ज़रूर होंगे,

गर समस्याएँ हैं जीवन में तो हल भी ज़रूर होंगे,

पर जियो ऐसे कि तुम्हारी साँसों पे कोई भार न हो।

****

12

दोस्तों के साथ मेरी शिलांग यात्रा



श्री विशाल साव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

ऐ मित्र, चलो सफर पे चलें,
नए रास्तों से गुजरते चलें,
कभी पहाड़ों पर, कभी वादियों में,
मस्ती की दुनिया बुनते चलें,
रोज़मर्रा की भागदौड़ छोड़ो,
दोस्ती की मीठी छाप छोड़ो,
चलो हवाओं के साथ उड़ा जाए,
थोड़ा सुकून को भी जी लिया जाए।



मैं अपने स्कूल के दोस्तों के साथ पहली बार घूमने शिलांग जा रहा हूँ। **स्कूल के दोस्त** यह वाक्य अपने आप में कितना सुकून देती है। यह यात्रा हमारे लिए बहुत खास थी, क्योंकि यह न केवल एक नई जगह की खोज करने का अवसर था, बल्कि हमारे आपसी संबंधों को भी और मजबूत करने का मौका मिला। कक्षा 10 की पढ़ाई के बाद लगभग बहुत सारे मित्र अपना-अपना अलग मार्ग चुन लेते हैं और अनजाने में लोग बिछड़ जाते हैं। बिछड़ने से पहले लोग वादें करते हैं कि हम मिलते रहेंगे पर यह संभव नहीं हो पाता है। कुछ मित्र पढ़ाई के सिलसिले में बाहर चले जाते हैं तो किसी का नौकरी अलग राज्य में लग जाता है। पर दोस्ती की असली पहचान तब होती है जब वक्त इन दूरियों को न पाट सकें। वर्ष 2024 ऐसा समय था जब सारे मित्र अपने-अपने करियर में तरक्की कर रहे थे एवं सभी अलग-अलग राज्य में अपने नौकरी पेशा में व्यस्त थे। ऐसे में बहुत मुश्किल था सभी का एक समय पर एक जगह मिल पाना। पर ऐसा कहा जाता है कि समय निकालने से समय निकलता है क्योंकि जब हम कार्य क्षेत्र में प्रवेश करते हैं तो ऐसा प्रायः एक भी दिन नहीं होता कि काम से छुट्टी मिल जाए। करने को आएं तो रविवार और त्योहारों में भी काम करना पड़ जाता है। ऐसे में यह निश्चय किया गया कि सभी अपने रोजमर्रा के कार्य को आराम देंगे और शिलांग घूमने जाएंगे।

हमारी इस यात्रा की शुरुआत ही बहुत रोमांचक थी। हम सभी बहुत उत्साहित थे, क्योंकि यह पहली बार था जब हम दोस्तों के साथ बिना परिवार के घूमने निकले थे। यात्रा का जीवन में एक विशेष महत्व होता है। यह न केवल हमें नई जगहों की सुंदरता से परिचित कराती है, बल्कि हमें अलग-अलग संस्कृतियों, परंपराओं और लोगों के बारे में जानने का भी अवसर देती है। जब हम दोस्तों के साथ यात्रा करते हैं, तो यह अनुभव और भी यादगार और रोमांचक बन जाता है।

शिलांग अपनी प्राकृतिक सुंदरता, हरे-भरे पहाड़ों, झरनों और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। इसे **'पूर्व का स्कॉटलैंड'** भी कहा जाता है। इस यात्रा के दौरान हमने शिलांग पीक, एलीफेंट फॉल्स, उमियाम झील, डबल डेकर रुट ब्रीज, चेरापूंजी, मौलिन्नोंग, 7 सिस्ट्रस फॉल, पुलिस बाजार और माता कामाख्या के मंदिर जैसी कई खूबसूरत जगहों की सैर की। साथ ही, वहां के

स्थानीय खानपान और संस्कृति को करीब से जानने का भी मौका मिला। यह यात्रा हमारे लिए न केवल एक मनोरंजक अनुभव थी, बल्कि यह हमें जीवन भर याद रहने वाली खूबसूरत यादों से भी भर गई।

हमारी इस यात्रा की शुरुआत ढेर सारी योजनाओं और उत्साह से हुई। यात्रा का उत्साह सभी में इतना था कि नींद आँखों से कोसों दूर थी। मन में बस घूमने की धुन सवार थी और बीतने वाला हर एक पल मजेदार पलों की कल्पना में बीत रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि रात कुछ ज्यादा ही लंबी हो गई है और सुबह का इंतज़ार खत्म ही नहीं हो रहा। बार-बार निगाहें घड़ी की ओर देख रही थी, और समय मानो धीरे-धीरे सरक रहा हो। आख़िरकार प्रतीक्षा समाप्त हुई और सुबह की किरण हम सभी के लिए रोमांच की शुरुआत लेकर आई। निर्धारित समय पर हम गाड़ी से कोलकाता एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए। रास्ते भर हंसी-ठिठोली, एक दूसरे का मजाक उड़ाने और सफर की योजनाओं पर चर्चा होती रही। परंतु इस यात्रा का सबसे रोचक पहलू उन मित्रों का अनुभव था, जो पहली बार हवाई जहाज में सवार होने जा रहे थे।

कुछ के चेहरे पर उत्साह की चमक थी, तो कुछ के मन में हल्की घबराहट झलक रही थी। वे कभी अपने टिकट को निहारते, कभी सुरक्षा जांच की प्रक्रिया को ध्यान से देखते। रनवे पर खड़े विशाल विमानों को देखकर उनकी आँखों में जिज्ञासा और रोमांच का अद्भुत मिश्रण दिख रहा था। जैसे ही बोर्डिंग का समय आया, वे अपने कैमरे और मोबाइल निकालकर हर छोटी-बड़ी चीज़ को संजोने लगे—चेक-इन काउंटर, बोर्डिंग पास, रनवे इत्यादि। विमान के भीतर कदम रखते ही उनकी आँखों में कौतूहल और रोमांच की नई लहर दौड़ गई। सीट बेल्ट बाँधते हुए, खिड़की से बाहर झांकते हुए, और टेक-ऑफ के क्षणों में उनकी धड़कनों की गति शायद बादलों से भी तेज़ थी। जैसे ही विमान ने धरती छोड़ आसमान की ओर उड़ान भरी, उनकी खुशी देखने लायक थी। किसी ने हल्की चीख के साथ खुशी जताई, तो कोई मंत्रमुग्ध होकर बादलों के बीच उड़ते इस अनोखे अनुभव को आत्मसात करने में व्यस्त हो गया। किसी ने मुस्कुराते हुए कहा, "अब समझ आया कि बादलों को छूने का अहसास कैसा होता है!" तो किसी ने हल्के संशय से पूछा, "टेक-ऑफ के वक्त झटका तो नहीं लगेगा, ना?

हवाई जहाज से गुवाहाटी एयरपोर्ट पर उतरते ही वहाँ से गाड़ी ली और शिलांग की ओर रवाना हुआ। रास्ते भर हरे-भरे पहाड़ों और घुमावदार सड़कों का नज़ारा मन को शांति दे रहा था। सफर के बीच में एक छोटे-से ढाबे पर रुका, जहाँ गरमा-गरम खाने की महक ने भूख को और बढ़ा दिया। बाहर हल्की बारिश की बूंदें गिर रही थीं, जो पहाड़ी रास्तों को और भी दिलकश बना रही थीं। गाड़ी में धीमे सुरों में संगीत बज रहा था, जिससे सफर का आनंद और बढ़ गया। धीरे-धीरे रास्ते की खूबसूरती और घनी होती चली गई, और फिर पहुँचा उमियम लेक।

उमियम लेक: उमियम लेक का नज़ारा मंत्रमुग्ध करने वाला था—नीला पानी, चारों ओर फैली हरियाली और बादलों से ढकी पहाड़ियाँ जैसे किसी चित्रकार की कल्पना से निकली हुई लग रही थीं। वहाँ कुछ देर ठहरा, प्रकृति की इस अनुपम छटा को निहारा और झील के किनारे सुकून भरे पल बिताए। इसके बाद सफर फिर आगे बढ़ा और आखिरकार होटल पहुँचे।

थोड़ी देर आराम करने के बाद रात को **पुलिस बाजार** की रौनक देखने निकल पड़े। वहाँ की रंग-बिरंगी दुकानें, लोकल स्ट्रीट फूड और चहल-पहल भरे बाजार ने माहौल को और भी जीवंत बना दिया। बाजार की सैर के बाद होटल लौटे, फिर सभी ने मिलकर स्वादिष्ट खाना बनाया और दिनभर की थकान के साथ बिस्तर पर लेटते ही गहरी नींद में डूब गया। सुबह एक और नया रोमांचकारी सफर इंतज़ार कर रहा था, इसलिए मन में उत्साह की हलचल बनी रही।

सुबह की पहली किरण खिड़की से झाँकने लगी, हल्की ठंडी हवा महसूस होते ही एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। हम सब जल्दी से तैयार हुए, उत्साह से भरे चेहरे और दिल में रोमांच लिए सफर की शुरुआत करने को बेताब थे। जैसे ही गाड़ी स्टार्ट हुई, संगीत की मधुर धुन के साथ हमारी गाड़ी शिलांग से चेरापूंजी के लिए रवाना हुई। रास्ते भर ऊँचे-ऊँचे देवदार के पेड़, बादलों से ढके पहाड़ और मीलों तक फैली हरियाली ने पूरे सफर को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके बाद हमने रुख किया Seven Sisters Falls की ओर।

Seven Sisters Falls: पहाड़ों से गिरती इसकी सात धाराएँ इतनी भव्य लग रही थीं, मानो प्रकृति ने इसे खुद अपने हाथों से तराशा हो। झरने की गर्जना और चारों ओर उड़ती पानी की बूँदें पूरे वातावरण को एक जादुई अहसास से भर रही थीं।

फिर वह पल आया जब हमें एक चुनौतीपूर्ण 7000+ सीढ़ियों का ट्रैक करना था। घने जंगलों और संकरे रास्तों के बीच, हर कदम चढ़ना एक कठिन चुनौती बन चुका था। पर दिल में एक उत्साह था और आँखों में उस अद्भुत मंज़िल को देखने की उम्मीद थी। ये सीढ़ियाँ न केवल शारीरिक चुनौती थीं, बल्कि मानसिक दृढ़ता की भी परीक्षा ले रही थीं। हर यात्रा में कुछ न कुछ अप्रत्याशित होता ही है। संकीर्ण सीढ़ियाँ और थकान के कारण हमारे कुछ दोस्त बीमार पड़ गए। लेकिन दोस्ती का मतलब ही यही होता है—मुश्किल समय में एक-दूसरे का साथ देना। हमने मिलकर उनकी देखभाल की, धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ते हुए, अंततः हमने यह मुश्किल ट्रैक पूरा किया और डबल डेकर लिविंग रूट ब्रिज तक पहुँच गए।

डबल डेकर लिविंग रूट ब्रिज: यह पुल, जो जीवित पेड़ों की जड़ों से बना था, अपने आप में एक अद्भुत रचना थी। नीचे बहते झरने और पेड़ों की जड़ों के बीच की खामोशी, जैसे किसी और ही दुनिया में ले जा रही थी। यहाँ पहुँच कर, मैंने झील में ताजगी से भरपूर स्नान किया, जिससे शरीर की थकान पूरी तरह से मिट गई। उसके बाद, हम सिंगल रूट ब्रिज की ओर बढ़े। यह पुल भी जीवित पेड़ों की जड़ों से बना था, और यहाँ की शांति और प्राकृतिक सौंदर्य ने हम सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। यह अनुभव हमें सिखा गया कि दोस्त सिर्फ मस्ती के लिए नहीं होते, बल्कि तब भी हमारे साथ होते हैं जब हमें उनकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है। अगले दिन सुबह की ताजगी के साथ हम शिलांग से निकलकर शिलांग पीक पॉइंट की ओर गए।

शिलांग पीक पॉइंट: यह शिलांग का सबसे ऊँचा स्थान है, जहाँ से पूरे शिलांग शहर का शानदार दृश्य देखने को मिलता है। चारों ओर फैली हरियाली, बादलों से घिरे पहाड़ और दूर तक दिखते नज़ारे ने हमें एक अलग ही दुनिया में ले जाने का एहसास दिलाया। वहाँ से देखते हुए लगता था जैसे हम स्वर्ग के एक कोने से दूसरे कोने तक फैलते नज़ारों का हिस्सा बन गए हर क्लिक में हमारी खुशी और उस पल की सुंदरता कैद हो गई, जिसे हम हमेशा संजोकर रखना चाहेंगे इसके बाद हम पहुँचे डॉवकी रिवर पहुंचे।

डॉवकी: म्यांमार सीमा के पास स्थित एक अद्भुत झील है, जिसकी पानी की पारदर्शिता अनोखी है। इस झील का पानी इतना साफ है कि नावें मानो हवा में तैर रही हों। जैसे ही हम नाव में बैठे और पानी के ऊपर तैरने लगे, ऐसा महसूस हुआ जैसे हम किसी काल्पनिक दुनिया में घुस गए हों। झील के किनारे पर बर्फीली ठंडी हवा और आस-पास के पहाड़ों का दृश्य मंत्रमुग्ध कर देने वाला था। डॉवकी रिवर का शांत और पारदर्शी पानी, इसके चारों ओर फैली प्रकृति की सुंदरता—यह सब मिलकर हमें ऐसी जगह लेकर गए जहाँ केवल शांति और सौंदर्य का साम्राज्य था।

इसके बाद हम **इंडिया-बांग्लादेश बॉर्डर** पहुँचे। यह वह स्थान था जहाँ भारत और बांग्लादेश की सीमाएँ मिलती हैं। यहाँ खड़े होकर, एक ओर भारत और दूसरी ओर बांग्लादेश को देखना एक अद्भुत अनुभव था। सीमा पर तैनात भारतीय जवानों को देखकर देशभक्ति की भावना और गर्व की लहर महसूस हुई। यह स्थल न केवल एक भौगोलिक सीमा थी, बल्कि यह दोनों देशों के बीच एक रिश्ते और एकता का प्रतीक भी था।

अंत में पहुँचे एशिया के सबसे स्वच्छ गाँव – **मावलिननोंग**। यहाँ की स्वच्छता और प्रकृति के प्रति लोगों की जागरूकता ने हमें बहुत प्रभावित किया। हर गली में बांस के बने कूड़ेदान, घरों के बाहर छोटे-छोटे बगीचे अपनी अलग पहचान बना रही थी। तीन दिनों का यह आध्यात्मिक और अविस्मरणीय सफर माँ कामाख्या के पावन दर्शन के साथ संपन्न हुआ।

कामाख्या मंदिर: यात्रा के हर क्षण में भक्ति, आस्था और आनंद की अनुभूति हुई। प्रकृति की गोद में बसे इस दिव्य मंदिर तक पहुँचते ही मन श्रद्धा से भर गया। मंदिर की अद्भुत स्थापत्य कला और वहाँ की आध्यात्मिक ऊर्जा ने आत्मा को एक अलग ही शांति प्रदान की। माँ के दर्शन कर मनोकामना का दीप जलाया और अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित कीं। इस यात्रा का हर क्षण हमें माँ की कृपा और अनुकंपा का अहसास कराता रहा।

इस पूरी यात्रा में हमने साथ मिलकर जो भी किया—मस्ती, नाच-गाना, खाना बनाना, बीमार दोस्तों की देखभाल करना और रोमांचक ट्रेक पूरा करना—वह सब हमारी दोस्ती को और भी मजबूत बना गया। यह सिर्फ एक ट्रिप नहीं थी, बल्कि हमारी दोस्ती का जश्न थी। हमने हर पल को खुलकर जिया और अनगिनत यादें संजोईं। यह सफर हमें हमेशा याद रहेगा, क्योंकि इसमें सिर्फ नई जगहें देखने का अनुभव नहीं था, बल्कि सच्ची दोस्ती का एहसास भी था। शिलांग की यह यात्रा हमारे जीवन की सबसे बेहतरीन यादों में से एक बन गई, जिसे हम आने वाले सालों तक याद करेंगे और इन पलों को फिर से जीने की ख्वाहिश रखेंगे।

13

अपने लिए एक दिन



श्री अनिल कुमार-I
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद

“कल मैं घूमने जाऊँगा…” मैंने कहा।

“कहाँ जा रहे हो?” पत्नी ने पूछा।

“है एक जगह… इंस्टाग्राम पर देखी थी। कुछ तो नाम होगा उसका…”

पत्नी ने फिर पूछा, “नाम क्या है?”

“है एक कोई बिजाग कॉलोनी…” मैंने कुछ बेपरवाही से कहा।

“कौन जा रहा है साथ में?”

“सचिन और मैं, जा रहे हैं।”

“क्या है वहाँ?”

“कुछ खास नहीं… वही जंगल-झाड़।”

(जंगल-झाड़—प्राकृतिक वातावरण के लिए आम बोलचाल का मेरा अपना शब्द)

कुछ और बातें होती रहीं, लेकिन मेरा मन तो कब का उस अनजान जगह की तस्वीरों में पहुँच चुका था। आँखों के सामने बार-बार इंस्टाग्राम पर देखे हुए दृश्य घूम रहे थे। सुबह पाँच बजे का अलार्म बजते ही आँख खुल गई। वैसे तो रात भर नींद आई थी, लेकिन मन में चल रही यात्रा की उत्सुकता ने शायद नींद पूरी होने ही नहीं दी थी। मन में बार-बार सचिन की कही बात घूम रही थी—“छह बजे तक घर आ जाना।”

गाड़ी पर कपड़ा मार ही रहा था कि पत्नी ने पूछा, “कुछ खाने के लिए बना दूँ?”

मैंने मना कर दिया और सचिन के घर की तरफ निकल पड़ा।

आज कुछ अजीब-सी बेचैनी थी मन में।

यूँ तो इससे पहले भी कई बार परिवार से अलग होकर बाहर गया हूँ, जाता ही रहता हूँ। लेकिन न जाने क्यों, आज मन में एक अपराधबोध-सा हो रहा था—अकेले जा रहा हूँ, घूमने, बिना परिवार के। ऐसा भी नहीं है कि, मुझे मालूम नहीं कि, हर किसी की अपनी-अपनी पसंद होती है। जरूरी नहीं कि जिसे जंगल-झाड़, पेड़-पौधे और सुनसान रास्ते अच्छे लगते हैं, उसे बाकी लोग भी पसंद करें। किसी को भीड़-भाड़ से पटे शॉपिंग मॉल अच्छे लगते हैं, किसी को बाजारों की चहल-पहल, किसी को अच्छे होटल और रेस्टोरेंट। और मुझे?

मुझे तो साहब, एक पेड़ के नीचे भी बैठा दो… वहीं सुकून मिल जाएगा।

बस, इसी कशमकश के बीच मैं सुबह करीब साढ़े छह बजे सचिन के घर पहुँच गया। वहाँ पहुँचा तो वह अभी तैयार ही हो रहा था।

“आइए, बैठिए। पंद्रह मिनट में चलते हैं,” उसने कहा और हाथ में गरमा-गरम चाय थमा दी।

कम से कम एक चाय पीकर ही सही, सफर की शुरुआत तो हुई! गली से बाहर निकले ही थे कि हमारे एक और मित्र अमरजीत अपनी नई गाड़ी को बड़े गौर से निहारते दिखाई दिए। हमें देखते ही लपककर सामने आए।

“क्या बात है! इतनी सुबह-सुबह कहाँ जा रहे हो?”

मैंने कहा, “चलो, बैठो तुम भी!”

“रुकिए, जरा कपड़े बदलकर आता हूँ।”

इतना कहकर वह अंदर गए और पैंट-कुर्ता पहनकर वापस आ गए।

मैंने कहा, “अरे मंदिर नहीं जाना है भाई! टी-शर्ट पहनकर आओ।”

पाँच मिनट बाद वह टी-शर्ट में तैयार होकर आ गए और सचिन ने गाड़ी आगे बढ़ा दी।

लगभग पंद्रह-बीस मिनट बाद अमरजीत ने पूछा, “जा कहाँ रहे हैं?”

“बिजाग कॉलोनी।”

“ये क्या है? वहाँ क्या है?”

“कुछ खास नहीं… बस जंगल-झाड़।”

हम हँस पड़े।

“चलो, देख कर आते हैं।”

धीरे-धीरे शहर की भीड़-भाड़ पीछे छूटने लगी। कॉलोनी और शहर की सीमाएँ पार करते हुए अब हम नेशनल हाईवे से स्टेट हाईवे की तरफ बढ़ रहे थे। लेकिन मेरे मन में बार-बार एक ही सवाल घूम रहा था—पता नहीं, जैसा इंस्टाग्राम पर देखा था, वैसा होगा भी या नहीं? करीब 60-70 किलोमीटर चलने के बाद दूर से पहाड़ दिखाई देने लगे। कच्चे-पक्के रास्तों से गुजरते हुए हम अपनी मंजिल के करीब पहुँच रहे थे कि तभी रास्ते में भगवान शिव की एक बहुत बड़ी और भव्य मूर्ति दिखाई दी। गाड़ी रोक दी गई और हम मंदिर की तरफ चल पड़े। मंदिर के सामने दूर-दूर तक फैला एक विशाल खुला मैदान था—चारों तरफ हरा-भरा घास का मैदान और उसके किनारों पर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ। शहर में कंक्रीट के जंगल के बीच रहने वाले हम जैसे लोगों के लिए ऐसा दृश्य किसी स्वर्ग से कम नहीं था।

भगवान शिव को प्रणाम किया, कुछ तस्वीरें लीं और फिर आगे बढ़ चले।

मंजिल से कुछ दूर पहले एक छोटी-सी दुकान पर गाड़ी रोकी और चाय पी।

चाय की दुकान से सामने का दृश्य देखते ही मन ठहर गया।

आँखों के सामने एक विशाल जलराशि और उसके किनारे फैला खुला घास का मैदान था। मन हुआ कि बस यहीं से दौड़ लगा दूँ।

लेकिन सचिन ने समझाया—

“सर, जितना दिखाई दे रहा है, उससे कहीं ज्यादा दूर है ये जगह। चलिए, गाड़ी में बैठिए।”

और हम फिर गाड़ी में बैठकर आगे बढ़ चले।

कुछ ही देर बाद सामने का नज़ारा वाकई अद्भुत था!

मीलों तक फैला समतल हरा मैदान, जिसे देखकर लगता था मानो किसी ने धरती पर एक विशाल क्रिकेट पिच बना दी हो। एक तरफ विशाल जलराशि और दूसरी तरफ छोटी-बड़ी खूबसूरत पहाड़ियाँ।

एकदम स्वर्ग जैसा दृश्य!

कहते हैं न—अंधे को क्या चाहिए? दो आँखें।

सो हाल हमारा भी कुछ ऐसा ही था।

हम जैसे और भी कई "सूरदास" वहाँ घूम रहे थे—बस फर्क इतना था कि सबकी आँखें खुली थीं और मोबाइल के कैमरे भी!
हम किनारे पर बैठ गए। साथ लाई हुई कॉफी और बिस्किट निकाले गए और प्राकृतिक नज़ारे के बीच उनका आनंद लिया गया।
कॉफी खत्म होने के बाद आसपास का मुआयना शुरू हुआ। प्राकृतिक छटा देखते ही बन रही थी।
पास ही कुछ मछुआरे मछली पकड़ रहे थे। कुछ किसान अपनी बत्तखों को पानी में घुमा रहे थे। तभी एक व्यक्ति बोटिंग कराने के लिए हमारे पास आया।
"बोटिंग कर लो साहब..."

मोलभाव शुरू हुआ और आखिरकार ₹1400 में बात बन गई। उस विशाल जलराशि में नाव की सवारी बेहद सुकून देने वाली थी। चारों तरफ पानी, दूर पहाड़ियाँ, खुला आसमान और शांत वातावरण। नाव में बैठे-बैठे मन में एक और विचार आया—इन स्थानीय लोगों के बारे में। ये लोग इसी धूप, गर्मी और बरसात में दिनभर यहाँ मेहनत करते हैं। हम कुछ घंटों के लिए यहाँ घूमने और आनंद लेने आए हैं, लेकिन इनके लिए यही जगह रोज़गार और जीवन का हिस्सा है।

कम से कम हमारी वजह से इनके छोटे-से कारोबार में कुछ आमदनी तो हो रही है।

अब दोपहर के दो बज चुके थे। घर भी वापस जाना था और अब भूख भी लगने लगी थी। लेकिन आस-पास खाने के नाम पर चिप्स और बिस्किट के अलावा कुछ खास नजर नहीं आ रहा था। मगर आज तो भोले बाबा की विशेष कृपा थी। सचिन ने शायद पहले ही इस बात का अंदाजा लगा लिया था, इसलिए वह पहले से ही पूरी और आलू की सूखे सब्जी लेकर आया था।

सच कहूँ तो प्रकृति की गोद में बैठकर खाने का जो आनंद मिला, वह किसी बड़े से बड़े रेस्टोरेंट में भी कहाँ मिल सकता था! चारों तरफ खुला आसमान, प्रकृति का सुकून और सामने घर जैसी सादी-सी थाली—बस फिर क्या था, हम सबने बिना देर किए साथ लाई हुई पूरी-भाजी पर जमकर हाथ साफ किया। हम वापस चलने ही वाले थे कि अमरजीत भाई बोले—

"अब यहाँ आए हैं तो पानी में भी उतर जाते हैं।"

सहसा एक फिल्मी डायलॉग याद आ गया—

"मालिक, इतना खर्चा हो ही गया है तो एक चिप्स का पैकेट और ले लो!"

फिर क्या था! हम पानी में उतर गए। पानी बहुत ठंडा था—बिल्कुल तरोताजा कर देने वाला।

लगभग एक घंटे तक पानी में रहे। पानी बहुत गहरा तो नहीं था, लेकिन मेरी आदत के मुताबिक दिमाग में सुरक्षा के विचार चलने लगे। इतना शांत और लगभग अनछुआ इलाका... कोई प्रशासनिक व्यवस्था भी दिखाई नहीं दे रही थी।

मन में आया— कहीं पानी में कोई बड़ा जीव हुआ तो?

इसलिए पानी में मस्ती के साथ-साथ मेरी नज़रें चारों तरफ भी दौड़ती रहीं। खैर, सब कुछ सुरक्षित और सुखद रहा।

पानी से बाहर निकले ही थे कि तभी घंटी बजाता हुआ एक आइसक्रीम वाला आ गया।

आइसक्रीम खाई गई।

और अब वापस लौटने का समय तो पक्का हो ही चुका था। तभी मन में अचानक एक विचार आया—सावन का पवित्र महीना चल रहा है। इस महीने लोग हरिद्वार जाकर गंगाजल लाते हैं और उसे भोले बाबा को अर्पित करते हैं। तो क्यों न कृष्णा नदी के इस पवित्र जल को भी बाबा को अर्पित किया जाए? बस फिर क्या था! नदी के किनारे से एक बोतल में कृष्णा नदी का पवित्र जल भर लिया और भोले बाबा को अर्पित करने की भावना मन में लिए हम घर की ओर चल पड़े। गाड़ी अब वापस घर की तरफ दौड़ रही थी। पीछे छूटता जा रहा था नदी का किनारा, प्रकृति की वह खूबसूरत छटा और बिताए हुए कुछ यादगार पल... लेकिन मन में एक अलग ही संतोष था—आज की इस यात्रा की एक छोटी-सी निशानी हम अपने साथ लेकर जा रहे थे।

अमरजीत भाई पिछली सीट पर मस्त सो रहे थे।

मैं भी आगे बैठे-बैठे ऊँघ रहा था।

और सचिन "हमारा हीरो" गाड़ी चला रहा था।

मैं अपने आप को और उसे भी नींद से दूर रखने के लिए लगातार उससे बातें करता रहा।

रास्ते में बैठे-बैठे मेरे मन में एक विचार आया—

बहुत दिनों बाद आज पहली बार मैंने वाकई "अपने लिए" कुछ किया था।

जो मन किया, वही किया।

किसी योजना, किसी औपचारिकता या किसी जिम्मेदारी के हिसाब से नहीं।

बस मन किया और निकल पड़े।

वरना जिंदगी कब घर, परिवार और ऑफिस के चक्कर में घूमते-घूमते निकल जाती है, पता ही नहीं चलता। हम दूसरों के लिए समय निकालते-निकालते अक्सर खुद के लिए समय निकालना भूल जाते हैं। उस दिन पहली बार लगा कि शायद जिंदगी में कभी-कभी बिना किसी खास वजह के भी निकल जाना चाहिए।

किसी मंजिल के लिए नहीं...

बस रास्ते के लिए।

प्रकृति के लिए।

दोस्तों के लिए।

और सबसे बढ़कर—अपने लिए।

लेकिन उसी विचार के साथ मन में एक और सवाल उठ खड़ा हुआ— क्या मैं सच में स्वतंत्र हूँ?

क्या अपने मन का कुछ करने के लिए मुझे हमेशा किसी योजना, किसी अनुमति या किसी वजह की जरूरत होती है? शायद इस सवाल का जवाब उस दिन भी नहीं मिला। लेकिन इतना जरूर समझ आया कि जिंदगी सिर्फ जिम्मेदारियाँ निभाने का नाम नहीं है। कभी-कभी खुद को भी जिंदगी में शामिल करना पड़ता है।

इन्हीं विचारों, ढेरों यादों और मोबाइल में भरी तस्वीरों के साथ हम आखिरकार घर वापस आ गए। एक छोटी-सी यात्रा खत्म हो गई थी। लेकिन मन में एक खूबसूरत याद छोड़ गई—

बहुत दिनों बाद जिया हुआ एक दिन... सिर्फ अपने लिए।

14

मेरा हरियाणा



श्रीमती अनीता
लेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.), तेलंगाना

मेरा जन्म स्थान हरियाणा है। हरियाणा भौगोलिक रूप से भारत के उत्तरी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण राज्य है। यह 1 नवम्बर 1966 को पंजाब से अलग होकर एक नए राज्य के रूप में स्थापित हुआ। यह भाषा के आधार पर पुनर्गठन के अंतर्गत बने राज्यों में से एक है। वर्तमान में हरियाणा में कुल 22 जिले हैं और इसकी राजधानी चंडीगढ़ है।

हरियाणा की जितनी प्रशंसा की जाए, उतनी ही कम है। मेरे जन्म के समय यह राज्य इतना विकसित नहीं था, किंतु समय के साथ इसमें उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। पिछले 35 वर्षों में हरियाणा ने तीव्र गति से विकास किया है और आज यह देश के विकसित राज्यों में गिना जाता है। वर्तमान समय में हरियाणा हर क्षेत्र में प्रगति की नई ऊँचाइयों को छू रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी हरियाणा ने महत्वपूर्ण प्रगति की है। पहले यहाँ लड़कियों की शिक्षा पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था, लेकिन आज लड़कियों को उनकी इच्छानुसार शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिल रहे हैं। पहले लड़कों और लड़कियों के शिक्षा अनुपात में काफी अंतर था (लगभग 8:2), जबकि आज यह संतुलित होकर लगभग समान (8:8) हो गया है। अब बिना किसी भेदभाव के दोनों को समान शिक्षा प्रदान की जा रही है। एक समय ऐसा भी था जब लड़कियों को गर्भ में ही मार दिया जाता था, लेकिन आज हरियाणा समाज इन संकीर्ण सोचों से ऊपर उठ चुका है और बेटियों को समान अवसर प्रदान कर रहा है।

हरियाणा के सामाजिक परिवर्तन को फिल्म 'दंगल' में भी प्रभावशाली ढंग से दर्शाया गया है, जिसमें यह दिखाया गया है कि माता-पिता, विशेष रूप से पिता, बेटियों के भविष्य को संवारने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और समाज से लड़कर उन्हें सफलता दिलाते हैं।

संस्कृति की दृष्टि से भी हरियाणा समृद्ध है। यहाँ रागनियों और सांग की परंपरा प्राचीन समय से चली आ रही है, जो मनोरंजन का प्रमुख साधन रही है। इसके अतिरिक्त, हरियाणा खेल-कूद के क्षेत्र में भी अग्रणी राज्य है। यह भारत में सबसे अधिक खेल पदक लाने वाले राज्यों में से एक है और खेलों को प्राथमिकता देने में अग्रणी माना जाता है। इसका उदाहरण भाला फेंक के खिलाड़ी नीरज चोपड़ा, कुश्ती में विनेश फोगाट और साक्षी मलिक जैसे खिलाड़ी हैं। साक्षी मलिक कुश्ती में भारत को ओलंपिक पदक दिलाने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। हरियाणा ने विशेष रूप से कुश्ती के खेल को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है।

हरियाणा के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है, साथ ही पशुपालन भी यहाँ का एक प्रमुख कार्य है। यहाँ के लोग दूध और दही के सेवन के लिए प्रसिद्ध हैं तथा सामान्यतः स्वस्थ और सुदृढ़ कद-काठी के होते हैं। हरियाणा के लोग मेहनती और ईमानदार माने जाते हैं। यह राज्य भारत के सबसे अधिक मशीनीकृत कृषि राज्यों में से एक है, जहाँ ट्रैक्टर और आधुनिक कृषि उपकरणों का व्यापक उपयोग किया जाता है। यहाँ की प्रमुख फसलें गेहूँ, गन्ना, धान, बाजरा, मक्का और कपास हैं। मशरूम उत्पादन में हरियाणा देश में प्रथम स्थान पर है।

दूध उत्पादन की दृष्टि से भी हरियाणा अग्रणी है। यहाँ प्रति व्यक्ति दूध उपलब्धता लगभग 1182 ग्राम प्रतिदिन है, जो राष्ट्रीय औसत 444 ग्राम से लगभग तीन गुना अधिक है। यहाँ की प्रसिद्ध 'मुर्राह' भैंस, जिसे 'काला सोना' भी कहा जाता है, हरियाणा की मूल नस्ल है। इसके अतिरिक्त, करनाल में स्थित नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट (NDRI) तथा हिसार का सेंट्रल इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च ऑन बफैलोज़ (CIRB) पशुपालन और डेयरी तकनीकों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

हरियाणा का इतिहास अत्यंत प्राचीन और गौरवशाली है, जो वैदिक काल और महाभारत से जुड़ा हुआ है। कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि पर महाभारत का युद्ध लड़ा गया था, जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। प्राचीन काल में इस क्षेत्र को 'ब्रह्मवर्त' और 'आर्यवर्त' के नाम से जाना जाता था। राजा कुरु ने इसी भूमि पर कुरुक्षेत्र की स्थापना की थी।

इतिहास की दृष्टि से भी हरियाणा अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी रहा है, जिनमें पानीपत की प्रसिद्ध लड़ाइयाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार हरियाणा का इतिहास, संस्कृति, विकास और सामाजिक परिवर्तन इसे एक समृद्ध और प्रेरणादायक राज्य बनाते हैं।महाभारत का महान युद्ध लगभग 3000 ईसा पूर्व हरियाणा के कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरवों और पांडवों के बीच लड़ा गया था। इसी पवित्र भूमि पर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को भगवद्गीता का उपदेश दिया था, जो आज भी मानव जीवन के लिए मार्गदर्शक माना जाता है।

हरियाणा का इतिहास राजा अग्रसेन के समय से भी जुड़ा हुआ है। उनका राज्य वर्तमान हिसार के पास स्थित अग्रोहा में था, जो एक प्रमुख ऐतिहासिक और व्यापारिक केंद्र था। महाराजा अग्रसेन ने इस नगर की स्थापना की थी, जो आज भी अपनी ऐतिहासिक महत्ता के लिए प्रसिद्ध है।

मध्यकालीन इतिहास में तराइन के युद्ध (1191 और 1192) अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। ये युद्ध करनाल के निकट तराइन के मैदान में पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गौरी के बीच लड़े गए थे। पहले युद्ध में पृथ्वीराज चौहान विजयी रहे, किंतु दूसरे युद्ध में उनकी पराजय ने भारत में तुर्क साम्राज्य की नींव रखी।

इसके अतिरिक्त, पानीपत की तीनों ऐतिहासिक लड़ाइयाँ भी हरियाणा में ही लड़ी गईं, जिसने इस क्षेत्र को युद्धभूमि के रूप में प्रसिद्ध किया। पहली पानीपत की लड़ाई 1526 में बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच हुई, जिसमें बाबर की विजय के साथ भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई। दूसरी लड़ाई 1556 में अकबर और हेमू के बीच लड़ी गई, जिसमें अकबर विजयी रहा। तीसरी और अंतिम लड़ाई 1761 में अहमद शाह अब्दाली और मराठों के बीच हुई, जिसमें मराठों को पराजय का सामना करना पड़ा।

हरियाणा में करनाल का युद्ध भी अत्यंत प्रसिद्ध है। यह युद्ध फारसी शासक नादिर शाह और मुगल बादशाह मुहम्मद शाह के बीच हुआ था। इस युद्ध में नादिर शाह विजयी रहा और उसने दिल्ली से मयूर सिंहासन तथा कोहिनूर हीरा लूट लिया।

स्वतंत्रता संग्राम में भी हरियाणा के लोगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 1857 की क्रांति, जिसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता है, में हरियाणा के लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस क्रांति की शुरुआत अंबाला छावनी से हुई थी। राव तुलाराम, नवाब अब्दुल रहमान खान और राजा नाहर सिंह जैसे वीर नेताओं ने इसमें प्रमुख भूमिका निभाई।

इसके अतिरिक्त, हरियाणा में स्थित शेख चिल्ली का मकबरा भी ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसे हरियाणा का ताजमहल कहा जाता है। यह मकबरा सूफी संत शेख चिल्ली की स्मृति में मुगल सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल में बनवाया गया था, जो अपनी सुंदर वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।

इस प्रकार, हरियाणा का इतिहास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी रहा है। यह राज्य न केवल सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से समृद्ध है, बल्कि वीरता, संघर्ष और गौरव की भूमि भी है। हरियाणा में पर्यटन स्थलों की कमी नहीं है, यहां के निम्नलिखित आकर्षण केंद्र है, जैसे बहा सरोवर, यहाँ सूर्य ग्रहण के समय भारी भीड़ उमड़ती है। इसके अलावा ज्योति सार, जहाँ भगवान कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था।

इन्हीं में शामिल है हरियाणा का प्रसिद्ध मोरनी हिल्स, पंचकूला जिले में स्थित हरियाणा का एकमात्र और बेहद खूबसूरत हिल स्टेशन है जो चंडीगढ़ से लगभग 45 किलोमीटर दूर है। हरियाणा में शहरों की बात करें तो, दिल्ली से सटा शहर गुरुग्राम जिसे पहले गुड़गांव के नाम से जाना जाता है। यह शहर अपनी चकाचौंध, मॉल्स और कॉर्पोरेट संस्कृति के लिए जाना जाता है।

हरियाणा में पर्यटन स्थलों की कोई कमी नहीं है। यहाँ अनेक धार्मिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक आकर्षण केंद्र स्थित हैं, जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। कुरुक्षेत्र का ब्रह्म सरोवर विशेष रूप से प्रसिद्ध है, जहाँ सूर्य ग्रहण के समय भारी

संख्या में श्रद्धालु एकत्रित होते हैं। इसी प्रकार ज्योतिसर भी अत्यंत पवित्र स्थान है, जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को भगवद्गीता का उपदेश दिया था।

प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से हरियाणा का मोरनी हिल्स विशेष उल्लेखनीय है। यह पंचकूला जिले में स्थित राज्य का एकमात्र हिल स्टेशन है, जो अपनी मनमोहक वादियों और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। यह चंडीगढ़ से लगभग 45 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और पर्यटकों के लिए एक आदर्श स्थल है।

यदि हरियाणा के आधुनिक शहरों की बात करें, तो दिल्ली से सटा गुरुग्राम (पूर्व नाम गुड़गांव) अपनी आधुनिकता, चमक-दमक, बड़े-बड़े मॉल्स और कॉर्पोरेट संस्कृति के लिए जाना जाता है। यहाँ स्थित किंगडम ऑफ ड्रीम्स एक प्रमुख मनोरंजन स्थल है। इसके अलावा सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान पक्षी प्रेमियों के लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं है, जहाँ विभिन्न प्रजातियों के पक्षी देखने को मिलते हैं।

अन्य आकर्षण केंद्रों में दमदमा झील, कुरुक्षेत्र पैनोरमा एवं विज्ञान केंद्र तथा डीएलएफ साइबर हब प्रमुख हैं। विज्ञान केंद्र में आगंतुकों को वैज्ञानिक और ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है। पिंजौर गार्डन (यादविंद्र गार्डन), जो पंचकूला के पास स्थित है, मुगल शैली में बना एक अत्यंत सुंदर और ऐतिहासिक उद्यान है, जिसका निर्माण 17वीं शताब्दी में हुआ था।

हरियाणा में कई नदियाँ भी बहती हैं, जिनमें से अधिकांश मौसमी हैं और वर्षा पर निर्भर करती हैं। राज्य की प्रमुख नदियों में यमुना, घग्गर, मारकंडा, साहिबी तथा प्राचीन सरस्वती नदी शामिल हैं। यमुना नदी हरियाणा की सबसे महत्वपूर्ण और एकमात्र बारहमासी नदी है, जो पूरे वर्ष बहती है। यह हरियाणा और उत्तर प्रदेश के बीच प्राकृतिक सीमा का निर्माण करती है। इस नदी में स्नान करने के लिए बड़ी संख्या में लोग आते हैं।

घग्गर नदी राज्य की प्रमुख मौसमी नदियों में से एक है, जो उत्तर और उत्तर-पश्चिमी हरियाणा से होकर बहती है। मारकंडा नदी हिमाचल प्रदेश के नाहन क्षेत्र की शिवालिक पहाड़ियों से निकलकर अंबाला और कुरुक्षेत्र जिलों से गुजरते हुए घग्गर नदी में मिल जाती है।

सरस्वती नदी का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व अत्यधिक है। यह हरियाणा के दक्षिण और दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्रों से जुड़ी मानी जाती है। टांगरी नदी शिवालिक पहाड़ियों से निकलकर मारकंडा नदी में मिलती है। साहिबी नदी भी एक प्रमुख बरसाती नदी है, जो राजस्थान की अरावली पहाड़ियों से निकलकर हरियाणा के रेवाड़ी, झज्जर और गुरुग्राम जिलों से होकर बहती है। इंदौरी नदी इसकी सहायक नदी है।

हरियाणा में अरावली पर्वतमाला दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी क्षेत्रों में फैली हुई है, जिसमें गुरुग्राम, फरीदाबाद, नूंह, महेंद्रगढ़ और रेवाड़ी जिले शामिल हैं। यह पर्वतमाला विश्व की सबसे प्राचीन पर्वतमालाओं में से एक है। हरियाणा में अरावली का सबसे ऊँचा भाग 'धोसी' की पहाड़ियाँ हैं, जो महेंद्रगढ़ में स्थित हैं।

हरियाणा का औद्योगिक विकास भी उल्लेखनीय है, विशेषकर ऑटोमोबाइल क्षेत्र में। यहाँ हीरो और मारुति जैसी बड़ी कंपनियों के विशाल विनिर्माण संयंत्र स्थापित हैं। गुरुग्राम के मानेसर में मारुति का प्रमुख संयंत्र स्थित है, जबकि सोनीपत के खरखौदा में लगभग 900 एकड़ में नया संयंत्र स्थापित किया जा रहा है। देश की पहली 'एटलस' साइकिल भी सोनीपत में बनाई गई थी। ये उद्योग न केवल रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं, बल्कि राज्य की अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ बनाते हैं।

पानीपत अपने हैंडलूम उद्योग के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है, जहाँ चादरें और पर्दे अंतर्राष्ट्रीय बाजार में निर्यात किए जाते हैं। हरियाणा का रहन-सहन सादा और सरल है। यहाँ के पुरुष प्रायः कुर्ता और पगड़ी पहनते हैं, जबकि महिलाएँ घाघरा-कुर्ती पहनती हैं और सिर पर ओढ़नी (चुंदड़ी) लेती हैं।

अंततः मेरा प्रिय हरियाणा न केवल ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक दृष्टि से समृद्ध है, बल्कि यह प्रगति और परंपरा का अद्भुत संगम भी है। मुझे हरियाणवी होने पर गर्व है।

15 मानवीय रिश्ते और व्यावसायिक जीवन



श्री के. एन. दीपक राज
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.), तेलंगाना

मानवीय रिश्ते हमारे जीवन की सबसे अनमोल पूँजी हैं। परिवार, मित्र, सहकर्मी और समाज के लोगों के साथ हमारे संबंध ही जीवन को अर्थ, अपनापन और भावनात्मक सहारा प्रदान करते हैं। धन-दौलत और भौतिक सुख-सुविधाएँ जीवन को आराम दे सकती हैं, लेकिन सच्चे रिश्ते ही हमें खुशी और मानसिक शांति देते हैं।

आज के तेज़ी से बदलते जीवन में मनुष्य व्यस्तता और तकनीक की दुनिया में इतना उलझ गया है कि रिश्तों के लिए समय कम होता जा रहा है। छोटी-छोटी गलतफहमियाँ, अहंकार और स्वार्थ कई बार वर्षों पुराने संबंधों में भी दूरी पैदा कर देते हैं। ऐसे समय में रिश्तों को बनाए रखने के लिए प्रेम, विश्वास, सम्मान, धैर्य और संवाद बहुत आवश्यक हैं।

मानवीय रिश्तों का महत्व हमारे व्यावसायिक जीवन में भी उतना ही है। कार्यस्थल पर हम विभिन्न स्वभाव, विचार और अनुभव रखने वाले लोगों के साथ मिलकर काम करते हैं। एक सफल संस्थान केवल नियमों और प्रक्रियाओं से नहीं, बल्कि आपसी विश्वास, सहयोग और सम्मान से बनता है। वरिष्ठों का मार्गदर्शन, सहकर्मियों का सहयोग और कनिष्ठों के प्रति संवेदनशीलता कार्यस्थल को सकारात्मक और सुखद बनाती है। यदि हम अपने सहकर्मियों की भावनाओं को समझें, उनके योगदान का सम्मान करें और कठिन समय में उनका साथ दें, तो व्यावसायिक संबंध भी जीवनभर के आत्मीय रिश्तों में बदल सकते हैं।

हमारे पेशेवर जीवन में पद और जिम्मेदारियाँ बदलती रहती हैं। एक दिन हम किसी संस्था में नए होते हैं, फिर जिम्मेदारियाँ संभालते हैं और अंततः एक दिन उस स्थान से विदा भी लेते हैं। लेकिन हमारे द्वारा बनाए गए संबंध, विश्वास और मधुर स्मृतियाँ हमारे साथ लंबे समय तक रहती हैं। यही किसी भी व्यावसायिक यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है।

निष्कर्षतः जीवन की वास्तविक सफलता केवल ऊँचा पद प्राप्त करने या भौतिक उपलब्धियाँ हासिल करने में नहीं है, बल्कि उन लोगों के दिलों में स्थान बनाने में है, जिनसे हमारी जीवन-यात्रा जुड़ी रही है। पद और परिस्थितियाँ बदल जाती हैं, लेकिन सच्चे मानवीय रिश्ते समय के साथ और भी मूल्यवान होते जाते हैं। इसलिए जीवन में ऐसा व्यवहार करें कि हमारी उपस्थिति से लोगों को खुशी मिले और हमारी अनुपस्थिति में हमारी कमी महसूस हो—यही मानवीय रिश्तों और जीवन की सच्ची सफलता है।

16

नटखट बच्चा



श्रीमती पूजा कुमारी साव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना

घर में नटखट सा एक बच्चा है,

चंचल चितवन से घड़ी-घड़ी चहक-चहक इतराता है,

हर पल घट रही घटनाओं का इनसे ही नाता है,

खेल-खिलौने इनको भाते नहीं,

सिर्फ पानी, बर्तन और कचरों से ही खेलना आता है,

कच्ची उम्र में भी हर फैसला इनका अडिग, अविचल सा,

कुछ कहो तो बस इनको रोना आता है,

अबोध बालक समझ इनको कुछ समझाओ,

तब समझ इनको कुछ नहीं आता है,

हाँ! हो इनके मतलब की बात,

तो इनको सब समझ आता है,

प्यार, दुलार और फटकार का अंतर पता है इनको,

आँखें दिखाओ तो डरना भी आता है,

फिर आँसू इनके देख रोना हमें भी आता है।

ऐसे चंचल बच्चों से घर का कोना-कोना गीत गाता है।

17

आज की सच्चाई: वक़्त नहीं



श्री देबाशीष दत्ता
लेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना

हर खुशी है लोगों के दामन में,
पर एक हँसी के लिए वक़्त नहीं...
दिन रात दौड़ती दुनिया में,
ज़िंदगी के लिए वक़्त नहीं |

सारे रिश्तों को तो हम मार चुके हैं,
पर अब उन्हें दफनाने का भी वक़्त नहीं....
सारे नाम मोबाइल में है,
पर दोस्ती के लिए वक़्त नहीं....
गैरों की क्या बात करें,
जब अपनों के लिए ही वक़्त नहीं |

आँखों में नींद भरी हुई है,
पर सोने का वक़्त नहीं.....
दिल है ग़मों से भरा हुआ,
पर रोने का भी वक़्त नहीं |
पैसों की दौड़ में ऐसे दौड़े कि,
थकने का भी वक़्त नहीं....

पराए एहसासों की क्या कद्र करें,
जब अपने सपनों के लिए ही वक़्त नहीं |
तू ही बता दे ऐ ज़िंदगी तेरा क्या होगा?
कि हर पल मरने वालों को,
जीने के लिए भी वक़्त नहीं |
यह कैसा युग है आ बैठा?
संस्कारों का कोई मान नहीं,
संस्कृति को भी अपमान मिले,
और आपका खुद सम्मान नहीं |

आओ मिल बैठ प्रयास करें,
क्या होगा पुनरुत्थान नहीं?
सामान्य सुखद सब कुछ होगा,
यह मत सोचो – आसान नहीं !

18

मेरी वरंगल यात्रा



श्रीमती डॉ कल्पना वर्मा
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना

मनुष्य स्वभावतः जिज्ञासु होता है। नई जगहों को देखना, वहाँ के लोगों से मिलना, उनकी संस्कृति को समझना और इतिहास के पन्नों में दर्ज कहानियों को अपनी आँखों से महसूस करना उसके स्वभाव का हिस्सा है। शायद यही कारण है कि यात्राएँ केवल स्थान परिवर्तन नहीं होतीं, बल्कि वे हमारे व्यक्तित्व को समृद्ध करने वाली जीवन-यात्राएँ बन जाती हैं। कुछ यात्राएँ समय के साथ स्मृति से धुंधली पड़ जाती हैं, जबकि कुछ ऐसी होती हैं जो वर्षों बाद भी मन के किसी कोमल कोने में जीवित रहती हैं। मेरी वरंगल यात्रा भी ऐसी ही एक यात्रा थी, जिसने मुझे इतिहास, संस्कृति, आस्था, प्रकृति और मानवीय संवेदनाओं के अनेक रंगों से परिचित कराया।

तेलंगाना का ऐतिहासिक नगर वरंगल लंबे समय से मेरी यात्रा सूची में शामिल था। काकतीय साम्राज्य की राजधानी रहे इस नगर के बारे में मैंने अनेक बार पढ़ा था। हजार स्तंभ मंदिर की अद्भुत स्थापत्य कला, भद्रकाली मंदिर की दिव्यता, वरंगल किले का गौरवशाली इतिहास और खुश महल की ऐतिहासिक विरासत के बारे में जानकर वहाँ जाने की उत्सुकता लगातार बढ़ती जा रही थी। दक्षिण भारत में स्थानांतरण होने के पश्चात, अंततः एक सप्ताहांत ऐसा आया जब मैंने वरंगल जाने का निश्चय कर लिया।

सुबह का समय था। आसमान हल्के बादलों से ढका हुआ था और वातावरण में एक सुखद ठंडक थी। यात्रा का उत्साह मन में इतना अधिक था कि रात को ठीक से नींद भी नहीं आई थी। इस यात्रा में मेरे परिवार जन भी शामिल थे। योजना यह थी कि यात्रा एक दिन के भीतर ही सम्पन्न की जाए। इसलिए हमने सुबह सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन से वरंगल के लिए ट्रेन पकड़ी। लगभग दो-ढाई घंटे के बाद हम वरंगल पहुँच गए। स्टेशन पर सुंदर-सुंदर कलाकृतियाँ बनी हुई थी। जैसे ही मैं वरंगल पहुँची, सबसे पहले जो बात मेरे मन को छू गई, वह थी शहर की सहजता। वरंगल में आधुनिकता और इतिहास एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि सहयात्री प्रतीत होते हैं। चौड़ी सड़कें, व्यवस्थित बाजार, मंदिरों की घंटियों की ध्वनि और लोगों का सरल व्यवहार इस नगर को विशेष बनाते हैं।

मेरी यात्रा का पहला पड़ाव था प्रसिद्ध **हजार स्तंभ मंदिर**। हनमकोंडा में स्थित यह मंदिर दूर से ही अपनी भव्यता के कारण ध्यान आकर्षित करता है। मंदिर परिसर में प्रवेश करते ही मेरे कदम अनायास धीमे हो गए। सामने पत्थरों में उकेरी गई ऐसी कलाकृतियाँ थीं, जिन्हें देखकर विश्वास करना कठिन था कि इन्हें लगभग आठ सौ वर्ष पहले निर्मित किया गया होगा। मंदिर के स्तंभों पर की गई बारीक नक्काशी को देखकर ऐसा लगा मानो पत्थरों में प्राण बसते हों। प्रत्येक स्तंभ अपनी अलग कहानी कहता प्रतीत होता था। कहीं पुष्प आकृतियाँ थीं, कहीं पौराणिक पात्रों की झलक दिखाई देती थी और कहीं ज्यामितीय डिजाइनों की अद्भुत सटीकता। मैं लंबे समय तक उन स्तंभों को निहारती रही। उस समय मेरे मन में बार-बार एक ही प्रश्न उठ रहा था कि आखिर उन शिल्पकारों के हाथों में कितनी अद्भुत कला रही होगी, जिन्होंने बिना आधुनिक उपकरणों के इतनी उत्कृष्ट रचनाएँ तैयार कीं।

मंदिर परिसर में स्थित विशाल नंदी की प्रतिमा ने भी मुझे अत्यंत प्रभावित किया। चिकने काले पत्थर से निर्मित यह प्रतिमा सौंदर्य और शक्ति का अद्भुत संगम है। श्रद्धालु उसके समक्ष श्रद्धा से सिर झुका रहे थे। कुछ लोग परिवार सहित आए थे, कुछ विद्यार्थी इतिहास को समझने का प्रयास कर रहे थे और कुछ विदेशी पर्यटक इस कला की भव्यता को कैमरे में कैद कर रहे थे। उन सबको देखकर मुझे लगा कि कला और संस्कृति वास्तव में सीमाओं से परे होती हैं। मंदिर से बाहर निकलते समय मेरे मन में एक अजीब-

सी शांति थी। ऐसा लगा मानो कुछ देर के लिए मैं वर्तमान से निकलकर अतीत के किसी स्वर्णिम युग में पहुँच गई थी।

इसके पश्चात मैं **भद्रकाली मंदिर** पहुंची। यह मंदिर एक सुंदर झील के किनारे स्थित है। मंदिर तक पहुँचने के मार्ग में हवा में हल्की नमी और आसपास फैली हरियाली मन को प्रसन्न कर रही थी। जैसे ही मंदिर के मुख्य परिसर में प्रवेश किया, देवी भद्रकाली की विशाल प्रतिमा के दर्शन हुए। उनके मुखमंडल पर एक साथ करुणा और शक्ति दोनों के भाव दिखाई देते हैं। मंदिर में उस समय अनेक श्रद्धालु उपस्थित थे। कोई परिवार की सुख-समृद्धि के लिए प्रार्थना कर रहा था, कोई अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना कर रहा था, तो कोई जीवन की कठिनाइयों से मुक्ति पाने के लिए देवी के चरणों में नतमस्तक था। मैं भी कुछ समय तक शांत भाव से वहाँ बैठी रही। मंदिर के पीछे स्थित झील का दृश्य अत्यंत मनोहारी था। हल्की हवा के साथ झील की लहरें सूर्य के प्रकाश से चमक रही थीं। उस क्षण मुझे एहसास हुआ कि धार्मिक स्थल केवल पूजा-अर्चना के केंद्र नहीं होते, बल्कि वे मानसिक शांति और आत्मिक संतुलन प्रदान करने वाले स्थान भी होते हैं। व्यस्त जीवन में जहाँ मनुष्य निरंतर भागदौड़ में लगा रहता है, वहीं ऐसे स्थल उसे स्वयं से मिलने का अवसर प्रदान करते हैं।

चूंकि इस यात्रा में मेरी बेटी मेरे साथ ही थी तो हमने दक्षिण भारतीय थाली का लुत्फ उठाने के बाद, **हनमकोंडा के प्राणी उद्यान** का भ्रमण किया। बचपन से ही मुझे वन्यजीवों के प्रति विशेष आकर्षण रहा है। चिड़िया घर में प्रवेश करते ही बच्चों की खिलखिलाहट और उत्साहपूर्ण आवाजें वातावरण को जीवंत बना रही थीं। परिवारों के साथ आए छोटे-छोटे बच्चे विभिन्न जानवरों को देखकर प्रसन्न हो रहे थे। स्कूल की ओर से कुछ छोटे बच्चे पिकनिक पर आए थे। तरह-तरह के पशु-पक्षियों को देखने को लेकर उनकी उत्सुकता देखते ही बनती थी। कोई शेर को देखने के लिए उत्साहित था, तो कोई लोमड़ी की तलाश में था। जब एक बच्चे को पता चला कि वहाँ लोमड़ी नहीं है, तो उसका चेहरा ऐसा उतर गया मानो वह अभी रो पड़ेगा। यह देखकर मुझे अपना बचपन याद आ गया।

चिड़िया घर में अनेक प्रकार के पशु-पक्षी थे, लेकिन जिस जीव को देखने की सबसे अधिक उत्सुकता थी, वह था सफेद बाघ। जब मैं उसके बाड़े के सामने पहुँची, तो कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध रह गई। उसका सफेद शरीर, काली धारियाँ और आत्मविश्वास से भरी चाल अत्यंत प्रभावशाली थी। वह धीरे-धीरे अपने क्षेत्र में घूम रहा था। उसके व्यक्तित्व में एक ऐसी गरिमा थी जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। उसे देखकर मन में एक ओर रोमांच उत्पन्न हुआ, तो दूसरी ओर वन्यजीव संरक्षण के महत्व का भी विचार आया। आज मानव विकास की दौड़ में अनेक जीव-जंतु संकट में हैं। यदि समय रहते उनके संरक्षण के लिए प्रयास न किए जाए, तो आने वाली पीढ़ियाँ इन्हें केवल पुस्तकों और चित्रों में ही देख पाएंगी। चिड़िया घर में बिताया गया समय केवल मनोरंजन का साधन नहीं था, बल्कि प्रकृति और जीव-जगत के प्रति संवेदनशील बनने का अवसर भी था।

वरंगल की यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण और बहुप्रतीक्षित पड़ाव था **वरंगल किला**। इतिहास में मेरी विशेष रुचि रही है, इसलिए इस स्थान को देखने की उत्सुकता सबसे अधिक थी। जैसे ही मैं किले के परिसर में पहुँची, मेरे सामने विशाल पत्थर के तोरणद्वार दिखाई दिए। यद्यपि समय और आक्रमणों ने इस किले को काफी क्षति पहुँचाई है, फिर भी इसकी भव्यता आज भी स्पष्ट रूप से अनुभव की जा सकती है।

किले के अवशेषों के बीच चलते हुए मैं बार-बार अतीत की कल्पना करने लगी। कभी यहाँ सैनिकों की आवाजाही होती होगी, कभी राज दरबार सजते होंगे, कभी विजय उत्सव मनाए जाते होंगे। आज जहाँ खंडहर दिखाई देते हैं, वहाँ कभी जीवन अपने पूरे वैभव के साथ विद्यमान रहा होगा। विशेष रूप से प्रसिद्ध **काकतीय कला तोरणम्** को देखकर मन गर्व से भर गया। यह केवल एक स्थापत्य संरचना नहीं, बल्कि तेलंगाना की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। उसकी भव्यता और कलात्मकता इस बात का प्रमाण है कि भारतीय स्थापत्य कला कितनी समृद्ध और विकसित रही है।

किले के परिसर में कुछ विद्यार्थी अपने अध्यापक के साथ इतिहास का अध्ययन कर रहे थे। उन्हें देखकर मुझे लगा कि इतिहास केवल पुस्तकों में पढ़ने की वस्तु नहीं है। जब हम ऐसे स्थानों को प्रत्यक्ष देखते हैं, तब इतिहास जीवंत हो उठता है और हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है।

मेरी यात्रा का अंतिम प्रमुख पड़ाव था **खुश महल**। यह स्थान अपेक्षाकृत शांत था और यहाँ पर्यटकों की संख्या भी कम थी। शायद यही कारण था कि मुझे इस स्थान का वातावरण और अधिक आकर्षक लगा। विशाल खुले मैदान के बगल में स्थित यह ऐतिहासिक भवन अपनी सादगी में भी अत्यंत प्रभावशाली प्रतीत होता है। महल की दीवारों को देखते हुए मैंने कल्पना की कि सदियों पहले यहाँ कैसी गतिविधियाँ होती होंगी। राजकीय समारोह, सांस्कृतिक आयोजन और महत्वपूर्ण बैठकों का दृश्य मानो आँखों के सामने उभरने लगा। इतिहास की यही विशेषता है कि वह हमारे सामने नहीं होता, फिर भी उसकी उपस्थिति हर पत्थर, हर दीवार और हर अवशेष में महसूस की जा सकती है।

खुश महल के आसपास कुछ देर बैठकर मैंने अपनी पूरी यात्रा के अनुभवों को मन ही मन दोहराया। हजार स्तंभ मंदिर की अद्भुत शिल्पकला, भद्रकाली मंदिर की आध्यात्मिक शांति, सफेद बाघ का रोमांचकारी दर्शन, वरंगल किले का गौरवशाली इतिहास और खुश महल की गंभीर ऐतिहासिक गरिमा; इन सभी ने मिलकर मेरी यात्रा को अविस्मरणीय बना दिया था।

जब वापसी का समय आया, तो मन में एक हल्की उदासी भी थी। अक्सर ऐसा होता है कि किसी स्थान से हमारा भावनात्मक संबंध बन जाता है और फिर वहाँ से विदा लेना आसान नहीं होता। वरंगल भी मेरे लिए केवल एक पर्यटन स्थल नहीं रह गया था। यह एक ऐसा अनुभव बन चुका था जिसने मुझे इतिहास का सम्मान करना, संस्कृति को समझना और प्रकृति के प्रति संवेदनशील होना सिखाया।

शाम को हमने स्टेशन के पास स्थित पी.वी.आर में एक फिल्म देखने का निश्चय किया। दिनभर की यात्रा और घूमने-फिरने के बाद सिनेमा का अनुभव अत्यंत आनंददायक रहा। हमारी ट्रेन रात में थी, इसलिए फिल्म समाप्त होने के बाद हम समय से पहले स्टेशन पहुँच गए।

स्टेशन पहुँचकर भी हमारी छोटी-सी खानपान यात्रा जारी रही। वहाँ हमने स्वादिष्ट डोसे और पूरी का आनंद लिया। स्टेशन के बाहर एक अनोखा रेस्तराँ था, जिसकी बनावट रेल के डिब्बे के समान थी। उसकी आकर्षक संरचना ने हमारा ध्यान खींच लिया, इसलिए हमने वहीं भोजन करने का निर्णय लिया। स्वादिष्ट भोजन के साथ उस विशेष वातावरण का अनुभव भी यादगार बन गया। रेल की खिड़की से पीछे छूटते वरंगल को देखते हुए मेरे मन में यही विचार था कि भारत की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता और सांस्कृतिक विरासत में निहित है। वरंगल इस विरासत का एक अनमोल अध्याय है।

यहाँ की प्रत्येक धरोहर अतीत की कहानी कहती है और हमें यह संदेश देती है कि अपनी सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण करना हमारा सामूहिक दायित्व है। रात के लगभग बारह बजे हमारी ट्रेन सिकंदराबाद पहुँची। इस प्रकार दिनभर के सुखद अनुभवों और मधुर स्मृतियों के साथ हमारी यात्रा का यह चरण संपन्न हुआ।

आज भी जब मैं उस यात्रा को याद करती हूँ, तो हजार स्तंभ मंदिर के पत्थरों पर उकेरी गई आकृतियाँ, भद्रकाली मंदिर की घंटियों की ध्वनि, सफेद बाघ की गरिमामयी चाल, वरंगल किले के विशाल तोरण और खुश महल की शांत दीवारें मेरी स्मृतियों में जीवंत हो उठती हैं। यह यात्रा मेरे लिए केवल एक भ्रमण नहीं था, बल्कि आत्मिक अनुभूति, ऐतिहासिक चेतना और सांस्कृतिक गौरव का अद्भुत संगम था।

निस्संदेह, वरंगल की यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे सुंदर और यादगार यात्राओं में से एक रहेगी।

19

प्रार्थना की महिमा



श्रीमती ए. एन. राघारमणी
पर्यवेक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना

जीवन में कठिनाइयाँ आती हैं, तो घबराने के बजाय ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए। प्रार्थना हमें उन कठिनाइयों का सामना करने का साहस और शक्ति प्रदान करती है। सृष्टि के रचयिता ईश्वर, जो सभी जीवों को फल, फूल और आहार प्रदान करते हैं, वे हमारे सभी विघ्न और बाधाओं को दूर करने की क्षमता रखते हैं।

प्रार्थना किसी एक स्थान तक सीमित नहीं है। हम मंदिर, मस्जिद, चर्च या गुरुद्वारा—कहीं भी प्रार्थना कर सकते हैं, क्योंकि सभी प्रार्थनाएँ एक ही परमात्मा तक पहुँचती हैं। सच्चे मन से की गई प्रार्थना हमें ईश्वर के निकट ले जाती है और ऐसा अनुभव कराती है मानो हम उनके साक्षात् दर्शन कर रहे हों। ईश्वर की आराधना के लिए किसी विशेष स्थान पर जाना आवश्यक नहीं है। सच्चाई और धर्म के मार्ग पर चलना भी एक प्रकार की प्रार्थना ही है। अध्यात्म के अनुसार, प्रार्थना ईश्वर तक पहुँचने का सबसे सरल और प्रभावी माध्यम है।

मद्यपान और मांसाहार में धन व्यय करने की अपेक्षा, यदि हम पूजा-पाठ और प्रार्थना में समय और संसाधन लगाएँ, तो यह हमारे जीवन को अधिक शांत, संतुलित और सुखद बनाता है। इससे आत्मिक आनंद की प्राप्ति होती है और जीवन का मार्ग भी सुगम होता है। कठिनाइयों से घिरा हुआ व्यक्ति जब सच्चे मन से प्रार्थना करता है, तो ईश्वर उसकी पुकार अवश्य सुनते हैं और उसकी समस्याओं का समाधान करते हैं। जिस प्रकार एक माँ अपने रोते हुए बच्चे को प्यार और स्नेह से शांत करती है, उसी प्रकार ईश्वर भी हमारी प्रार्थनाओं को सुनकर हमारी सहायता करते हैं।

हमें नियमित रूप से ईश्वर का स्मरण करना चाहिए और श्रद्धा के साथ प्रार्थना करनी चाहिए। प्रार्थना का फल निश्चित रूप से प्राप्त होता है। इसके साथ ही, हमें सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए, क्योंकि असत्य बोलने से हमारी प्रार्थना की पवित्रता कम हो जाती है।

भारत आध्यात्मिक धरोहरों से समृद्ध देश है। यहाँ अनेक पवित्र ग्रंथ जैसे भगवद् गीता, होली बाइबिल और कुरान उपलब्ध हैं, जिनसे हम सत्य, धर्म और सदाचार का मार्ग सीख सकते हैं। इन शिक्षाओं का पालन करके हम अपने जीवन को श्रेष्ठ और सार्थक बना सकते हैं।

20

जमाई षष्ठी: एक दिन का राजा



श्रीमती हीना अज़ीज़
लेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना

पश्चिम बंगाल की सांस्कृतिक परंपराओं में **जमाई षष्ठी** का विशेष स्थान है। यह त्योहार ज्येष्ठ महीने की शुक्ल षष्ठी तिथि को मनाया जाता है। इसकी जड़ें बंगाल की लोक-आस्थाओं में मिलती हैं, जहाँ **माँ षष्ठी** को संतान की रक्षा और परिवार की समृद्धि की देवी माना जाता है। समय के साथ यह धार्मिक परंपरा एक सामाजिक उत्सव में बदल गई, जिसमें सास-ससुर अपने दामाद का आदर-सत्कार करते हैं और उसके सुख-समृद्धि की कामना करते हैं।

आज के समय में यह त्योहार इतना लोकप्रिय हो गया है कि बंगाल में मज़ाक-मज़ाक में कहा जाता है—"साल के 364 दिन दामाद सामान्य नागरिक रहता है, लेकिन जमाई षष्ठी के दिन वह राजा बन जाता है।"

कोलकाता के रहने वाले सुब्रतो बाबू इस त्योहार को पूरी गंभीरता से मानते थे। जमाई षष्ठी से कुछ दिन पहले सुब्रतो बाबू अपनी पत्नी मीता से कहते हैं "देखो, इस बार मैं तीन दिन पहले से डाइटिंग करूँगा। ससुराल में अच्छी मात्रा में भोजन ग्रहण कर, जीत के झंडे को फहराऊंगा ।"

मीता हँसते हुए बोली, " जीत के झंडे? पिछले साल भी तो तुमने पाँच तरह की मछली, दो दर्जन मिठाइयाँ और चार बार आम खाए थे। अब कितने झंडे फहराओगे? "

जमाई षष्ठी की सुबह सुब्रतो बाबू नए-नए कुर्ते और पजामे में ससुराल की ओर कूच करते हैं। सासू माँ ने अपने दामाद की आरती उतारी, और माथे पर राजतिलक लगाकर उनका स्वागत किया। सुब्रतो बाबू के चेहरे के राजकीय हाव-भाव देख कर मीता मंद-मंद मुस्कुराती हैं।

भोजन शुरू हुआ। अनेकों प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों को देख कर सुब्रतो बाबू का आत्मविश्वास गगनचुम्बी हो गया। पहले आई शुक्तो, फिर लूची, फिर चिंगड़ी, फिर इलिश माछ, फिर मटन और फिर मिठाइयों की सेना।

"बस, अब और नहीं" कहते हुए सुब्रतो बाबू इन सेनाओं को पराजित करने में लगे रहे। दोपहर, भोजन के बाद सुब्रतो बाबू सोफे पर ऐसे बैठे थे जैसे किसी राज्याभिषेक के बाद थका हुआ राजा सिंहासन पर विश्राम कर रहा हो। तभी उनका साला बाप्पा बोला, "जमाई बाबू, अभी शाम की दावत बाकी है।" सुब्रतो बाबू का चेहरा ऐसा हो गया जैसे किसी छात्र को बताया जाए कि परीक्षा अभी शुरू हुई है।

शाम को पूरा परिवार हँसी-मज़ाक में जुट गया। पुराने किस्से निकले, बचपन की बातें हुईं, फोटो खींचे गए और सबने मिलकर समय बिताया। इसी बीच दूर चारपाई पर बैठे दादाजी ने मुस्कुराते हुए कहा, "लोग समझते हैं कि जमाई षष्ठी केवल खाने-पीने का त्योहार है, लेकिन इसकी असली बात कुछ और है।" सब उनकी ओर देखने लगे।

उन्होंने कहा, "शादी केवल दो लोगों का नहीं, दो परिवारों का संबंध होता है। यह त्योहार उस संबंध को मजबूत करने का अवसर देता है। साल भर की व्यस्तता में लोग एक-दूसरे से दूर हो जाते हैं, लेकिन ऐसे अवसर परिवारों को फिर से साथ बैठने, बातचीत करने और स्नेह बाँटने का मौका देते हैं।"

सुब्रतो बाबू पान चबाते हुए चुप चाप सब सुन रहे थे। लौटते समय घर की चौखट पर मीता ने पूछा, "तो महाराज, आज का अनुभव कैसा रहा?" सुब्रतो बाबू ने पेट पर हाथ रखते हुए कहा, "राजा होना आसान नहीं है। प्रजा से ज्यादा कष्ट तो राजा ही झेलता है!" तभी सुब्रतो बाबू के डकार की दहाड़ सब सुनते हैं और हँस पड़ते हैं।

लिफाफ़े में मिले हुए शगुन के पैसे को गिनते हुए सुब्रतो बाबू घर की ओर शान से चल पड़ते हैं। सच तो यह है कि जमाई षष्ठी केवल दामाद को विशेष सम्मान देने का दिन नहीं है। यह परिवारों के बीच प्रेम, विश्वास और आत्मीयता को बनाए रखने का एक सुंदर सामाजिक माध्यम है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में जब रिश्तों के लिए समय निकालना कठिन होता जा रहा है, तब ऐसे त्योहार हमें याद दिलाते हैं कि रिश्तों की मिठास केवल शब्दों से नहीं, बल्कि साथ बैठने, हँसने और एक-दूसरे को महत्व देने से बनी रहती है। और हाँ, बंगाल के दामादों के लिए यह दिन आज भी किसी राजकीय उत्सव से कम नहीं माना जाता।

21

घुटना टूटा था... हौसला नहीं



सुश्री हेज़ल वैष्णव,पुत्री- श्री मिलिंद वैष्णव
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना

उस दिन मैदान में बहुत शोर था। लोग तालियाँ बजा रहे थे। बच्चे दौड़ रहे थे और मैं हमेशा की तरह सबसे आगे खड़ी होकर अपने पापा को खेलते देख रही थी। मेरे पापा को क्रिकेट से बहुत प्यार है, इतना प्यार जितना शायद कोई अपनी सबसे प्यारी चीज़ों से करता है। जब वे बैट पकड़ते थे, तो उनके चेहरे पर एक खुशी-सी चमक आ जाती थी। मुझे लगता था—मेरे पापा कभी हार नहीं सकते लेकिन जिंदगी हमेशा हमारी सोच जैसी नहीं होती।

एक गेंद रोकने के लिए पापा तेजी से दौड़े... और अगले ही पल वे ज़मीन पर गिर पड़े। पहले सबको लगा कि वे उठ जाएंगे। मैं भी मुस्कुराई, क्योंकि मेरे पापा हमेशा उठ जाते थे लेकिन इस बार वे नहीं उठ पाए। मैदान का शोर अचानक शांत हो गया।

उस रात अस्पताल की सफेद दीवारें मुझे बहुत डरावनी लग रही थीं। डॉक्टर की वो आवाज़ मुझे आज भी याद है—"ए.सी.एल. फट गया है। शल्य-चिकित्सा (Surgery) करनी पड़ेगी।"

मैंने पहली बार अपनी माँ की आँखों में डर देखा और पहली बार अपने पापा की आँखों में टूटने का एहसास। ऑपरेशन के बाद सब बदल गया। जो इंसान पूरे घर में सबसे ज्यादा हँसता था, वही अब सबसे ज़्यादा शांत रहने लगा। उनका क्रिकेट बैट कमरे के कोने में धूल जमा रहा था। और पापा खिड़की के बाहर बस चुपचाप देखते रहते।

एक दिन मैंने उन्हें अकेले में रोते देखा। उस पल मुझे समझ आया कि कभी-कभी बड़े लोग भी टूट जाते हैं। बस वे बच्चों की तरह ज़ोर से रो नहीं पाते। यहीं से शुरू हुई फिर दर्द की सबसे लंबी कहानी। हर सुबह व्यायाम, उपचार (Physiotherapy), हर कदम पर दर्द, कभी घुटना जवाब दे देता, कभी हिम्मत लेकिन मेरे पापा ने हार नहीं मानी। वे दीवार पकड़कर चलते और मैं उनका हाथ पकड़कर।

कई बार दर्द इतना होता कि उनके माथे पर पसीना आ जाता। फिर भी जब मैं पूछती—"पापा, दर्द हो रहा है?" तो वे मुस्कुराकर कहते—"चैंपियंस दर्द से नहीं डरते।" लेकिन मैं जानती थी कि वे बहुत हार रहे थे। रात को जब सब सो जाते, मैं भगवान जी से बस एक छोटी-सी प्रार्थना करती—"कृपया मेरे पापा को फिर से मैदान तक पहुँचा दो।" धीरे-धीरे चमत्कार होने लगा। उनके कदम मजबूत होने लगे। चेहरे पर मुस्कान आने लगी। और एक दिन उन्होंने फिर से अपना क्रिकेट बैट बाहर निकाला। कुछ महीनों बाद वही मैदान फिर सामने था। लेकिन इस बार दिल की धड़कन पहले से तेज थी।

पापा ने बैट उठाया, पूरा मैदान उन्हें देख रहा था। पहली गेंद आई... और... ठक! गेंद सीधा सीमा रेखा के बाहर गई। पूरा मैदान तालियों से गूँज उठा लेकिन मैं कुछ देख नहीं पाई, क्योंकि मेरी आँखों में आँसू थे... खुशी के आँसू। उस दिन मैंने समझा—हीरो वो होता है जो टूटकर भी दोबारा खड़ा होता है, ना कि जो कभी गिरता नहीं।

मेरे पापा का ए.सी.एल. फटना सिर्फ एक चोट नहीं थी। वह हमारे पूरे परिवार की परीक्षा थी और मेरे पापा ने उस परीक्षा को हिम्मत, दर्द और मुस्कान से जीत लिया। आज जब लोग उन्हें मैदान में खेलते देखते हैं, उन्हें एक खिलाड़ी दिखाई देता है लेकिन मुझे... मुझे एक योद्धा दिखाई देता है।

क्योंकि मेरे पापा ने मुझे ये सिखाया—**अगर हौसला ज़िंदा हो, तो इंसान दोबारा उड़ना सीख सकता है।**

22 कृषि उत्पादन में पर्यावरण का योगदान



श्री विनय कुमार
सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), तेलंगाना

बहुत सर्वे बताते हैं कि वर्ष-दर-वर्ष जंगलों का दायरा सिमटता जा रहा है। जल स्त्रोत भी घटते जा रहे हैं एवं नदियाँ रास्ता बदल रही हैं क्योंकि नदियों में पानी काफी कम हो रहा है, जो नहीं के बराबर है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 2021 विश्व पर्यावरण दिवस पर चुना गया विषय 'पारिस्थितिकी तंत्र बहाली' है। पारिस्थितिकी तंत्र बहाली कई रूप में कर सकते हैं। जैसे पेड़-पौधा लगाकर, कृषि वानिकी को बढ़ावा देकर व कृषि में पर्यावरण हितैषी उचित तकनीक अपनाकर आदि। इस अवसर पर हम सबको संरक्षण पूर्ण प्रौद्योगिकियों का प्रयोग कर बेहतर पर्यावरण पर जोर देना, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:-

(i) समेकित कीट प्रबंधन: एकीकृत कीट खरपतवार प्रबंधन के अंतर्गत कीट खरपतवार नियंत्रण के विभिन्न तरीके एक साथ अपनाने से न केवल एक विधि में नियंत्रण पर निर्भरता कम हो जाती है बल्कि कीटों, खरपतवारों का प्रभावी नियंत्रण भी हो जाता है। इस विधि का प्रमुख उद्देश्य कीटों, खरपतवार नियंत्रण में कीटनाशी, शाकनाशी की मात्रा को कम करना जिससे इन रसायनों के पर्यावरण पर होने वाले दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है। फसल एवं फसल प्रणाली में कीट/खरपतवार प्रबंधन एक अच्छा, सस्ता एवं सरल तरीका है। इसलिए विभिन्न फसल प्रणालियों में कीट खरपतवार प्रबंधन के लिए समेकित कीट। खरपतवार प्रबंधन की सिफारिश की जानी चाहिए।

(ii) कीटों का जैविक नियंत्रण: कीटों की संख्या कम करने के लिए प्रयोगशाला जनित मित्र जीवों का उपयोग भी किया जाता है जैसे धान के तना छेदक के लिए ट्राइकोग्राम जापोनिकम, धान के पत्ता लपेटक और मक्का के तना छेदक के लिए ट्राइकोग्राम चिलोनिस तथा टमाटर के फल छेदक और तबाकू की इल्ली (स्पोडोप्टेरा लिटुरा) के लिए न्यूक्लियोपोलीहेड्रोसिस वायरस का उपयोग इन कीटों के पर्यावरण अनुकूल नियंत्रण के लिए किया जा सकता है। ट्राइकोग्राम सब्जियों में कीटों की रोकथाम के लिए उत्तम पाया गया है। ट्राईकोग्राम एक सूक्ष्म अंड परजीवी है जो तना छेदक, फली छेदक एवं पत्ती खाने वाले कीटों के अंडों पर आक्रमण करते हैं। ट्राईकोकार्ड पोस्टकार्ड के तरह की एक कार्ड होती है जिसपर लगभग 20 हजार परजीवी ट्राईकोग्राम पलते हैं। यह कार्ड कपास, गन्ना, धान जैसी फसलों में लगने वाले भेदक कीड़ों को नियंत्रित करते हैं।

(iii) रोगों का जैविक नियंत्रण:- भूमि में बहुत से ऐसे लाभकारी सूक्ष्मजीव पाये जाते हैं जो किसी न किसी प्रकार से रोग पैदा करने वाले रोग जनकों की संख्या एवं क्रियाशीलता को प्रभावित करते हैं जिससे मृदा जनित रोगों के प्रबंधन में मदद मिलती है। इन लाभकारी सूक्ष्मजीवों की संख्या कृत्रिम विधि द्वारा मृदा में बढ़ाना एवं रोगजनक सूक्ष्मजीवों की संख्या एवं क्रियाशीलता को कम करना, रोगों का जैविक नियंत्रक कहलाता है। ट्राईकोडर्मा विरिडी, ट्राईकोडर्मा हार्वियानम, स्यूडोमोनास फ्ल्युरोसेन्स, बैसिलस सबटिलिस, बैसिलस एमाइलोलिक्विफेशिंस आदि जैविक नियंत्रण का प्रयोग बीजोपचार के लिए किया जा सकता है।

(iv) नीम लेपित यूरिया का उपयोग: खेत में डालने के बाद यूरिया जब विघटित होता है तो यह नाइट्रस ऑक्साइड, नाइट्रेट, अमोनियम जैसे तत्वों में बदल जाता है। जमीन में नाइट्रेट एवं अमोनियम रहने से भूजल प्रदूषित हो जाता है। जमीन में मौजूद खेती के लिए लाभदायक बैक्टीरिया एवं अन्य सूक्ष्मजीवों की क्रियाशीलता पर भी इनका प्रतिकूल असर पड़ता है। इसके कारण पैदावार में गिरावट आ जाती है। सरकार ने शत-प्रतिशत नीम लेपित यूरिया के उत्पादन की शुरुआत की है। नीम लेपित यूरिया का प्रयोग बढ़ने से यूरिया में उपस्थित नाइट्रोजन का मृदा में लीचिंग व डीनाइट्रीफिकेशन की क्रिया को कम करता है। इसके अलावा नीम युक्त यूरिया का प्रयोग करके नाइट्रोजन उपयोग दक्षता को भी बढ़ाया जा सकता है। नीम में नाइट्रीकरण निषेधक गुण प्रमाणित है और

इसके उपयोग से यूरिया से नाइट्रोजन छोड़ने की गति धीरे-धीरे एवं लंबे समय तक होती रहती है। इस प्रकार फसल वृद्धि काल में नाइट्रोजन लंबे समय तक पौधों को उपलब्ध रहता है जिससे नाइट्रोजन की कम-से-कम हानि होती है। जिसके फलस्वरूप नाइट्रोजन उपयोग दक्षता में वृद्धि होती है।

(v) कृषि वानिकी: देश में कृषि के लिए वानिकी क्षेत्र में काफी विस्तार हुआ है जिसके अंतर्गत एक ही भू-खंड पर फसलों के साथ बहुउद्देशीय पेड़ों-झाड़ियों के उत्पादन के साथ-साथ पशुपालन को लगातार या क्रमबद्ध तरीके से किया जाता है। इससे न केवल भूमि की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाया जाता है बल्कि खेत के पारिस्थितिकी, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र पारिस्थितिकी, सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है। कृषि-वानिकी से न केवल खाद्यान्नों, चारा, ईंधन, फलों, सब्जियों और लकड़ी उत्पादन बढ़ता है बल्कि भूमि के प्रति इकाई क्षेत्र से होने वाली आय में भी वृद्धि होती है। जो अन्ततः जैव विविधता को बढ़ावा देने के साथ-साथ एक सुदृढ़ एवं स्वच्छ पर्यावरण प्रदान करता है। देश के कई क्षेत्रों में इस जलवायु अनुकूल संरचना का प्रभाव रहा है। अतः कृषि वानिकी मिशन के अंतर्गत पेड़ लगाओ अभियान की शुरुआत की गई है। अतः कृषि वानिकी पर्यावरण संरक्षण और मृदा संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान रखती है।

(vi) समन्वित पोषण प्रबंधन: समन्वित पोषण प्रबंधन से तात्पर्य यह है कि पौधों को पोषक तत्व प्रदान करने वाले सभी संभव स्त्रोत जैसे रासायनिक उर्वरक, जैविक खाद, जैविक उर्वरक, फसल अवशेष इत्यादि का कुशलतम समायोजन कर फसलों को संतुलित पोषण दिया जाए जिससे मृदा पोषक तत्व भी पौधों को धीरे-धीरे एवं लंबे समय तक प्राप्त हों। अतः भूमि की उर्वरता शक्ति को बनाए रखने हेतु फसलों में रासायनिक उर्वरकों के साथ जैविक खादों एवं जैविक उर्वरकों का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। अतः फसलोंत्पादन की एक टिकाऊ व्यवस्था बनाए रखने के लिए यूरिया पर निर्भरता कम करने हेतु पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति के अन्य किस्मों को पोषक तत्व प्रबंधन में शामिल करने की आवश्यकता है। समन्वित पोषण प्रबंधन अपनाने से न केवल खाद्य एवं पोषण प्रबंधन अपनाने से न केवल खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित होगी बल्कि इससे विविधीकृत खेती को भी बढ़ावा मिलेगा।

(vii) फसल विविधीकरण: खेती में लगातार एक ही प्रकार की फसलें उगाने एवं विभिन्न आदानों का प्रयोग करने से न केवल फसलों के पैदावार में कमी आई बल्कि उनकी गुणवत्ता में भी गिरावट दर्ज की गई। एक फसल प्रणाली न तो आर्थिक दृष्टि से लाभदायक है और न ही पारिस्थितिक दृष्टि से अधिक उपयोगी है। अतः कृषक धान्य फसलों के साथ दलहन फसलें, बागवानी फसलें, पशुपालन, नकदी फसल एवं मधुमक्खी पालन को भी अपनाना चाहिए। जिससे यदि किसी वर्ष मुख्य फसल नष्ट हो जाए तो अन्य कृषि व्यवसाय किसानों की आमदनी का स्रोत बन जाता है। फसल विविधीकरण का मुख्य लक्ष्य पर्यावरण एवं मृदा स्वास्थ्य का बचाव और उच्च कृषि पैदावार बनाए रखने, ग्रामीण रोजगार सृजन एवं बेहतर आर्थिक लाभ पाने हेतु कृषि-बागवानी, मत्स्यकी, वानिकी, पशुधन प्रणाली के बढ़ाने अनुकूल स्थितियाँ पैदा करना है। विविध फसल चक्र कीट एवं व्याधियों के प्रकोप को कम करते हैं। अतः फसल विविधीकरण की तकनीक और कृषि प्रणाली को किसानों तक पहुँचाकर देश में खाद्यान्न उत्पादन, बेहतर पर्यावरण और संसाधनों की माता एवं उसकी गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है। लघु एवं सीमान्त किसानों के लिए कृषि क्षेत्रों में जोखिम कम कर अधिक आय लेने के लिए फसल विविधीकरण क्रियात्मक घटक है।

(viii) जैविक खेती पर जोर: रासायनिक उर्वरकों के जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल पर रोक लगाने के लिए पारम्परिक जैविक खेती पर जोर देना आवश्यक है। जैविक खेती पोर्टल के जरिए जैविक उत्पादों के ऑनलाइन राष्ट्रीय बाजार को मजबूत बनाया जाएगा। सरकार ने बजट में जैविक उत्पादों को बढ़ावा देने के रणनीति पर बल देकर एक साथ कई लक्ष्यों साधने की कोशिश की। इससे जहाँ एक ओर जैविक उत्पादों के बढ़ती वैश्विक माँग से किसानों को कम लागत में ज्यादा लाभ मिल सकेगा वहीं रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अधिक इस्तेमाल पर अंकुश भी लगेगा। इस कदम से न केवल भूमि की उपजाऊ क्षमता बरकरार रह सकेगी बल्कि सरकार पर सब्सिडी का बोझ भी कम होगा। प्राकृतिक संसाधनों का बेहतर प्रयोग और अन्य आदानों जैसे - उर्वरक एवं कीटनाशकों का प्रयोग न होने के यह विधि में भूमि जैव विविधता भी बढ़ती है।

(ix) मोटे अनाजों की खेती पर जोर: मोटे अनाज स्वास्थ्यवर्धक ही नहीं बल्कि पर्यावरण को भी बेहतर बनाए रखने में मदद करते हैं। ये मोटे अनाज आयरन, जिंक, कॉपर एवं प्रोटीन जैसे पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। जबकि मोटे अनाज की खेती के लिए यूरिया की कोई खास जरूरत नहीं होती है। यह कम पानी वाली जमीन में भी आसानी से उगाई जा सकती हैं। पिछले सालों में मोटे अनाज की पैदावार में गिरावट आई है। इसी कारण से इस पर जोर दिया जा रहा है ताकि जमीन की उर्वरता बनाये रखने में सुगमता हो।

(x) एरोबिक धान:- धान उत्पादन की इस विधि में एरोबिक जो धान के पौधों को खेत तैयार कर सीधे खेतों में बो दिया जाता है। इससे पानी की असीम बचत होती है। चूँकि इस विधि के अंतर्गत खेतों में पानी नहीं भरते हैं, इसलिए धान के खेतों में वायवीय वातावरण बना रहता है जिसके परिणामस्वरूप विनाइट्रीकरण की क्रिया द्वारा नाइट्रोजन के ह्रास को रोका जा सकता है। सामान्य धान की फसल में दिए गए नाइट्रोजन उर्वरकों का नुकसान मुख्य रूप से अमोनिया वाष्पीकरण, विनाइट्रीकरण एवं लीचिंग द्वारा होता है। जो अन्ततः हमारे पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं। धान उगाने की एरोबिक विधि में उपर्युक्त सभी समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है। इस विधि के उपयोग से पर्यावरण प्रदूषण में भी कमी लाई जा सकती है। अतः भारत में कम पानी वाले क्षेत्रों में इस तकनीक को उपयोगी बनाने की नितांत आवश्यकता है जिससे हमारे प्राकृतिक संसाधनों का जरूरत से ज्यादा दोहन न हो।

निष्कर्ष:- भविष्य में खाद्यान्न आपूर्ति, पर्यावरण संरक्षण, कृषि उत्पादों की गुणवत्ता एवं पौष्टिकता के लिए हमें खेती में पर्यावरण हितैषी तकनीकों का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए। जिससे ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, भुखमरी और कुपोषण जैसी गंभीर समस्याओं से मुक्ति मिल सके। अंत में हम कह सकते हैं कि बचाव उपचार से कहीं ज्यादा अच्छा है।

23

डेटा-आधारित ऑडिट



श्री मनीष कुमार गरजे
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), तेलंगाना

डेटा क्या है?

- ✓ जब कोई ट्रांज़ैक्शन या स्कीम लागू की जाती है, तो डेटा बनता है।
- ✓ डेटा को डेटाबेस में रखा जाता है।
- ✓ डेटा डेटाबेस में स्टोर होता है जिसमें टेबल, रिकॉर्ड और फ़ील्ड होते हैं।
- ✓ डेटा में "लाभार्थी का डेटा", "खरीद का डेटा", "बिक्री का डेटा", "संपत्ति का डेटा", "कर्मचारी प्रोफ़ाइल का डेटा", "वेतन और भत्ते का डेटा", "टेंडर का डेटा", "भुगतान का डेटा" आदि शामिल हो सकते हैं।

डेटा क्यों महत्वपूर्ण है?

- ✓ डेटा "पूर्ण", "वेरिफ़ाइड" और "विश्वसनीय" होना चाहिए।
- ✓ डेटा किसी स्कीम के लागू होने के तरीके को वैसे ही दिखाता है जैसे मानव शरीर में किसी समस्या का पता लगाने के लिए सीरम टेस्ट किया जाता है।
- ✓ डेटा बहुत "महत्वपूर्ण", "संवेदनशील" और "गोपनीय" होता है, इसलिए इसे सुरक्षित रखना ज़रूरी है। इसका इस्तेमाल ज़िम्मेदार और नियुक्त अधिकारी ही अपने आधिकारिक काम या मकसद के लिए करते हैं।

डेटा का विश्लेषण कैसे किया जाता है?

- ✓ डेटा का विश्लेषण कंप्यूटर-असिस्टेड ऑडिटिंग तकनीक (CAAT) जैसे MS Excel, IDEA, Orange, Python, Tableau आदि का इस्तेमाल करके किया जाता है।
- ✓ डेटा का विश्लेषण किसी गड़बड़ी, विचलन या 'रेड फ़्लैग' (चेतावनी संकेत) का पता लगाने के लिए किया जाता है, जैसे किसी स्कीम के तहत ट्रांज़ैक्शन को तय अधिनियम, नियमों, रेगुलेशन, सरकारी आदेशों, सरकारी कार्यवाही, सरकारी मेमोरेंडम, गाइडलाइन या फ़्रेमवर्क के अनुसार ठीक से लागू किया गया है य नहीं।

डेटा विश्लेषण पर गड़बड़ी/विचलन/रेड फ़्लैग के उदाहरण

किसी स्कीम के लिए डेटा विश्लेषण करते समय मिलने वाली गड़बड़ियों/विचलन/रेड फ़्लैग के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं (यह सूची पूरी नहीं है):

(i) यह जांचना कि क्या अलग-अलग सत्ता (इकाई) का आधार नंबर, मोबाइल नंबर, PAN नंबर, GST नंबर, कर्मचारी ID, बैंक खाता नंबर, रजिस्ट्रेशन नंबर आदि एक ही है।

(ii) यह जांचना कि क्या आधार नंबर, मोबाइल नंबर, PAN नंबर और GST नंबर के अंक स्टैंडर्ड डिज़ाइन फ़ॉर्मैट के अनुसार हैं या नहीं।

(iii) GST नंबर की जांच करना क्योंकि इसमें PAN नंबर शामिल होता है।

(iv) उस सत्ता (इकाई) की जांच करना जिसे कई बैंक खातों में भुगतान किया गया है।

(v) एक ही सत्ता (इकाई) को किए गए डुप्लिकेट भुगतान की जांच करना।

(vi) यह जांचना कि सत्ता (इकाई) से ली गई राशि, बताई गई/तय राशि के अनुसार है या नहीं।

24

वो जरा-सा लाल रंग



सुश्री नंदिनी साव
कनि. अनुवाद अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), तेलंगाना

वो जरा-सा लाल रंग
अच्छा लगता है।
कभी माथे पर बिंदी सा ,
कभी ललाट पर सिंदूर सा,
कभी होठों पर लाली सा,
कभी गालों पर गुलाबी सा —

वो जरा-सा लाल रंग
अच्छा लगता है।
कभी गोधूली बेला में सुनहरी छाया सी,
कभी सुबह की पहली किरण के उजाले सी,
वो जरा सा-लाल रंग
हर रूप में,
अच्छा लगता है।

वो जरा-सा लाल रंग
अच्छा लगता है,
क्योंकि वह सिर्फ लाल नहीं,
वह जीवन है,
वह यादें हैं,
वह प्रेम रूपी हल्की - सी जादू की चमक है।

वो जरा-सा लाल रंग
कभी साहस बनकर उभरता है,
कभी प्रेम बनकर पिघलता है,
कभी गरिमा बनकर ठहरता है,
कभी स्मृति बनकर बस जाता है।

वो जरा-सा लाल रंग
न सिर्फ रंग है,
यह जज़्बात है,
यह पहचान है,
यह आत्मा की गहराई में
जलता हुआ विश्वास है,
जीवन के छोटे-छोटे सुख का अहसास है,
यह जीवन की हल्की सी खुशबू है।

यह रंग कहता है—
"जीवन छोटा है, हर पल में सौंदर्य है,
हर छोटा स्पर्श मायने रखता है।"
वो जरा-सा लाल रंग
हर रूप में, हर क्षण में
जीवन की कोमलता और प्रेम की झलक है।

25

योग: मेरे जीवन का संबल



श्री महाराज गुप्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), तेलंगाना,हैदराबाद

नमस्कार पाठकों,

आज एक बार फिर मैं आपके समक्ष एक नया लेख प्रस्तुत कर रहा हूँ। आज का यह लेख **योग के महत्त्व** से संबंधित है। अभी कुछ ही दिनों पहले हम सभी ने **अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून)** मनाया। इसी विषय पर मैं अपने विचार आपके सामने रखने का प्रयास कर रहा हूँ। यह लेख केवल सुनी, पढ़ी या देखी हुई बातों पर आधारित नहीं है, बल्कि पिछले लगभग **20 वर्षों से अपने जीवन में योग के किए गए व्यक्तिगत अनुभवों और प्रयोगों** पर आधारित है।

मुझे आशा है कि मेरी यह रचना आप सभी को पसंद आएगी तथा इससे हम सबके जीवन में कुछ न कुछ सकारात्मक परिवर्तन अवश्य आएंगे। इसी आशा के साथ आइए, इस लेख की शुरुआत करते हैं।

योग हमारी भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर और पहचान है। सदियों से हमारे ऋषि-मुनियों, संतों और महापुरुषों ने इसे अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाया है। वे ध्यान एवं तपस्या के माध्यम से योग साधना करते थे और अपने तपोबल से अनेक अद्भुत सिद्धियाँ एवं आत्मिक शक्तियाँ प्राप्त करते थे। योग के माध्यम से वे अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण स्थापित कर मन को वश में रखते थे। इसका उल्लेख हमारे धार्मिक ग्रंथों से लेकर अनेक ऐतिहासिक एवं लिखित दस्तावेजों में मिलता है।

योग विषय पर अब तक असंख्य पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। आज आधुनिक विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान भी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि योग का हमारे दैनिक जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण और सकारात्मक प्रभाव है। यही कारण है कि आज संपूर्ण विश्व, भारत की इस महान परंपरा को अपनाते हुए प्रत्येक वर्ष **21 जून** को **अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस** के रूप में मनाता है।

योग को वैश्विक पहचान दिलाने और जन-जन तक सरल रूप में पहुँचाने में **स्वामी रामदेव जी** का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने योग को सरल, सहज और व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत कर करोड़ों लोगों के जीवन का हिस्सा बनाया। उनके अथक प्रयासों से योग घर-घर तक पहुँचा और आज भारत विश्व पटल पर **'योग गुरु'** की भूमिका निभा रहा है। यह हम सभी भारतवासियों के लिए गर्व और हर्ष का विषय है।

अब मैं आप सभी के साथ यह साझा करना चाहता हूँ कि योग का मेरे जीवन पर कितना गहरा प्रभाव पड़ा, क्यों पड़ा और किस प्रकार उसने मुझे जीवन के कठिनतम दौर में भी आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान की।

मेरा नाम **महाराज गुप्ता** है और वर्तमान में मैं **प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), तेलंगाना, हैदराबाद** के कार्यालय में **सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी** के पद पर कार्यरत हूँ। आज मैं अपनी पूरी क्षमता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन कर पा रहा हूँ, तो उसके पीछे योग का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है।

वास्तव में मैं एक दुर्लभ आनुवंशिक (Genetic) तंत्रिका संबंधी बीमारी **एच.एम.एस.एन./सी.एम.टी.-4 (HMSN/CMT-4)** से पीड़ित हूँ। इस बीमारी का निदान वर्ष **2007** में **All India Institute of Medical Sciences (एम्स, नई दिल्ली)** में हुआ था।

इस बीमारी के बारे में संक्षेप में बताना चाहूँगा। इसमें शरीर की नसें (Nerves) मस्तिष्क तक आवश्यक संकेत (Signals) सही ढंग से नहीं पहुँचा पाती हैं, जिसके कारण शरीर की गति नियंत्रित करने वाली प्रणाली (Motor System) प्रभावित होने लगती है। सामान्यतः इसका प्रभाव सबसे पहले पैरों पर दिखाई देता है। धीरे-धीरे पैरों की मांसपेशियाँ क्षीण (Muscle Wasting) होने लगती हैं, संवेदनशीलता कम होने लगती है तथा पैर की उँगलियाँ, टखने और घुटनों के जोड़ कठोर होकर विकृत होने लगते हैं। इसके साथ ही फुट ड्रॉप (Foot Drop), टो ड्रॉप (Toe Drop), घुटनों का बार-बार मुड़ जाना (Knee Buckling) जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति के लिए चलना, संतुलन बनाए रखना तथा खड़े होना अत्यंत कठिन हो जाता है।

समय के साथ यह बीमारी हाथों तथा शरीर के अन्य अंगों, जैसे आँखों, कानों, गर्दन आदि को भी प्रभावित कर सकती है। इसकी सबसे गंभीर अवस्था तब होती है जब इसका प्रभाव श्वसन तंत्र पर पड़ने लगता है। ऐसी स्थिति में रोगी को भोजन निगलने, श्वास लेने तथा दैनिक जीवन की सामान्य गतिविधियाँ करने में भी अत्यधिक कठिनाई होने लगती है।

यदि अपने जीवन की बात करूँ तो इस समस्या की शुरुआत वर्ष **1997** में मेरे दाएँ पैर में हुए ओपन फ्रैक्चर (Open Fracture) के उपचार के बाद हुई। उस समय मेरी आयु लगभग सात-आठ वर्ष रही होगी। जब फ्रैक्चर से उबरने के बाद मैंने दोबारा चलना शुरू किया, तब पैरों में अत्यधिक कमजोरी, संतुलन बिगड़ना तथा बार-बार गिरने जैसी समस्याएँ महसूस होने लगी।

परिवार के लोगों ने यह समझा कि फ्रैक्चर के दौरान अधिक रक्तस्राव होने के कारण कमजोरी आ गई है और समय के साथ सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसी आशा के साथ जीवन आगे बढ़ता रहा। लेकिन अगले चार-पाँच वर्षों में यह कमजोरी धीरे-धीरे बढ़ती गई और पैरों की मांसपेशियाँ क्षीण होने लगी। बाद में इसका प्रभाव हाथों पर भी दिखाई देने लगा।

इसी दौरान वर्ष **2002** में मैंने दसवीं (मैट्रिक) की परीक्षा उत्तीर्ण की। उस समय तक भी परिवार के सभी लोग इसे सामान्य शारीरिक कमजोरी ही मान रहे थे। हमारी पारिवारिक आर्थिक स्थिति निम्न-मध्यम वर्ग की थी, इसलिए गाँव से किसी बड़े शहर में जाकर विशेषज्ञ चिकित्सकों से परामर्श लेना आसान नहीं था। स्थानीय स्तर के छोटे-मोटे चिकित्सक भी यही कहते थे कि यह कोई गंभीर बीमारी नहीं, बल्कि सामान्य कमजोरी है, जो समय के साथ ठीक हो जाएगी।

दिन-प्रतिदिन मेरी शारीरिक कमजोरी बढ़ती जा रही थी। अब मुझे साँस लेने में भी कठिनाई होने लगी थी। ऐसा महसूस होता था मानो साँसें कहीं अटक रही हो। बोलने में परेशानी होने लगी थी। आँखों की समस्या भी बढ़ने लगी थी, जैसे धुंधला दिखाई देना, एक वस्तु का दो-दो दिखाई देना (डबल विज़न) आदि।

वर्ष 2006 तक मेरी स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी थी कि मैं अपने हाथों से पानी से भरा गिलास तक नहीं उठा पाता था। खड़े-खड़े ही कई बार मेरे घुटने अचानक मुड़ जाते थे (Knee Buckling) और मैं गिर पड़ता था। शरीर की लगभग 50–60 प्रतिशत मांसपेशियाँ, विशेषकर हाथों और पैरों की, क्षीण हो चुकी थीं तथा उनमें विकृति भी आने लगी थी।

तब तक मैं 18 वर्ष का हो चुका था। इतनी समझ अवश्य आ गई थी कि ये सामान्य कमजोरी के लक्षण नहीं हो सकते। इसी गंभीर शारीरिक स्थिति के कारण मुझे दसवीं के बाद अपनी पढ़ाई भी बीच में छोड़नी पड़ी। उस समय मैं दसवीं तक के विद्यार्थियों को ट्यूशन पढ़ाकर किसी तरह अपना खर्च चलाता था।

एक बार ट्यूशन से कुछ पैसे एकत्र हुए तो उन्हीं विद्यार्थियों में से एक लड़के को साथ लेकर मैं पटना चिकित्सकों से परामर्श लेने के उद्देश्य से निकल पड़ा। संयोगवश उस छात्र के चाचाजी एक चिकित्सक के नए बन रहे मकान में बढ़ई का कार्य कर रहे थे। सौभाग्य से वे चिकित्सक **Patna Medical College and Hospital** के न्यूरोलॉजी विभाग के सेवानिवृत्त प्रोफेसर थे और अपना निजी क्लिनिक चलाते थे। छात्र के चाचाजी के अनुरोध पर उन्होंने मुझे अगले दिन अपने क्लिनिक में बुलाएं।

उन्होंने मेरा परीक्षण किया और बड़ी गंभीरता से कहा कि इस बीमारी का कोई निश्चित उपचार उपलब्ध नहीं है। उन्होंने यह भी बताया कि जिस गति से मेरी कमजोरी बढ़ रही है, उसे देखते हुए अगले छह से बारह महीनों में मैं पूरी तरह बिस्तर पर आ सकता हूँ। चूँकि बीमारी का प्रभाव श्वसन तंत्र पर भी पड़ने लगा था, इसलिए उन्होंने आशंका व्यक्त की कि यदि स्थिति इसी प्रकार रही तो मेरा जीवन एक वर्ष से अधिक चल पाना भी कठिन हो सकता है।

उन्होंने कई जाँचें लिखीं, लेकिन आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि मैं वे सभी जाँचें करा पाता। जब मैंने अपनी विवशता उनके सामने रखी, तो उन्होंने कहा—"यदि अंतिम प्रयास करना चाहते हो, तो All India Institute of Medical Sciences (एम्स), नई दिल्ली चले जाओ।" उन्होंने मेरे लिए **पी.एम.सी.एच.** से एक रेफरल पत्र भी बनवा दिया।

इसके बाद मैं दिल्ली पहुँचा, जहाँ मेरे मामाजी वाहन चालक के रूप में कार्य करते थे। एम्स की ओ.पी.डी. में काफी संघर्ष के बाद चिकित्सकों से मिलने का अवसर मिला। विस्तृत परीक्षण के बाद उन्होंने कहा कि यह एक अत्यंत दुर्लभ बीमारी है, इसलिए भर्ती होकर विस्तृत जाँच करानी होगी। लगभग छह महीने बाद भर्ती होने की तिथि दी गई। उस समय तक मैं चलने के लिए लाठी का सहारा लेने लगा था।

निर्धारित समय पर मैं भर्ती हुआ। कई दिनों तक विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम ने मेरा परीक्षण किया। अंततः यह स्पष्ट हुआ कि मैं **एच.एम.एस.एन./सी.एम.टी.-4 (HMSN/CMT-4)** नामक दुर्लभ आनुवंशिक तंत्रिका रोग से पीड़ित हूँ। चिकित्सकों ने स्पष्ट शब्दों में बताया कि वर्तमान समय में इस बीमारी का कोई स्थायी उपचार विश्व में उपलब्ध नहीं है। उपचार का उद्देश्य केवल इसके बढ़ने की गति को धीमा करना है।

अस्पताल से छुट्टी मिलने से पहले फिजियोथेरेपी विभाग के चिकित्सकों ने मुझे विस्तार से समझाया कि यदि मुझे सामान्य जीवन जीना है, तो बिना गिरे जितना संभव हो सके नियमित शारीरिक गतिविधि करते रहना होगा। यही इस बीमारी से लड़ने का सबसे प्रभावी उपाय है। उन्होंने मुझे विभिन्न व्यायामों का चार्ट दिया, श्वसन संबंधी अभ्यास (Breathing Exercises), फूँकने वाले अभ्यास तथा अन्य आवश्यक व्यायाम सिखाएं और फिर अस्पताल से छुट्टी दे दी।

गाँव लौटते समय मेरे मन में गहरी निराशा और हताशा थी। कुछ दिनों तक बहुत सोच-विचार करने के बाद अंततः मैंने स्वयं को ईश्वर के भरोसे छोड़ दिया और निश्चय किया कि जो भी संभव होगा, पूरी निष्ठा से करूँगा। उसी दिन से शरीर के प्रत्येक अंग के लिए व्यायाम, श्वसन अभ्यास, आँखों के व्यायाम, फूँकने वाले अभ्यास, चेहरे की मांसपेशियों के व्यायाम तथा बिस्तर पर किए जाने वाले सभी अभ्यासों को अपने दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बना लिया। पूरे दिन में कई-कई बार इनका अभ्यास करता था। शरीर अत्यंत कमजोर था, इसलिए बहुत जल्दी थक जाता था, लेकिन फिर भी नियमितता नहीं छोड़ी।

शुरुआती कुछ महीनों तक कोई विशेष लाभ दिखाई नहीं दिया, किंतु एक महत्वपूर्ण परिवर्तन अवश्य हुआ—मेरी कमजोरी बढ़ना लगभग रुक गई। धीरे-धीरे शरीर पर नियंत्रण बढ़ने लगा। साँस लेना अपेक्षाकृत सहज हुआ। बोलने और देखने में भी सुधार महसूस होने लगा। जो मांसपेशियाँ पहले ही क्षीण हो चुकी थीं, वे तो पुनः सामान्य नहीं हो सकीं, लेकिन आगे होने वाली मांसपेशियों की क्षति काफी हद तक रुक गई। ऐसा लगा मानो जीवन फिर से पटरी पर लौटने लगा हो।

लगभग छह-सात वर्षों के अध्ययन के अंतराल के बाद मैंने पुनः इंटरमीडिएट में प्रवेश लिया और अपनी पढ़ाई फिर से शुरू की। ट्यूशन पढ़ाना भी जारी रखा, क्योंकि वही मेरी आय का एकमात्र साधन था। ईश्वर की कृपा, परिवार के सहयोग और निरंतर प्रयासों के फलस्वरूप वर्ष 2013 में मुझे सरकारी सेवा प्राप्त हुई। गाँव से निकलकर हैदराबाद आया। वर्ष 2017 में मेरा विवाह हुआ और आज मैं दो बच्चों का पिता हूँ—एक सात वर्षीय पुत्र तथा चार वर्ष की एक प्यारी-सी पुत्री का। साथ ही मैं अपने कार्यालय के तकनीकी लेखापरीक्षा संबंधी दायित्वों का भी सफलतापूर्वक निर्वहन कर रहा हूँ।

आज वर्ष 2006 से 2026 तक लगभग बीस वर्ष बीत चुके हैं। इस लंबे संघर्ष के दौरान योग, नियमित व्यायाम और सकारात्मक सोच के बल पर मैं अपने शरीर की शेष क्षमता को काफी हद तक सुरक्षित रखने में सफल रहा हूँ। यह भी सत्य है कि बढ़ती आयु और बीमारी की प्रकृति के कारण कमजोरी आज भी धीरे-धीरे बढ़ रही है, किंतु उसकी गति पहले की तुलना में बहुत धीमी है। मेरे लिए यही योग की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि उसने मुझे केवल जीवित ही नहीं रखा, बल्कि आत्मनिर्भर, कर्मशील और आशावान बनाए रखा।

अंत में, मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर केवल इतना ही कहना चाहूँगा कि योग केवल कुछ आसनों या व्यायामों का नाम नहीं है, बल्कि यह एक संपूर्ण जीवनशैली है। यह हमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाता है। मेरे

जीवन में योग ने किसी चमत्कार की तरह मेरी बीमारी को समाप्त नहीं किया, लेकिन इसने मुझे उससे लड़ने की शक्ति, धैर्य और आत्मविश्वास अवश्य दिया। आज यदि मैं अपने परिवार के साथ एक सम्मानपूर्ण जीवन जी पा रहा हूँ और अपने कार्यालय के दायित्वों का निर्वहन कर रहा हूँ, तो उसमें योग, नियमित व्यायाम, सकारात्मक सोच और ईश्वर पर अटूट विश्वास का बहुत बड़ा योगदान है।

मेरा विनम्र आग्रह है कि प्रत्येक व्यक्ति—चाहे वह बच्चा हो, युवा हो या वृद्ध, स्वस्थ हो या किसी बीमारी से जूझ रहा हो—अपने दैनिक जीवन में योग और नियमित शारीरिक गतिविधियों को अवश्य स्थान दे। स्वस्थ रहने के लिए बीमारी का इंतजार करने की आवश्यकता नहीं होती। यदि हम प्रतिदिन कुछ समय योग के लिए निकालें, तो अनेक शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं से बच सकते हैं और जीवन को अधिक स्वस्थ, संतुलित एवं आनंदमय बना सकते हैं।

आइए, हम सभी केवल **'योग दिवस'** तक ही सीमित न रहें, बल्कि योग को अपनी दिनचर्या और जीवनशैली का अभिन्न अंग बनाएँ। यही हमारे ऋषि-मुनियों की परंपरा का सम्मान होगा, यही स्वयं के प्रति हमारी सच्ची जिम्मेदारी होगी और यही एक स्वस्थ, सक्षम तथा सशक्त भारत के निर्माण की दिशा में हमारा छोटा-सा किंतु महत्वपूर्ण योगदान होगा।

"योग करें, निरोग रहें; स्वस्थ रहें, समर्थ रहें और जीवन को सकारात्मक ऊर्जा के साथ आगे बढ़ाएँ।"

धन्यवाद।

26

सच्ची सफलता



श्री शुभम दीक्षित
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), तेलंगाना,हैदराबाद

कई बार ऐसा लगता है कि ज़िंदगी में असफलता ही सबसे बड़ी चुनौती है। बचपन से हमें यही सिखाया जाता है कि हार से मत डरो, गिरने के बाद उठो और फिर आगे बढ़ो। लेकिन सफलता मिलने के बाद भी सीखने की वही ललक बनाए रखना, अपनी विनम्रता को संभाले रखना और संघर्ष के दिनों वाला स्वभाव न खोना, शायद सफलता की सबसे कठिन परीक्षा है। ऊँचाइयों तक पहुँचना मेहनत से संभव है, लेकिन उन ऊँचाइयों पर पहुँचकर भी विनम्र बने रहना, सीखते रहना और अपनी जड़ों से जुड़े रहना ही सच्ची सफलता की पहचान है।

सफलता केवल उपलब्धियाँ, सम्मान या ऊँचा पद लेकर नहीं आती, बल्कि अपने साथ एक बड़ी ज़िम्मेदारी भी लाती है। यह ज़िम्मेदारी केवल अपनी सफलता को बनाए रखने की नहीं होती, बल्कि अपने व्यवहार, अपने विचार और अपने स्वभाव को भी वैसे ही बनाए रखने की होती है जैसा संघर्ष के दिनों में था। जितनी बड़ी सफलता होती है, उतनी ही अधिक यह अपेक्षा भी होती है कि व्यक्ति का धैर्य, विनम्रता और सीखने की इच्छा पहले की तरह बनी रहे। शायद इसी मोड़ पर सफलता हमें परखना शुरू करती है।

कई बार सफलता के साथ मन में अहंकार और आत्मसंतोष धीरे-धीरे जगह बनाने लगता है। जो व्यक्ति कभी हर किसी की बात ध्यान से सुनता था और हर अनुभव से कुछ नया सीखने की कोशिश करता था, वही सफलता मिलने के बाद यह मानने लगता है कि अब उसे बहुत कुछ पता है। उसे दूसरों की सलाह सामान्य या महत्वहीन लगने लगता है। कनिष्ठों की बातों में वह केवल अनुभव की कमी देखने लगता है और कई बार उनसे कुछ सीखने की संभावना को भी नज़रअंदाज़ कर देता है। धीरे-धीरे उसकी सीखने की इच्छा कम होने लगती है, जबकि वास्तविकता यह है कि अच्छी सीख किसी भी व्यक्ति, किसी भी उम्र और किसी भी परिस्थिति से मिल सकती है।

क्योंकि सच तो यह है कि जब हम ज़मीन पर होते हैं, तब हमें सब कुछ साफ़ दिखाई देता है। लोगों के चेहरे, उनकी भावनाएँ, उनके संघर्ष और जीवन की वास्तविकताएँ हमारे सामने स्पष्ट होती हैं। लेकिन जैसे-जैसे हम ऊँचाइयों पर पहुँचते हैं, हमारी वही स्पष्ट दृष्टि धीरे-धीरे धुंधली होने लगती है। नीचे की दुनिया पहले जैसी नहीं दिखती, और कई बार सफलता के साथ आया अहंकार हमारी सोच पर ऐसी परत चढ़ा देता है कि हम चीज़ों को उनके वास्तविक रूप में देख ही नहीं पाते।

यह बात केवल कार्यक्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि हमारे घरों में भी दिखाई देती है। अक्सर हम उम्र को ही अनुभव और ज्ञान का प्रमाण मान लेते हैं। धीरे-धीरे कई लोगों को यह लगने लगता है कि अब उन्हें किसी से कुछ नया सीखने की आवश्यकता नहीं है। यदि सामने वाला उम्र में छोटा है या अनुभव में नया है, तो उसकी बात को गंभीरता से नहीं लिया जाता। उसे केवल सीखने वाला समझा जाता है, सिखाने वाला नहीं। जबकि सच यह है कि अच्छी सीख किसी भी व्यक्ति से, किसी भी उम्र में और किसी भी परिस्थिति में मिल सकती है।

यही कारण है कि कई बार हम अपने से छोटे लोगों की बातों को बिना सुने ही नज़रअंदाज़ कर देते हैं। हमें लगता है कि अनुभव केवल वर्षों के साथ आता है, इसलिए नया व्यक्ति हमें क्या सिखाएगा। लेकिन जीवन हमेशा उम्र और पद के आधार पर ज्ञान नहीं बाँटता। कई बार एक युवा की नई सोच, उसका अलग नज़रिया या किसी साधारण व्यक्ति का अनुभव भी हमें ऐसी बात

समझा सकता है, जो वर्षों के अनुभव के बाद भी हमारी नज़र से छूट गई हो। समस्या यह नहीं कि सीख मौजूद नहीं होती, बल्कि यह है कि हम उसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं रहते।

जीवन का सबसे बड़ा संकट ही तब शुरू होता है, जब सफलता मिलने के बाद हम अपने भीतर झाँकना छोड़ देते हैं। जिस दिन किसी की सलाह, सुझाव या छोटी-सी टोक भी हमें बुरा लगने लगे, उस दिन समझ लेना चाहिए कि हमारे भीतर कुछ बदलने लगा है। यही वह मोड़ होता है जहाँ व्यक्ति की बाहरी सफलता बनी रह सकती है, लेकिन भीतर से उसका विकास धीरे-धीरे रुकने लगता है।

सच्ची सफलता वहीं टिकती है जहाँ इंसान विनम्र बने रहना नहीं भूलता। जहाँ वह अपने से छोटे की बात भी उतनी ही गंभीरता से सुनता है, जितनी अपने से बड़े की। जहाँ सलाह किसी पर थोपी हुई बात नहीं, बल्कि अपनापन और सद्भाव का प्रतीक होता है। और जहाँ "मुझे सब पता है" की जगह "मुझे अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है क्योंकि सीखने की कोई सीमा नहीं होती" का भाव हमेशा जीवित रहता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है, **"सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।"** अर्थात सफलता और असफलता, दोनों परिस्थितियों में मन को संतुलित रखना ही योग है। लेकिन इस स्वभाव को बनाए रखना आसान नहीं होता। असफलता के समय विनम्र बने रहना अपेक्षाकृत सरल है, क्योंकि परिस्थितियाँ हमें सहज ही झुका देती हैं। वास्तविक परीक्षा तो सफलता के बाद होती है। उस समय विनम्र बने रहना ही सच्चा संयम, परिपक्वता और साधना है।

शायद यही बात हर सफल व्यक्ति को स्वयं को बार-बार याद दिलाना चाहिए कि आज यदि हम किसी ऊँचाई पर हैं, तो उसका कारण केवल हमारी उपलब्धियाँ नहीं हैं, बल्कि वे अनुभव, संघर्ष और सीख भी हैं जिन्होंने हमें यहाँ तक पहुँचाया है। जिस दिन हम अपनी जड़ों से कटने लगते हैं और यह मान बैठते हैं कि अब हमें किसी से कुछ सीखने की आवश्यकता नहीं है, उसी दिन पतन की शुरुआत हो जाती है। इसलिए सच्ची ऊँचाई केवल आगे बढ़ने में नहीं, बल्कि विनम्र बने रहने, सीखते रहने और अपनी जड़ों से जुड़े रहने में है। ऊँचाई तक पहुँचना उपलब्धि है, लेकिन उस ऊँचाई पर विनम्र बने रहना ही सच्ची सफलता है।

"बड़ी वह रूह जो रोए बिना तन से निकलती है,
बड़ा वह ज्ञान जिसको व्यर्थ की चिन्ता न आती है ,
बड़ा वह आदमी जो जिन्दगी भर काम करता है ,
बड़ी कविता वही जो विश्व को सुंदर बनाती है..!"
(रामधारी सिंह 'दिनकर)

27

समय का चक्र



श्री अरुप विश्वास
सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), तेलंगाना, हैदराबाद

समय का अपना कोई चेहरा नहीं होता, लेकिन वह हर चेहरे पर अपनी छाप छोड़ जाता है। वह न दिखाई देता है, न सुनाई देता है, फिर भी हर दिन हमारे भीतर कुछ बदल देता है। बचपन में जिसे हम समझ नहीं पाते, वही समय एक दिन हमें जीवन का सबसे बड़ा शिक्षक बनकर दिखाई देता है।

जीवन कभी-कभी हमें ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर देता है, जहाँ पीछे मुड़कर देखने पर बीता हुआ कल दिखाई देता है और सामने देखने पर आने वाला कल। मैं आज ठीक उसी मोड़ पर खड़ा हूँ। मेरी उम्र इकतालीस वर्ष है। लोग कहते हैं कि यह उम्र जीवन का मध्य पड़ाव होता है। लेकिन मुझे लगता है कि यह केवल उम्र का पड़ाव नहीं, बल्कि जिम्मेदारियों, रिश्तों और भावनाओं का सबसे महत्वपूर्ण संगम है।

मैं आज एक साथ तीन भूमिकाएँ निभा रहा हूँ—एक बेटे की, एक पति की और दो बेटियों के पिता की। मेरे जीवन का सबसे सुंदर सौभाग्य यही है कि मुझे तीन पीढ़ियों के प्रेम को एक साथ जीने का अवसर मिला है।

एक ओर मेरी माँ हैं। पश्चिम बंगाल के एक छोटे-से गाँव में रहने वाली मेरी माँ, जिनकी आँखों में आज भी मेरे बचपन की तस्वीरें बसी हुई हैं। जिनके लिए मैं आज भी वही छोटा-सा लड़का हूँ, जो खेतों की मेड़ पर दौड़ता था, बारिश में भींग जाता था और शाम ढलते ही उनकी आवाज़ सुनकर घर लौट आता था। समय ने मेरे बालों में कुछ सफेदी जरूर भर दी है, लेकिन माँ की ममता ने कभी मेरी उम्र को बढ़ने नहीं दी।

मेरे पिता आज भी खेतों से जुड़े हुए हैं। उनके हाथों की कठोरता केवल मेहनत की कहानी नहीं कहती, बल्कि उस संघर्ष की गवाही देती है जिसने मेरे जीवन की नींव रखी। बचपन में मैं समझ नहीं पाता था कि वे सूरज निकलने से पहले खेतों में क्यों चले जाते हैं और देर शाम तक लौटते क्यों नहीं। आज जब स्वयं परिवार की जिम्मेदारी निभा रहा हूँ, तब समझ आता है कि पिता का प्रेम शब्दों में कम और कर्मों में अधिक दिखाई देता है।

जीवन ने मुझे रोजगार की तलाश में गाँव से हजारों किलोमीटर दूर हैदराबाद पहुँचा दिया। यहाँ ऊँची-ऊँची इमारतें हैं, चौड़ी सड़कें हैं, भागती हुई ज़िंदगी है। लेकिन इस शहर की चकाचौंध के बीच भी मेरे भीतर आज तक मिट्टी की वही सौंधी खुशबू बसती है, जो मेरे गाँव की पहचान है। मैं साल में केवल दो या तीन बार ही गाँव जा पाता हूँ। हर बार जब ट्रेन या विमान मुझे वापस हैदराबाद लेकर आता है, तो ऐसा लगता है जैसे मेरा एक हिस्सा वहीं गाँव में छूट गया हो।

मेरे साथ है मेरी पत्नी। मेरी पत्नी ने अपने घर, अपने माता-पिता और अपने बचपन की दुनिया को छोड़कर मेरे साथ एक नया जीवन शुरू किया। उस समय शायद मैं उनके त्याग की गहराई को पूरी तरह नहीं समझ पाया था। लेकिन धीरे-धीरे महसूस हुआ कि एक स्त्री केवल अपना पता नहीं बदलती, वह अपना पूरा संसार बदल देती है।

नौकरी की व्यस्तता बढ़ती गई। सुबह जल्दी निकलना, देर शाम लौटना, कभी काम का तनाव, कभी भविष्य की चिंता। वर्षों के अनुभव ने मुझे सिखाया है कि घर कमाई से नहीं, समर्पण, धैर्य, विश्वास और प्रेम से चलता है। मैं बाहर की दुनिया से लड़ता हूँ, लेकिन वह घर की दुनिया को सँभालती है। मेरी अनुपस्थिति में बच्चों की पढ़ाई, उनकी छोटी-बड़ी ज़रूरतें, घर की व्यवस्था, रिश्तेदारों का ध्यान—इन सबके बीच उसने कभी शिकायतों का हिसाब नहीं रखा। उसने केवल रिश्तों को सँजोया है।

और फिर हैं मेरी दो नन्हीं बेटियाँ।

जब मैं ऑफिस से लौटकर दरवाज़ा खोलता हूँ और दो छोटी-छोटी आवाज़ें एक साथ पुकारती हैं—"पापा आ गए!"—तब लगता है कि दिन भर की सारी थकान उसी पल कहीं खो जाती है। उनकी हँसी में मुझे भविष्य की उम्मीद दिखाई देती है। उनकी मासूम बातें मुझे सिखाती हैं कि खुशियाँ महँगी चीज़ों में नहीं, बल्कि साथ बिताए गए छोटे-छोटे पलों में छिपी होती हैं।

एक तरफ वे माता-पिता हैं जिन्होंने मुझे चलना सिखाया, दूसरी तरफ मेरी बेटियाँ हैं जिन्हें मैं चलना सिखा रहा हूँ। एक ओर माँ की दुआएँ हैं, दूसरी ओर बेटियों के सपने। इनके बीच मेरी पत्नी एक ऐसे मजबूत पुल की तरह खड़ी है जो दोनों किनारों को प्रेम से जोड़कर रखती है।

कभी-कभी रात के सन्नाटे में मैं सोचता हूँ कि समय कितना अद्भुत होता है। कल तक मैं अपने पिता की उँगली पकड़कर चलता था। आज मेरी बेटियाँ मेरी उँगली पकड़कर चलती हैं। कल तक माँ मुझे खाना खिलाने के लिए पुकारती थीं। आज मैं अपनी बेटियों को खाना खिलाने के लिए आवाज़ लगाता हूँ। कल तक मैं अपने माता-पिता के सपनों का केंद्र था। आज मेरी बेटियाँ मेरे हर सपने का कारण हैं।

समय का यह चक्र कभी रुकता नहीं। केवल भूमिकाएँ बदलती रहती हैं। यही समय हमें हमारे माता-पिता का प्रतिबिंब बना देता है।

जब गाँव जाता हूँ तो माँ आज भी पूछती हैं—"इतने दुबले क्यों हो गए? ठीक से खाना नहीं खाते क्या?" मैं मुस्करा देता हूँ। और जब हैदराबाद लौटता हूँ तो मेरी बेटियाँ पूछती है—"पापा, हम फिर कब गांव जाएंगे"? उन दोनों सवालों के बीच मेरा पूरा जीवन खड़ा है।

आज मेरे पिता की चाल पहले जैसी तेज़ नहीं रही। माँ की आँखों पर चश्मा चढ़ गया है। उनके बाल पूरी तरह सफेद हो चुके हैं। हर बार गाँव जाता हूँ, तो महसूस होता है कि समय उनके शरीर को धीरे-धीरे थका रहा है।

उसी समय मेरी बेटियाँ हर दिन कुछ नया सीख रही हैं। उनकी ऊँचाई बढ़ रही है। उनके सपने बढ़ रहे हैं। उनकी दुनिया फैल रही है।

तब महसूस होता है कि जीवन एक वृक्ष की तरह है। जड़ें धरती के भीतर और गहरी होती जाती हैं, जबकि नई शाखाएँ आकाश की ओर फैलती रहती हैं।

मैं उन्हीं जड़ों और उन्हीं शाखाओं के बीच खड़ा एक साधारण-सा आदमी हूँ।

यदि मुझसे कोई पूछे कि मेरी सबसे बड़ी संपत्ति क्या है, तो मैं कहूँगा—मेरी सबसे बड़ी पूँजी तीन पीढ़ियों का प्रेम है।

एक माँ का निस्वार्थ स्नेह।

एक पत्नी का मौन समर्पण।

और दो बेटियों की निश्छल मुस्कान।

अब मैं समझता हूँ कि जीवन की सफलता केवल पद, वेतन या प्रतिष्ठा में नहीं मापी जाती। असली सफलता यह है कि आपके माता-पिता आप पर गर्व करें, आपकी पत्नी आपके साथ सुरक्षित महसूस करें और आपके बच्चें आपको देखकर मुस्कुराएँ।

समय का चक्र चलता रहेगा। एक दिन मेरी बेटियाँ भी अपने जीवन की नई राह चुनेंगी। शायद तब मैं भी अपने पिता की तरह दरवाज़े पर खड़ा होकर उन्हें विदा करूँगा। शायद तब मुझे अपने माता-पिता की हर भावना पूरी तरह समझ आ जाएगी।

लेकिन उस दिन भी मेरे भीतर एक बेटा जीवित रहेगा—जो अपनी माँ की आवाज़ सुनकर आज भी बच्चा बन जाता है; एक पति जीवित रहेगा—जो अपनी जीवन संगिनी का सम्मान करना अपना सौभाग्य मानता है; और एक पिता जीवित रहेगा—जो अपनी बेटियों की मुस्कान में अपना भविष्य देखता है।

इंसान बदलता है, उम्र बदलती है, भूमिकाएँ बदलती हैं, लेकिन प्रेम नहीं बदलता। वही प्रेम एक बेटे को जिम्मेदार बनाता है, एक पति को संवेदनशील बनाता है और एक पिता को निःस्वार्थ बना देता है।

शायद इसी का नाम जीवन है।

28

मायूसी का देवता
(भाग-1)



श्री जानकी नंदन
लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), तेलंगाना, हैदराबाद

हाँ, सचमुच वह मायूसी का देवता था। अवसाद की सेना से चारों तरफ से घिरा हुआ एक पुराना जर्जर खंडहर और उसकी आत्मा उस खंडहर की वह मल्लिका जिसके सभी सकारात्मक सिपाही परिस्थितियों के युद्ध में एक-एक कर मारे गए। ज्यों ही कोई सकारात्मक सिपाही पैदा होता, त्यों ही एक नई परिस्थिति के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो जाता। आलम यह कि अगर वह मल्लिका जूझने का हुनर न जाने तो कब की किला छोड़कर फरार हो जाती। उसे एक फ़कीर ने यह तक कह दिया था "तू तो एक मुर्दा है, अजीब किस्म का मुर्दा। ताज्जुब है कि तेरी लाश साँस भी लेती है।"

जब से उसने होश संभाला, उसे एक दिन याद नहीं जब वह न रोया हो। कौन ऐसा दुख था जिसे वह स्वयं से जोड़कर न देख पाता था? मानो प्रकृति ने उसे गोद से झटक कर एक अनजान सुदूर बीहड़ में फेंक डाला था। जब भी उसे लगता कि उसके दुखों का यही अंत है तभी एक उदासी की बेतुकी स्याही आती और उसके पहले से काले अंधेरे मन पर एक और पीड़ा की परत चढ़ाकर चली जाती। वह कभी-कभार शाम को थका-हारा मेरे पास आकर बैठ जाता और घंटों पुराने क्षणों को दोहराता। मानो उसे लगता था कि वह उसकी इस बीहड़ बियाबान दुनिया में अकेला खड़ा पेड़ था जो सूरज से झुलसकर सूख गया था और मैं एक सरसराती हवा जिसके पास बैठ कर उसे अपने होने भर का एहसास होता था। मैं उसके मेरे पास बैठने का इससे अधिक और कोई कारण नहीं समझ पाया। कभी-कभी तो मुझे यह लगने लगता कि बुद्ध ने शायद इसे देखकर ही कहा होगा कि संसार दुखमय है। मेरे इस कथन में व्यंग्य का लेश मात्र भी नहीं है।

उससे पहली मुलाकात साधारण किंतु अविस्मरणीय थी। मुझे अपने शोध कार्य के लिए बनारस शहर में ठहरे बमुश्किल आठ महीने हुए थे। जिस होटल में मैं ठहरा था, उसके सामने सड़क के दूसरे सिरे पर चाय की एक छोटी-सी दुकान थी जहाँ विद्यार्थियों का ताँता आधी रात तक लगा रहता था। कभी-कभार मैं भी देर शाम दुकान के सामने एक टूटी-सी बेंच पर जाकर अपने एकाकीपन और शोध के ऊब भरे कार्य से मुक्ति का बोध लेकर बैठ जाता था। जो समय अपने होटल के बंद कमरे में ठहरा हुआ लगता, विद्यार्थियों के हुजूम में थोड़ा गतिमान महसूस होता। आठ माह की इस अवधि ने दुकान के मालिक से पहचान करवा दी थी। एक दिन बातों-बातों में मैंने चाय के पैसे देते समय दुकान मालिक से पूछा कि काम की ऊब से मुक्ति पाने का कोई रास्ता है? उसने ठहाके के साथ पान की पीक लगभग गटकते हुए कहा कि भांग पियो प्रोफेसर हुजूर, महादेव आनंद देंगे जी। मैं मुस्कुरा कर बोला कि भाई! नशा करना मेरे बस का नहीं, कोई और तरीका हो तो बताओ। मेरी ओर संदेह की दृष्टि घूमी, मैंने तुरंत स्थिति साफ करते हुए कहा कि जुआ भी नहीं। वह जोर से अपनी पान की पीक में सनी हुई लाल-लाल खीसें निपोरकर बोला “नथुआ से मिलो”।

“नथुआ कौन?”

“अरे प्रोफेसर साहब नथुआ, मायूसी का देवता। कैसे आदमी हैं आप साहब? यूनिवर्सिटी का बच्चा-बच्चा नथुआ को जाने है। आपका नाहीं मालूम?” चौंकते से स्वर में चाय वाला ऐसे बोला मानो मैंने जीवन में एक जरूरी चीज बिसार दी हो।

मेरा मन जिज्ञासा का दास हुआ और अनायास ही मुख से निकल गया “कहाँ रहता है?”

“इहाँ से यूनिवर्सिटी वाले रस्ते पे उसका ठिया है। ए लड़का, इन्हें नथुआ से मिलवाओ।“

लड़के ठहाका मारकर हँस पड़े। अब तो मैं उत्सुक था कि इस देवता से मिलना ही चाहिए। लड़कों के झुंड से तय हुआ कि कल शाम पाँच बजे हमारा काफिला नथुआ, यानी मायूसी के देवता से मिलने पहुंचेगा जिसके लिए मुझे साढ़े चार बजे तक तैयार होकर चाय की दुकान पर आना होगा।

अगले दिन मैं व्यस्तता के कारण तय समय पर चाय की दुकान पर नहीं पहुँचा तो तीन लड़कों की मंडली मुझे उस देवता के दर्शन करवाने ले जाने के लिए मेरे कमरे तक आई। मेरे एकांतप्रिय स्वभाव में अगले दिन भी यह अनायास खलल न पड़े, सो मैंने लड़कों की बात मान उनके साथ चलने का निश्चय किया। हमने दो रिक्शे तय किए और धीरे-धीरे मायूसी के देवता की ओर बढ़ने लगे। आषाढ़ के आखिरी दिनों की उमस से राहत देने वाले बादल आसमान पर मंडरा रहे थे और सूरज उनके पीछे आँख-मिचौली खेलते हुए अस्ताचल की ओर बढ़ रहा था। काली नागिन सी सुनसान सड़क पर मंद गति से चलते रिक्शे प्रकृति की उस आसमानी चित्रकला में दो मानव निर्मित वस्तुओं से अधिक कुछ नहीं लगते थे। मेरा रिक्शा पीछे चल रहा था और साथ में राजेश बैठा था। वह अपने अन्य दो साथियों की अपेक्षाकृत थोड़ा शांत मालूम पड़ता था। जहाँ तक मुझे याद पड़ता है तो अन्य दो लड़कों के नाम राजेश ने महीपाल और प्रधान बताए थे। वे दोनों लड़के आगे वाले रिक्शे में बैठ कर ठहाके मार रहे थे और कभी-कभी कदाचित इस आशय से मुड़कर देख लेते थे कि दूसरा रिक्शा आ रहा है अथवा नहीं। यद्यपि मुझे लगता है कि उस मायूसी के देवता से मेरे मिलवाने का उनका कार्यक्रम कहीं भंग न हो, यह अभिप्राय अधिक रहा होगा।

बमुश्किल बीस मिनट बाद हमारे रिक्शे रुके, हम चारों ने उतरकर उन्हें किराया देकर रवाना किया। सड़क किनारे एक झोपड़ीनुमा संरचना के सामने हम खड़े थे। मेरे शंकालु मन में अनेकानेक विचार हिलोर लेने लगे और लगा कि आज कहाँ फँसे? लड़कों ने टटिया की झिर्री से झांक कर देखने के बाद उसे सावधानी से एक तरफ खिसका कर अंदर प्रवेश किया। मैं उनकी इस अशिष्टता पर परिस्थितिवश विस्मित नहीं था किंतु इस तरह स्वयं किसी के निवास में प्रवेश करना मुझे अनुचित जान पड़ता था। महीपाल, जो सबसे अधिक अख्खड़ था, उसने हाथ पकड़कर मुझे भीतर खींच लिया। भीतर कदम रखते ही मुझे एक भीनी-सी मोगरे की खुशबू महसूस हुई और देखा कि एक सुथरी-सी लिपी-पुती कच्ची कोठरी है, जिसके एक कोने में बाल्टी, भगोना, दो-चार बर्तन और कुछ जरूरत भर का सामान करीने से सजा रखा है और दूसरे कोने में एक मिट्टी की काली सी अंगीठी है जिसके पास कुछ सूखी लकड़ियाँ बिखरी पड़ी हैं। अंगीठी के बगल में एक हुक्का और हुक्के के बगल में एक चटाई पर दरी बिछी है जिस पर एक मोटा थुलथुल किंतु साफ-सुथरा इंसान पसरा हुआ है।

पहली नज़र में तो वह एक भद्र संन्यासी जैसा मालूम पड़ा जो संन्यास त्याग इस सांसारिकता के अनुभव लेने के लिए वहाँ बैठा हो। लड़कों को देखते ही वह उठ कर बैठा और लड़कों ने उसे प्रणाम किया। “आवो आवो, बैठो” भारी सी आवाज़ मेरे कानों में गूँजी।

“नथुआ जी, आप हैं वनस्पति विज्ञान के प्रोफेसर राजीव, और सर ये हैं हमारे नथुआ बाबा”, प्रधान ने परिचय के अंदाज में कहा।

मैंने एक शिष्ट मुस्कान के साथ हाथ जोड़े, प्रत्युत्तर में नथुआ ने कहा “अरे बाबू! आवो आवो, बैठो।” मैं उस कोठरी की सात्विकता से प्रभावित था।

“ऐ बचवा, ऊ पीढ़ा इहाँ लै आवो”। महीपाल ने उठकर आदेश का पालन किया और तब तक नथुआ अपनी तोंद संभालकर दीवार से पीठ टिका सुखासन में बैठ गया। मैंने महीपाल की लाई हुई चौकी पर नथुआ के समक्ष स्थान ग्रहण किया। नथुआ ने एक गमछे की पोटली खोल कर कुछ अमरूद आतिथ्य भाव से हम सब के सामने रख दिए।

“खावो, खावो”

लड़कों ने एक-एक अमरूद उठा लिया और हँसी-मजाक करते हुए खाने लगे।

“अरे बाबा, तनिक नमक तो देओ” राजेश ने अधिकारपूर्वक स्वर में कहा।

"अरे माँगत का हौ? लेवो और खावो। तौ बाबू का करत हैं?" नथुआ ने शांत स्वर में मुझसे पूछा।

"बच्चों को यूनिवर्सिटी में पढ़ाता हूँ" मैंने उत्तर दिया।

"बहुत नीक काम है बाबू" उसने ऐसे कहा मानो खुद को दिलासा दे रहा हो।

"इस व्यक्ति में ऐसा क्या विशेष है! कोई इसके पास क्यों आना चाहेगा!" एक क्षण के लिए मेरे मन में विचार कौंधा किंतु मैंने उसे दबा दिया। मुझे वहाँ से निकलने की जल्दी थी किंतु लड़कों के व्यवहार से लगता था जैसे वे इस थुलथुल शरीर वाले व्यक्ति के स्नेह के पात्र थे और उससे भली-भांति परिचित थे। मैं इस ऊहापोह में था कि आखिर इस व्यक्ति में ऐसा क्या है जो चाय वाले ने इससे मिलने की सलाह दी और लड़के इससे मिलवाने के लिए मुझे यहाँ तक घसीट लाए, जबकि मैं व्यस्त था।

"चलिए अब चला जाए, मौसम खराब है" मैंने उठते हुए कहा तो लड़के भी उठकर चलने लगे।

नथुआ अपने पेट को हिलाते हुए उठा और हँसकर बोला "अभी आए और अभी चले। ई कहाँ खराब है लाला, ई तो सुकून है।"

"नहीं आज थोड़ा व्यस्त था, किंतु इन सब का आग्रह था तो आना पड़ा। अब फिर कभी मिलने आऊँगा", मैंने पीछा छुड़ाने के अभिप्राय से कहा।

"चला! हम छोड़ आत हैं, अपने कांधा पे धर के"। सब हँस पड़े। बड़ी अटपटी सी बात थी। नथुआ ने दोबारा ठहरने का आग्रह नहीं किया।

कोठरी से निकल कर हम पाँचों बाहर आए, अंधेरा हो चुका था। काली-नागिन सी सड़क और काली लगती थी और सीली हवा हल्की-हल्की सिहरन पैदा कर रही थी। बादल गरज रहे थे और रह-रह कर बिजली कड़क जाती थी। इससे पहले बारिश शुरू हो, मुझे होटल पहुँचने की जल्दी थी सो मैंने लड़कों से कहा, "कहीं हम लोग घिर न जाएं, यहाँ सुनसान में कोई रिक्शा भी नहीं है। हालाँकि यह इतनी खाली सड़क भी नहीं होती थी किंतु खराब मौसम के कारण कोई बेवजह बाहर क्यों टहलेगा? वैसे भी कामगारों, मजदूरों, किसानों के लिए बारिश का मौसम हाथ पर हाथ धरकर बैठने के लिए मजबूर कर देता है।

जब हम आगे बढ़कर चलने को हुए तो लड़के वापस लौटे और नथुआ ने उन्हें बड़ी आत्मीयता से देखा। फिर मेरे पास आकर बोले, "पिराफेसर जी, हम मिलने आवेंगे आपसे, इनमें से कोई हमें ले आवेगा"

"अजीब गले पड़ने वाला आदमी है", मैं मन ही मन बुदबुदाया।

फिर भी न जाने क्यों मुख से निकल गया "ठीक!"। शायद मेरा शिष्टाचार रहा होगा।

हम वहाँ से पैदल निकले तो सरपट चलने लगे कि कहीं कोई सवारी मिले और हम इस आफ़त भरे मौसम में बिना भीगे अपने स्थान पर पहुँच पाएं। महीपाल अपनी मस्ती में था। उसे जाने की कोई जल्दी नहीं थी। मैंने कहा "क्यों महीपाल! सड़क पर ही रहने का इरादा है?"

"नहीं सर! अभी कोई न कोई सवारी आती होगी" वह आत्मविश्वास से बोला।

हम धीरे-धीरे आपस में बात करते होटल की तरफ चलते रहे। थोड़ी दूर में पीछे से एक तांगा टक-टक करते हुए हमारे बगल में आया तो उसे रोककर हम उसमें चढ़े। मैं सोच रहा था कि नाहक ही समय गंवाया।

...क्रमशः

29

माँ



सुश्री श्री विद्या
डाटा एंट्री ऑपरेटर
कार्यालय, वित्तीय लेखापरीक्षा उत्कृष्टता केंद्र, हैदराबाद

माँ हमारे जीवन में केवल एक अभिभावक ही नहीं, बल्कि एक सच्ची मित्र, मार्गदर्शक और स्नेहमयी शिक्षिका भी होती हैं। वे अपने हाथों से भोजन खिलाकर अपने असीम प्रेम का एहसास कराती हैं। जब हम कोई गलती करते हैं, तो हमें डाँटती भी हैं, ताकि हम उससे सीखें और वही गलती दोबारा न दोहराएँ।

माँ हमारी देखभाल उतनी ही कोमलता और ममता से करती हैं, जैसे पलकें हमारी आँखों की रक्षा करती हैं। हमारे जीवन पर आने वाली हर कठिनाई और हर संकट के सामने वे सबसे पहले खड़ी होती हैं और हमें हर प्रकार के नुकसान से बचाने का प्रयास करती हैं।

वे सदैव यह सुनिश्चित करती हैं कि हमारा जीवन सुचारु रूप से चलता रहे। जब हम किसी कठिन परिस्थिति का सामना करते हैं, तो वे उस पीड़ा को अपनी पीड़ा समझती हैं और हर संभव सहायता, मार्गदर्शन तथा हौसला प्रदान करती हैं।

माँ का प्रेम पूर्णतः निस्वार्थ होता है। अपनी परिस्थितियों की परवाह किए बिना उन्हें सबसे अधिक चिंता अपने बच्चों के सुख, स्वास्थ्य और भविष्य की होती है। वे हर हाल में यह सुनिश्चित करती हैं कि उनके बच्चे सुरक्षित, स्वस्थ और प्रसन्न रहें।

एक माँ अपने त्याग और ममता की मिसाल होती है। वह स्वयं भूखी रहकर भी सबसे पहले अपने बच्चों का पेट भरती है और उनकी हर छोटी-बड़ी आवश्यकता का ध्यान रखती है।

माँ हमारे जीवन के हर पड़ाव पर हमारे साथ खड़ी रहती हैं—चाहे सुख का समय हो या दुख का। उनका स्नेह, आशीर्वाद और साथ हमारे जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है।

सच ही कहा गया है कि माँ के बिना जीवन अधूरा और नीरस प्रतीत होता है।

माँ, मुझे आपकी बहुत याद आती है। मैं आपसे बहुत प्रेम करती हूँ।

कार्यालय की अन्य गतिविधियां

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, 2026 का आयोजन

दिनांक 11.03.2026 से 13.03.2026 तक प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तेलंगाना, हैदराबाद के कार्यालय द्वारा कार्यालय परिसर में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस–2026 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महिलाओं के स्वास्थ्य, अधिकारों, सुरक्षा एवं सशक्तीकरण से संबंधित विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम एवं व्याख्यान आयोजित किए गए। कार्यक्रम में आमंत्रित विशिष्ट वक्ताओं द्वारा महिला स्वास्थ्य, कानूनी अधिकारों तथा समसामयिक महिला मुद्दों पर महत्वपूर्ण जानकारी एवं उपयोगी सुझाव प्रदान किए गए। कार्यक्रम का उद्देश्य महिला अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके स्वास्थ्य, अधिकारों एवं सुरक्षा के प्रति जागरूक करना तथा उन्हें सशक्त बनाने के लिए एक सकारात्मक एवं संवादात्मक वातावरण उपलब्ध कराना था। आयोजन में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2026 के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में डॉ. एन. हिमाबिंदु, जो वर्तमान में ए.जी. कार्यालय की पॉलीक्लिनिक-2 में प्रभारी मुख्य चिकित्सा अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं, ने महिला स्वास्थ्य एवं स्त्रीरोग संबंधी समस्याओं के प्रति जागरूकता विषय पर महत्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2026 के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सुश्री डी.एस.वी. महालक्ष्मी, अधिवक्ता, उच्च न्यायालय; ने महिलाओं के कानूनी अधिकार एवं समकालीन महिला संबंधी मुद्दों विषय पर महत्वपूर्ण एवं जागरूकतापरक व्याख्यान दिया। उन्होंने महिलाओं को संविधान एवं कानून द्वारा प्रदत्त विभिन्न अधिकारों, कार्यस्थल पर महिलाओं के अधिकारों, घरेलू हिंसा से संरक्षण, लैंगिक उत्पीड़न के विरुद्ध कानूनी प्रावधानों तथा अन्य महत्वपूर्ण कानूनी विषयों पर विस्तार से जानकारी प्रदान की।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2026 के अवसर पर 13 मार्च, 2026 को महालेखाकार कार्यालय परिसर में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रतिष्ठित एवं विशिष्ट वक्ताओं के रूप में सुश्री शांता सिन्हा, पूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (NCPCR) ; सुश्री अरुणा बहुगुणा, सेवानिवृत्त आई.पी.एस अधिकारी तथा सभी विभागाध्यक्ष।





कार्यक्रम के दौरान विशिष्ट वक्ता के रूप में सुश्री शांता सिन्हा, पूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग; ने महिला सशक्तीकरण, महिलाओं के अधिकारों, सुरक्षा, समानता तथा समाज में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका से संबंधित विभिन्न विषयों पर अपने विचार साझा किए।



सुश्री अरुणा बहुगुणा, सेवानिवृत्त आई.पी.एस अधिकारी, ने अपने संबोधन में महिलाओं की सुरक्षा, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता तथा कार्यस्थल पर महिलाओं के अधिकारों से संबंधित महत्वपूर्ण पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए। अपने प्रशासनिक एवं पुलिस सेवा के व्यापक अनुभवों को साझा करते हुए उन्होंने महिलाओं को चुनौतियों का दृढ़ता एवं आत्मविश्वास के साथ सामना करने तथा अपने अधिकारों के प्रति सजग रहने के लिए प्रेरित किया।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2026 के अवसर पर संयुक्त हिंदी पत्रिका 'कलिका- महिला दिवस 57वां विशेषांक' का विमोचन किया गया।

साइबर सुरक्षा पर विशेष व्याख्यान

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तेलंगाना, हैदराबाद के कार्यालय द्वारा महालेखाकार परिसर में साइबर सुरक्षा विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को साइबर अपराधों, ऑनलाइन धोखाधड़ी, डिजिटल सुरक्षा तथा साइबर खतरों से बचाव के प्रति जागरूक करना था।

इस अवसर पर सीआईडी, तेलंगाना पुलिस के विशिष्ट अधिकारियों को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में श्री के. वी. एम. प्रसाद, पुलिस उपाधीक्षक तथा श्री हरि कृष्ण, पुलिस उपाधीक्षक ने साइबर सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं पर महत्वपूर्ण जानकारी एवं व्यावहारिक सुझाव साझा किए।



कार्यक्रम के प्रारंभ में सुश्री चंदा पंडित, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तेलंगाना द्वारा आमंत्रित विशिष्ट वक्ताओं का हार्दिक स्वागत एवं अभिवादन किया गया। अपने व्याख्यान के दौरान वक्ताओं ने साइबर अपराधों के बढ़ते स्वरूप, संदिग्ध संदेशों से सावधानी, ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी से बचाव, पासवर्ड एवं व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा तथा साइबर घटनाओं की स्थिति में अपनाई जाने वाली आवश्यक सावधानियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

यह कार्यक्रम अधिकारियों एवं कर्मचारियों में साइबर जागरूकता, सतर्कता और सुरक्षित डिजिटल व्यवहार को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल रहा।



भारत के माननीय उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का दौरा

दिनांक 15 एवं 16 अप्रैल 2026 को माननीय श्रीमती संध्या शुक्ला, उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (केंद्रीय राजस्व लेखापरीक्षा) द्वारा AG कार्यालय परिसर, हैदराबाद का दौरा किया गया। इस दौरान माननीय उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (केंद्रीय राजस्व लेखापरीक्षा) महोदया ने तृतीय तल स्थित नवीनीकृत E-Block का उद्घाटन किया। इस अवसर पर सुश्री हेमा मुनिवेंकटप्पा, महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद उपस्थित थीं।

तत्पश्चात कार्यालय में एक बैठक आयोजित की गई, जिसमें लेखापरीक्षा संबंधी विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। बैठक में Dy. CAG महोदया ने डिजिटल परिवेश में रिमोट ऑडिट की महत्ता, नवाचार एवं प्रौद्योगिकी को अपनाने तथा व्यावसायिकता बनाए रखने पर विशेष बल दिया। उन्होंने Audit Universe को विभिन्न स्रोतों से अद्यतन रखने, DT/GST एवं Customs में Rolling Audit Plans तैयार करने, ASHA Cell के साथ LAP बैठकें अनिवार्य करने तथा Guard Files का KMS में unit-wise संधारण हेतु SOP जारी करने के निर्देश दिए।

साथ ही, ऑडिट में वर्तमान डेटा पर फोकस करने एवं Risk Assessment में ITD के मापदंडों तथा Ease of Doing Business कारकों को समाहित करने की सलाह दी गई।









भारत के माननीय नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का दौरा

दिनांक 24 अप्रैल 2026 को भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक माननीय श्री के. संजय मूर्ति ने महालेखाकार कार्यालय परिसर, हैदराबाद स्थित कार्यालयों का भ्रमण किया।

माननीय महोदय के कर-कमलों द्वारा तेलंगाना राज्य हेतु e-Pension एवं e-GPF मॉड्यूल्स का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर तेलंगाना सरकार के प्रधान सचिव, वित्त विभाग, श्री संदीप कुमार सुल्तानिया उपस्थित थे।

इस डिजिटल पहल के अंतर्गत पेंशनर्स एवं GPF अभिदाताओं को ऑनलाइन आवेदन, प्रकरणों की वास्तविक समय में निगरानी तथा पारदर्शी सेवा वितरण की सुविधा उपलब्ध होगी। आवेदन हेतु आवश्यक आंकड़े सीधे राज्य सरकार के HRMS पोर्टल से प्राप्त किए जाएंगे, जिससे आंकड़ा प्रविष्टि में कमी आएगी एवं एकल स्रोत से डेटा की उपलब्धता सुनिश्चित होगी।

















राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, हैदराबाद के राजभाषा अनुभाग द्वारा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन तथा कार्यालय में हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य समाप्त तिमाही मार्च, 2025-26 एवं प्रथम तिमाही जून, 2026-27 के राजभाषा कार्यान्वयन समिति (OLIC) की तिमाही बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता महानिदेशक महोदया ने की। इस अवसर पर निदेशक (आई.एन.डी.टी. एवं सी.ई.ए.), उप निदेशक (प्रशासन एवं आर.ए.डी.टी.) एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्य उपस्थित रहे। बैठक में शाखा कार्यालय, भुवनेश्वर के अधिकारी एवं कर्मचारी ऑनलाइन माध्यम से इस बैठक में सम्मिलित हुए।

बैठक के दौरान राजभाषा नीति के प्रभावी अनुपालन, कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के बढ़ते प्रयोग, तिमाही प्रगति रिपोर्ट, राजभाषा संबंधी गतिविधियों तथा भविष्य की कार्य योजना पर विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श किया गया। समिति के सदस्यों ने अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए तथा राजभाषा के व्यापक एवं गुणवत्तापूर्ण प्रयोग के लिए विभिन्न उपायों पर चर्चा की।

महोदया ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निदेश दिया कि वे कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करते हुए राजभाषा नीति के उद्देश्यों को व्यवहार में उतारने का सतत प्रयास करें।





निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच एवं नेत्र परीक्षण शिविर

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), तेलंगाना द्वारा केयर हॉस्पिटल, बंजारा हिल्स एवं मैक्सआईविज़न सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के सहयोग से दिनांक 22.05.2026 को कार्यालय परिसर में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने एवं नियमित स्वास्थ्य परीक्षण को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से "निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच एवं नेत्र परीक्षण शिविर" का आयोजन किया गया। इस शिविर में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा विभिन्न स्वास्थ्य जाँच एवं नेत्र परीक्षण सुविधाओं से लाभान्वित हुए।





ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, हैदराबाद के राजभाषा अनुभाग द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के सहज एवं व्यापक प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से दिनांक 5 जून, 2026 को ऑनलाइन माध्यम से हिंदी कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद एवं शाखा कार्यालय, भुवनेश्वर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक ऑनलाइन माध्यम से सहभागिता की।

कार्यशाला के प्रमुख विषय '1. राजभाषा अधिनियम 1963 , राजभाषा नियम 1976, हिंदी टिप्पण एवं मसौदा का अभ्यास' 2. 'तिमाही प्रगति रिपोर्ट का संक्षिप्त परिचय, अनुवाद टूल्स एवं कार्यालयीन हिंदी का परिचय व अभ्यास' रहे। कार्यशाला के पहले सत्र में श्री एम. कोदंडराम, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ राजभाषा अनुभाग एवं दूसरे सत्र में श्री लोकेश चंद्र लाल, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी प्रशिक्षक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन किया।



महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, हैदराबाद के राजभाषा अनुभाग द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के सहज एवं व्यापक प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से दिनांक 5 जून, 2026 को ऑनलाइन माध्यम से हिंदी कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद एवं शाखा कार्यालय, भुवनेश्वर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक ऑनलाइन माध्यम से सहभागिता की।

कार्यशाला के प्रमुख विषय '1. राजभाषा अधिनियम, 1963 एवं राजभाषा नियम, 1976 तथा हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन. 2. 'भाषिणी अनुवाद टूल, भारती अनुवाद टूल, हिंदी इंडिक फोनेटिक टाइपिंग टूल एवं कार्यालयीन हिंदी के प्रयोग विषय पर विस्तृत जानकारी एवं अभ्यास कराया गया। कार्यशाला के पहले सत्र में सुश्री मैशर जहां, कनिष्ठ अधिकारी एवं दूसरे सत्र में श्री विशाल साव, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी प्रशिक्षक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन किया।

ऑनलाइन माध्यम से आयोजित इस कार्यशाला में अधिकारियों और कर्मचारियों को एक मंच प्रदान किया गया, जहाँ उन्होंने विषय से संबंधित अपने प्रश्नों, अनुभवों एवं जिज्ञासाओं को साझा किया। इस संवादात्मक वातावरण ने कार्यशाला को अधिक प्रभावी, उपयोगी एवं सहभागितापूर्ण बनाया।

यह कार्यशाला न केवल राजभाषा संबंधी नियमों एवं प्रावधानों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई, बल्कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के आत्मविश्वासपूर्ण एवं प्रभावी प्रयोग के लिए भी प्रतिभागियों को प्रेरित करने में सफल रही।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 19 जून 2026 (शुक्रवार) को महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद के तत्वावधान में प्रधान महालेखाकारों के कार्यालय परिसर में योग दिवस कार्यक्रम का आयोजन उत्साह एवं गरिमापूर्ण वातावरण में किया गया। इस कार्यक्रम में उक्त परिसर में मौजूद सभी कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय सहभागिता करते हुए विभिन्न योगासनों तथा प्राणायाम का अभ्यास किया और नियमित योग को स्वस्थ एवं संतुलित जीवन का आधार बनाने का संकल्प लिया।

योग कार्यक्रम का उद्देश्य कर्मचारियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करना, तनावमुक्त कार्य संस्कृति को बढ़ावा देना तथा योग के प्रति जागरूकता का प्रसार करना था। सामूहिक योगाभ्यास के दौरान प्रतिभागियों में विशेष उत्साह एवं सकारात्मक ऊर्जा का संचार देखने को मिला। इस अवसर पर योग प्रशिक्षण का कुशल संचालन करने वाली योग प्रशिक्षिका को उनके उत्कृष्ट योगदान एवं समर्पित सेवाओं के लिए महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद द्वारा सम्मानित किया गया।

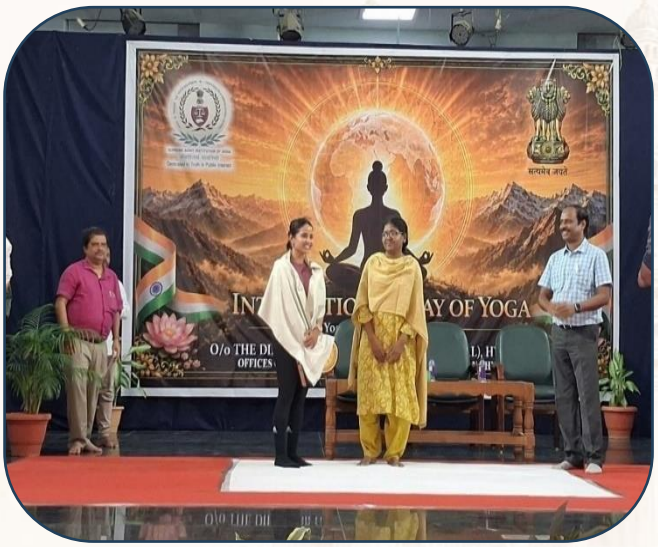
कार्यक्रम के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि योग केवल व्यायाम का माध्यम नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक संतुलन प्राप्त करने की एक प्रभावी जीवन-पद्धति है। इस आयोजन ने सभी प्रतिभागियों को योग को अपनी दैनिक दिनचर्या का अभिन्न अंग बनाने के लिए प्रेरित किया।











80वाँ स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

ऑडिट भवन, तेलंगाना, हैदराबाद में दिनांक 15 अगस्त, 2026 को "80वाँ स्वतंत्रता दिवस" समारोह का भव्य आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ सभी कार्यालय अध्यक्षों की उपस्थिति में श्रीमती पी. माधवी, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) के कर-कमलों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराकर किया गया। उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने स्वतंत्रता-संग्राम के वीरों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए राष्ट्र की एकता, अखंडता एवं प्रगति के प्रति अपने संकल्प को दोहराया।





सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान बच्चों द्वारा प्रस्तुत मनमोहक नृत्य प्रस्तुति विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। इस अवसर पर कार्यालय से सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों को उनके दीर्घकालीन सेवाकाल, कर्तव्यनिष्ठा एवं कार्यालय के प्रति उल्लेखनीय योगदान के लिए **'उत्कृष्टता पुरस्कार'** से सम्मानित किया गया।





सेवानिवृत्त अधिकारी एवं कर्मचारी

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, हैदराबाद

क्र.सं.	नाम (श्री/ सुश्री/ श्रीमती)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
01	सुधाकर डी.	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	30.04.2026
02	रमेश एस.- ii	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31.05.2026
03	हरनाथ सी.	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2026
04	नागी रेड्डी टी.- ii	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.06.2026
05	वैद्यनादम डी.	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31.07.2026
06	नागा राज वी.	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31.07.2026
07	ज्योति कला	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31.07.2026
08	दादी वीरा मोहन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.08.2026
09	पॉल विजया कुमार सीएच.	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.08.2026
10	श्रीनिवास एन. -I	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.09.2026
11	सुधा वी.	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	30.09.2026

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, तेलंगाना, हैदराबाद

क्र.सं.	नाम (श्री/ सुश्री/ श्रीमती)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
01	प्रसाद सी.वी.एस.एस.वी.आर.	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	06-04-2026
02	चंद्र वदना जी.	सहायक पर्यवेक्षक	08-04-2026
03	मल्लिकार्जुन वी.एस.	पर्यवेक्षक	30-04-2026
04	प्रेम राज जे.	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31-05-2026
05	जंगैया आर.	लेखापरीक्षक	31-05-2026
06	शिव कुमार पी.	एमटीएस	25-06-2026
07	जीवन बाबू बी.	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30-06-2026
08	जगदीश्वरी पी.	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30-06-2026
09	श्रीवल्ली डी.	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30-06-2026
10	मोहन वाई.	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30-06-2026
11	रवींद्राचारी एन.	पर्यवेक्षक	30-06-2026
12	नागा मंजुला वी.	पर्यवेक्षक	30-06-2026
13	फरहत सुल्ताना	एमटीएस	30-06-2026
14	सुब्रह्मण्य शर्मा जी.बी.	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31-07-2026
15	श्रीकांत सी.	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31-07-2026
16	पार्थ सारथी डी.वी.	पर्यवेक्षक	31-07-2026
17	राजशेखर ओ.	सहायक पर्यवेक्षक	31-07-2026
18	नागेश्वर राव जी.वी.	सहायक पर्यवेक्षक	31-07-2026
19	प्रवीण रेड्डी एस.	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	11-08-2026

20	सैयद रशीद	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	11-08-2026
21	कुसुम कमला डी.वी.	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31-08-2026
22	सैयद मुश्ताक अली	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31-08-2026
23	श्रीनिवासुलु वी.	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31-08-2026
24	सुंदर राज सी.डी.	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31-08-2026
25	के. शिवन्नारायण	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31-08-2026
26	के. श्रीनिवास राव एम.- IV	पर्यवेक्षक	31-08-2026
27	लीला सी.	सहायक पर्यवेक्षक	31-08-2026

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, तेलंगाना, हैदराबाद

क्र.सं.	नाम (श्री/ सुश्री/ श्रीमती)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
01	राजश्री डी	वरिष्ठ लेखाकार अधिकारी	30.04.2026
02	रमेश बाबू	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2026
03	कृष्ण मोहन के.	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2026
04	सैय्यद जक-उर-रहमान	पर्यवेक्षक	30.04.2026
05	नागमणि वी.	पर्यवेक्षक	30.04.2026
06	पूर्णचंद्र राव वी.	वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2026
07	सीतारामय्या एन.	वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2026
08	रंगा बाबू एन.	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2026
09	एंड्रयू जुआन	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2026
10	मलियाद्री यकुंटा	एम.टी.एस.	31.05.2026
11	श्याम सुंदर राव	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.06.2026
12	जावेद बाशा आर.	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.06.2026
13	उमा एम.	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2026
14	चंद्रहास के	वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2026
15	शांति कुमारी एम.	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2026
16	कल्पना कुमारी एन.	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2026
17	मुरलीकृष्ण जे.	पर्यवेक्षक	31.07.2026
18	वीरभद्र राव	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.08.2026
19	जंगैचारी सी.	लिपिक	31.08.2026
20	मुरली मोहन क्रोवी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.09.2026
21	अनुराधा पी.	वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2026



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest